(c) हिन्द परिट हुरन प्राइवेट निमिटिक, १६६७



## पहला माग

हानान भी हो नाम-माथ को हो था उनके बाह । 'बोबी के दो बोबो, दूरा कपन हार्य बाता हान । तो के निहाने को एक मुक्ति-की कहाई, क्रार को ने के निए पहानुसाना एक कम्बन भीर साथी को एक बाहर। नाय-माथ को एक रहाई भी थी उनके बात, परमु-क्रिक्त नहरी-हो। भीरत हुई। होने के बारण हारर की पर्द क्यान

वधर इच्छ्टी हो गई मी। बतन-माहे के तौर पर उन्नके पान गरि मुख्या तो मुद्दे हुए किनारों बाला एक पतीला, देदी-सी बाली, स्टारेयदा हुआ कुन बर

बटोए धीर क्या सम्ब्री हालड में शोडा। इक्के बर्जिस्ट दशते हैं पान न काने इस का पंत्रीया हुआ बोइ-डा पेंडा-पेक्षा मी या, तो मह विसादर होगा कोई साल-साट समेरी।

यह सब सटरम-मटरम उनने चटाई में समेटा, मूज की रस्ती के बो-जार मपेट रेकर बांधा घीर इसे कंगों पर रखकर मीर होते ही टाष्ट्ररहारे की बार-दीवारी से निकल सड़ा हुआ।

हिसीना नया रका नाता या जबके दिना वो यहे नाने से मना करता। समस्ता सबसे दी-पार देलूए में गांव में, उनमें से यदि किसीना जाता को को काहे उसे रोकने की कोशिया की नाती। समझ है हसी कर के कारण स्वाले ने मुबक्-मुबक् ही गांव से निकलने ना फैलमा किया हो।

बदपन में ही दवाला धनाय ही गया था। गांव में एक बार जैन

दयाले में संमाल रखी थी। नाय के जिस्से कोई बाम या हो मांव में जाकर मिला मांग लगा और अगड़े का प्रविचयर कारण भी वहीं मिला थी। जब कभी भीमारी की नहते हैं मान मांव नेसे महम्मर्थ होता तो वह व्याने को सह काम बीच देता, पान्तु स्थाने की दो तह जात थी कि 'रसों जब नई यर बन प या।' क्षत्री होक यह किशा मांगरे जाए, मोरा दन नोगों के पान को उलके परिवार में है वे !

मागन बाए, बार उन लागा के पास को उद्ध के परवार न है वा ।

पूरी प्रमन्न जो दर होगे में का-किमा हो वालों थी, बहु पा

'पिनम' का बसेवा । माय को पिकायत थी कि बहु पेड़ किस मर्ब के
वहा है, परि विस्ता अरकर नहीं है ने कहा। पर दस्ताला मन्द्र था!

बहु तो 'गृह पा छिस्व' या पिनाम को की छुना। उत्तके कर में
स्वाद सामा वस नारी जन सीमा हुंगा नाय उने मानी हैता छी
सामा, उसके पुन शाम में भी करते नहीं सो हो हुने विश्वासता।
भीर जार में जन बसाना माने गुरू की करावाही जिल्लीमकर सुमाना।
सारम करता होता मान का पारा मारे भी बन्द बाता। वह वहां तक
बहु उटला—"यरे बहु देसे हैं ऐसे पास हो। मारे दला करता करायाती है
तिर पुन तो सुने ही राजा-नावान चर्मो गहीं बमा देता, जो कुत्ते की तर्

बहा पढ़ा है! जाद की इस तरह की जनी-करी बातें पुनकर कई बार द्याने का मन इतात दुवी हो जाता कि बड़ उसी अन कहारे से जब देने के बिल्य होतार हो उठता, पर नाय भी को इस बात से बन्तान न पा कि क्या सहात और परिस्मी बेबक मिलाना कठिन है। बतः वह च्यार-पुचकार हो दस्तीत वा मुस्ता टंडा कर देता।

धानव एक हवार की जावनाओं में ही जबके राज्यान में हुन प्राप्त देश कर दिया का। धन साथ की जानियां कारे वाणी के राज्य कर को में बंदान की जानुवा होंगी। दिवसना परिणान यह हुया दिन माप के बाल करारी, नारावणी और करने भी कर्यांत नामी होंगे पहुँ, को बुल्डेन के प्रत्य में जब बीता कर पूर्वों प्रिकृत कारावणी में बात हुटनां ही बाती पह जाता है। और बहु भी एक दिन होकर राज्य।

बात नीई नई दा धनीधी नहीं थी, बही पुराना रोना-मोना, पर वन दिन पुर-दिश्य के बीच सामता हुए बनावा है दिनक गया। बाद में दवाने ने यह सनुमब भी दिवा कि गमती उठीवी थी। यर मामना को एक बार दिवाब को विषयता है चना ध्या।

बंगास बीहरूर केंद्र बहु बूदा या, पर दमाने को इस बार 'बीन' साने बा गोका ही नहीं दिला। क्टाई का तमय होने के कारए वाले मानी दमने कारी के दम्या है, तीर करेरे का ने की माना नहीं होती थी। उस दिन से की उसके सार्वियों ने समय निवास ही होती और नुवन्नवृद्ध ही जहीं ने दमाने की या बनाया। और दिन्द बहु बंबनी बता की होत को निवास पढ़ी।

भी करें के पहल पाणी करता पता था कि वह दिनों है बाथ भी किया कि मी राद मा भी पीट भी रादी मा का रोह राहे के दी मही निमान था भुद्राप्त की बाद हुए और पी, पर पह की उसके सावी पहले भी तर है बाद मी की अपनी के दी पर मह को उसके की हिंदा करार वह में बाद मी की अपनी की पर मह को उसके मुक्ति बढ़ी बाद के बाद दिमारा था, और देख पर पीए का मह को उसके मुक्ति बढ़ी बाद के बाद दिमारा था, और देख पर पीए का मह की अपनी भी महस्य पीनु बाद सीर पीड़ी का बदन मनाया । राह भी भारी भी महस्य पीनु बाद सीर पीड़ी का बदन मनाया । राह भी भारी भी भारत पीनु बाद सीर पीड़ी का बदन मनाया । राह भी भारी भी भी पर माने पर देखी नमा बारी की । दानों के कुर देखा दिया है भी भी पान पान पान सीर भी भी पर पान पान सीर पीड़ी माने की हैं पिन के हैं किए देखा है पान महा माने सीर पान पान सीर मीन मोह हैं पिन के देशी रिदाई हर सी ?

नाय को क्याले पर पहुँच इतना गुल्ता जायह ही कभी माना हो, पर गुल्ते का कारण भी तो या अवकि सारा दिन बीमारी की हानव में उसे किसी ने पानी का चूंट भी नहीं पिताया वा और ठाकुरद्वारा

सिख गृहकीं ने एक छोर ती पंजाब के कोने कोने में परमार्थ का मार्ग प्रदर्शित किया या दूसरा भीर उन्होंने सामान्य जनता की सज्ञान भीर बाइम्बर की दसदल से निकालकर सहज-मन्य मार्ग पर चलाने का प्रयास भी किया । परन्तु परम्परा से ही गुलाब के साथ बाटे भीर गाय के स्तनों के साथ की है जिपके रहते हैं। कुछ समय बाद गुरू-परिवारी भे ऐसे लोग भी पैदा हो गए जिनकी दुष्टि स्वार्थ, ईप्या या लोग से कंपी न चट सकी। जिन्होंने कभी भी भ्रपना देवीस्वभाव न छोडा धीर न ही कभी भपने महापूर्वों के पदिनक्षों पर चलने का प्रयास किया ।

सिख-इतिहार मे ऐसे धनेक लोगों का उल्लेख मिलता है जिन्होंने गढ़मों के जीवन-काल में भी तथा उनके पश्चात भी उनकी महानता का अनुचित लाम चठाने का प्रयास किया । 'मोहरी मोहन' माइयों से लेकर 'धीरमज भीर रामराय' तक भनेक व्यक्ति इस प्रकार के माचरण के प्रमाण हैं।

सिख गुरुमों के समय में तो 'गुरुडम' की प्रया सीमित ही रही पी पर उनके पश्चात् का इतिहास बताता है कि इस प्रकार के पुरुषने ने इतनी धांधली मचा दी थी कि सर्वसायारण के लिए धराली भीर सकली का अंतर करना कठिन हो गया। किसीने 'बेदी', किसी ने 'सोडी' और विसीने 'भल्ला' या 'जेहण' का लेबुल मस्तक पर लगा-कर मोली-माली सिख-जनता की दोनों हायों पूटना गुरू कर दिया । मया पंजाब में और क्या पंजाब के बाहर, स्थान-स्थान पर इस प्रकार की गुरुडम की दुकान सुल गई, जिनके बैभव को देसकर भवतों की घांसे चौधिया जातीं।

इसमें कोई संदेह नहीं कि कुछ एक गुरुवंशवारियों ने स्थार्थ रूप से प्रपते पूर्वजों के उपदेशों पर चलते हुए यम का प्रचार निया, पर इनकी सुलता में प्रविक संस्था उन सीतों की यी जो गुरुपन के नाम धर भन-दौलत भौर प्रतिष्ठा एकत करने में समें रहते थे। भाज के सममय भौनी शताब्दी पूर्व पंजाब में गुस्डम की यह

१ सिख-पुत रन्हीं चार बंशों में बायन्त हुए थे ।

**१**२

श्रीमारी इतनी बड़ गई थी कि इसका प्रभाव काबुल, कंपार भीर गजनी के सिस्तो तक जा पहुंचा। विशेष रूप से गुरुवंश के वे सीग, जो शिक्षित भीर चतुर थे, अंग्रेजी सरकार की दृष्टि में अपना प्रमाव बमाने में भी सफल हो गए। मर्वेजी सरकार को ऐसे देशी सहायको की हमेशा जरूरत रहती थी जिनके पीछे मन्यविश्वासी लोगों का समूह हो। ऐसे लोवों पर उनकी विशेष प्रपा होती थी। बडे-बड़े सम्प्रदायों के मुखिया धपनी इसी महानता के कारण सरकार की बीर से सम्मानित होते थे। इस प्रकार समय पाकर गृहवंशधारियों के लिए गृहडम की यह प्रया सोने के घडे देने वाली मुर्गी बन गई, जिसे संभाने रखने के लिए वे लोग प्रपने दायरे को बढाने में दिन-रात जुटे रहते। कलतः पंजाब की मिल-अनदा उस खमाने में काफी हद तक सिख-ओवन से टुटकर गुरुडम का शिकार धन गई। विशेष रूप से परिचमी पंचाब के सिक्षी पर 'सोडी साहबजादों' का प्रभाव बहुत धपिक था। इनमें से कुछ सोडी तो इतने धनवान हो गए थे कि उनका बैभव राजाओं के बैभव की स्पर्धा करता था। महलों जैसे इनके मकान, हजारों बीचे जमीन, गहां तक कि एक-दो के दरवाओं पर हाथी तक बंधे दिलाई देते। मे लीग राजाओं-नवाबों की तरह बढ़े-बढ़े शिकारी दल लेकर शिकार खेलने निकलते ये।

वन भी यह तमाचार मिलता कि प्रमुक 'महाराज' की सवाची धा रही है प्रवाल व्यक्ति चार-वार, पान-वाम कीन साने प्रास्त का करता स्वाल करते। धीर उन्हें की प्रवास के तमाज ताता। आहमाई मेर क्य-नीतिन की पुत काम मातिवाजां की वकाचीच में महाराज की कार्यों करता। प्रमाली म कुमी, स्वालों भी रही की कार्यों की कार्यों, पंपर-कम कुमाए कार्त और पाजन पारियां पासकी के माने माने करता दिसाती व्यक्ती। कि

से दर्शन के लिए माते, जिनकी भेंटों से महाराज की पासकी भर जाती। संतत: इसी पूमपाम में जुनूस प्रपने ठिकाने पर पहुंचता। दिन का समय महाराज प्रपने दल-सहित क्षिकार में गूजारते सौर

दिन का समय महाराज प्रपने दल-सहित शिकार में गुजारते और शाम को प्रपने निवास-स्थान पर सौट प्राते, वहां हवारों की गिनती में सोग प्रतीक्षा में विद्वाल दिवाई देते, जिन्हें वे प्रपने छपदेशों और

دار

बरपानी द्वारा कुछकुरव अरहे । सोटी बडी बानी ध्यपना दिलानी हवी की निवती के प्रमुक्तर कही एक दिन, कही की दिन प्रीर कही आहे-वांच दिन सब रहते का बादेशम होता, को भी नतन बी मोच प्रार्थ-मार्थी में, नहीं थी 'मतबूर' के चान मधन का समान रहना का, क्रोडि वार्ड भीर भी को मगधित भवती का यद्वार करना होता का । प्राचार बहुत ही पहले 'बार-चेंड' का समारीह बडी धूम है सनापा साला। 'कार-भेट' का धर्व है धननी कमाई का दमका दिनमा मूट को भेट करना । यह शहर जिन्ता छोटा है, रगवा कैगाद बन्ता ही बना है। हराकी प्रचा नम ते लाती, कींन चती ? दस दिवर में धनेक कार्व है। बरतुन, 'नार-भेंट' दावगटेचन वाही दूनरा नाम था। पर गरवारी देवनों जेनी कोई रियायत दममें नहीं थी। इसकी सदावरी न सी हमनित भी जा सकती मी न ही निन्तों द्वारा ही गकती मी । एकसम्ब भौर निश्चित समय पर भुगतान किया बाना सनिवार्त था ।

'बार-मेंट' की सीमा केवत दरामांग पर ही समान्य नहीं हो बाती थी, इनकी भौर भी भनेक सालाएं थीं, विशेष रूप से 'गोलक' प्रया । हर एक श्रद्धानु इस कार्य के शिए घरने पान एक मीनक (तहुक्यी) रसता था, जिसमें हर सत्रांति, धमावस्या पर या सम्य किमी भी मुन-दल के प्रवतर पर इस गोलन में कुछ न हुछ बायना प्रावादक था। खब भी बार-भेंट वा समारोह प्रारम्भ होता, सगांवत मो उसे महाराज के सम्मल पोल दी जातीं। जितनी संधिक बार-मेंट, स्तनी ही संधिक क राजुन का जितनी मारो गोलक, उतने ही स्थिक बरदान । 'बार-मेंट' ना जब गमारोह ग्रमाध्य होता तो महाराज के सनेक

घोडे बीर सम्बर्रे नकदी धीर धन्य पदायाँ से कद जाती।

धेहलम जिला दी भीर पिड दादनसान । वि किनारे पर वसी हुई है महत्त्वपूर्ण परवा है, मुराबला करती है।

∙ ह—बेहलम, चकवाल, मधिक मानादी नदी के . . सोडिया' नामक एक धन्छे छहर का हरकारी कागनों और वनसूत्र के मृत्यार मात्र ने हो-तीत कार्क्सिय पूर्व बहुत नोई सावारी नहीं थी। नदी के हिनारि से केसर—जो महाने सामात्र तीन मीत्र की हुरी पर है, यह सारा करवा हुर तक को बेता के रूप में था, और हत विश्व में बहुतनी मात्रा मित्रते हैं हि हा बेता को कित किती हिएम बहुताबत से पाए जोते में इतिहंद हों पहिएम वार्ता नाम से पुकारा जाता था, वो सीव्रे हिएमपर मित्रह हुता।

पत्र व्यक्त में बूद-दूर से दिरमों के विकारी यहां प्राया करते थे। यह बात भी मुनी बाती है कि उन दिनों प्रारमण कोई करती न होने क कारण विकारी देशों के बेटी प्रमुख्य होने भी। और दस प्रमुख्य नो दूर करने के विकार से किसी पनिक 'सोधी' ने एक उन्हें प्रमुख्य नो हुए करने के विकार से पह चूचान पात्री दाया में बाह से नण्ड हो चूना था—एक बराद करना हो, जो 'छोदियों की खराई' के नाम से असिद भी भीर क्रिक्त टूटी-चूटी पारदीवारी प्राप्त भी

बनवाई, इतिहास इस विषय मे बुप है।

संबंध बीतजा पाना, नहीं हिनारे बंधे हुए सीग बीर-वेद बहाँ के सार सा-सार उठाउठी पड़ (बैटे-वेद दे हुए तार साम तो नो। उन्हों उनवे हुए तोगों में हे दूस है सबने निवास के लिए सोहियों की सराम का भाम पहला किया है कि सार के सिक्स के स्वीत के सिक्स के सीविक सीविक

केवल सोडियों की सराय के कारण 'शोडिया' विशेषण जुड़ गया है। रहना है पर्याज देती करता। यह भी शंभव है कि वह सराम की तरह सारवादों की नीव भी निशी शोडी में ही कारी है। एक सियद में कुछ प्रमाण मिशते हैं। यहाल यह कि 'शोडियों' को गती करने के तीक सीव में है। दूसरा यह कि रस गती के बहुतने शर—विशों के कुछ गिर गए है—यूपरो कहा के बोर नामकारोही होंदें के की हुए हैं। तीयरा, दर्गे नुष्ट मकारी की बनारद बहुत ही रिशास कीर सारी दिश्य की है, भी दण बण को बनातिल करती है दि सही के बीडी

हिशा को है, या प्राप्त का कर कराया के पार्ट के पर पर की किया है है। हिस्सी समय के ऐपर के शिल्य कर कहते हुए से । या विश्वाहर से शोड़ियों के शिलारिक ही कर रिमार्ट को है। समय की शोड़िया करेनाई पुरस्त के सापटे कम कहे हैं, जिसे पीएंट समय साम्होजन ने समयन समान ही कर रिपा है। सापट से शोड़ियों का सब गही कीई महत्त्व नहीं है, न ही सबरे बत वारणस्तान रेपकर का कोई क्रितेय किस है। है। हिरणपुर में बिम तरह हिरणों का नाड़ा

हुट चुना है जभी तरह नीहियों का भी।

पुरत्य सारशेलार्थे को साम देना है और सारशेलन कार्रन की हैं. "तमय भाषाता। वा भाष का ह भार भागान वात्त वा भोनाता सबूत व नास धानार ने यह वह साई वो बात वरी है। तमय बाद 'तिहुनमा' भाषोतन वो आमान देना हो तुरदात्नीरावर वर सह मुद्दे दिन वभी न भारे। वैदेन्त्री विहुनमा वा भारोतन बार नद् पुर स्थाप पर मार्थ र नामन्त्रमा स्वरूपमा वा साम्यासन वार पश्चमा स्था, सोमी की सांसे सुनती नई श्रव बार सांगे सुनने की देर थी, कि हर विभीकी संयार्थ की तमान बाते लगी। एक जमाना ना कि गुरवंश परिवार ने सीगों ने विषय नोई खबान तक नहीं हिना क पुरुष पार्चार प्रशासन प्राप्त पार्व चनान सकता है। एसी सकता या, पर सिह-ममादयों के बाराप्रवाह प्रचार में शोगों की दतना निकर बना दिया कि कृत तक और शोग कार-मेंट था चनिया मेंट करने ।नंहर बना १२४१ १० न से एक जर राज न र राज न १ मारवर्ग मह करने ये साज मंत्र यर सहे होनर बाँहें उद्यानकर, गरे पाइ-पाइनर, सुरवार के बिठ्ठ सरनी मार्वाज बुनाय करने समे । गरिजाम यह हुमा कि हुछ ही बची में भारी उपस-पुचन मच गई, गुरुदम की दुकान उठ गई, हा नया न नाटा जनसम्बन्धान नव गरा, युवनन वा हुतान चठ गर्छ। मुद्देश के नामधारी मुद्दमी के बोरे पटते-पटते समास्ति के निकट पहुंच गए, घोर जनके ठाट-बाट की जयमगाहट घटती-पटती ठडी राख पहुंच गए, सार उनक ठाटचाट वर जगनगढ़ पटवान्यदार ठडा राख बनकर रह गई र कार भेंट की प्रया या तो समान्त हो गई या कानुस-कंबार सादि नगरों में सम्बदा उन बोड़े से गावों में रोप रह गई जो राहरी प्रमाव से दूर वे।

राहुए अभाव प के पा किसे साता सी कि गुरमों की सतान इस प्रकार समय के अक्कर में जा पढ़ेगी। फलत: परिस्थितियों से बाच्य होकर गुरविध्यों ने जीविका के प्रश्न की सन्य उदायों से सुनमाना प्रारम्भ दिया। घर की जमार्जुओं औरो-जैसे कम होती गई बीत-बेसे नई पीड़ी में से किसीन न्य न्या पूर्वा यस वस क्या त्या त्या पर वसन्यस्य गई पाइ। म दुकान सोल ली तो किसीने सरकारी नौकरी में पनाह सी । 403 11

कास्टोलन के उस बवंदर से हिरणपुर भी सर्राधित न रहा। जिल देवों को उन बरती का स्थापक होने का यह था, उनका बानन भी होतने लगा तो दिम प्रकार वे वहां दिक पांते ? थीरे-थीरे हिरण-की बन्दी प्रपने सस्यात्कों ने लगभग साली हो गई। जो बच-मुचे गए के सबने गुरुष के भवरीय या जमीत-जापदाद के गहारे दिन टने लगे।

'बाबा सश्चदेवसिंह' के माता-पिता भी उन बचे-शर्थ लोगों में में जिन्होंने कभी सभ्छे दिन देखे थे। दूर-दूर तक जिनके श्रद्धालु फैने र ये भीर पर बैठे ही जिन्हें भी निधिया, मठारह सिद्धियां प्राप्त थीं। बाबा सुसदेविमह भा बचपन तो धानन्द से बीन गया परन्त महा-स्वा धाने पर जब मां-बाप का सापा मिर पर न रहा तो उनकी जमा-जी को हवा समने समी। एक क्षो जवानी ना रग, इमरा शय शेवने ाता कोई नही, और सीसरा इकलीते बंदे के हाथ में मा-बाप की दरासत सा गई। सनकमाई दौलत को फक्ते किमे दर्द होता है ? तबाओं के दिन घीर रानें रगीन स्वप्नों भी सरह बीतने लगे। एक रोर धामदनी के दरवाने बद होते गए, इसरी घोर खर्च के विचाद कुलते गए। मास्तिर क्तिने दिन यह सैन चलना ? बालों को बालिया मे जब रापेशी की चमक मानी गुरू हुई तो उस समय तक सोने-चांदी की चमक समाप्त हो चुकी थी। सोच-समफलर चलते तो सायद बुरे दिन न देखने पड़ते । अपनी जना-पूजी नो सावधानी मे खाते तो जीवन घाराम से कठ जाता। परिवार भी तो कोई बहुत यहा नहीं था। तीत प्राणी थे, एक स्वयं, एक लडका धीर एक लडकी, बस । पर अहा 'माल मुपत, दिले बेरहम' बाली बात हो जाए वहा नया हो सकता है ? बड़े घरों की जुरुन भी क्या कम होती है ? माना कि जवानी के नदी में बाबाओं ने बीलत को अपने हाथों लुटाया था, पर इतने पर भी थोडी-

वजी और घर का मकान बचा रह गया—यही 'सोहियों की हवेसी' v

थाबा सखदेवसिंह के पुत्रें को निधानी थी।

हिरणपुर और मलिकवाल, इन दो कस्थों को नदी नी धारा ने 219 403 पृथक् निया हुमा है। उत्तर वाले किनारे से मुस एक मील की हुए। सितकबाल है और पश्चिम के किनारे से कुछ हूर हटकर हिर्ण्य उस पार का कस्वा गुजरात जिले से है और इस पार का बेहर जिले से।

हिरणपुर को जिस तरह रोडियों ने सलाया था, सगमग उ तरह सतिकवात को 'टिवाने मतिकों ने । इसी कारण इस बस्ती ' गाग 'मितिकवाल' पड़ा । द्विरणपुर की तरह मतिकवाल भी नेवी ' पपेड़ों से भनेक बार जबता है घोर किर से बसा । 'टिवाणा' सामदान के जिस पूर्वज ने सतिकवात की नेवि रण

थी। उसके परवाद की पीड़ियां बहुत समान थीं। विदीय कर पीड़ा पीड़े गी देखरें के सिवाद पर तर्य कु महिले हैं। डिमार दिन के समाप पर दिमाने दूबरें लाव में किसी हिंदू राजपुत करते के समानि से। थी, नहा बाता है कि मुझा राजप के समान पुत्र कर सिवाद मुद्दार पीट समान पान के प्रमान प्रमान प्रमान हुए हैं। दिस्ता मुद्दार पान महत्ते का प्रमान कर मान प्रमान प्रमान कर सिवाद मुद्दार पान कर में मान प्रमान कर में प्रमान स्थान प्रमान कर सिवाद मुद्दार पान कर सिवाद में प्रमान कर में प्रमान स्थान में स्थानिक सामान दिस्ता पीट मान प्रमान कर मान प्रमान कर सिवाद में स्थानिक सामान दिस्ता पीट मान प्रमान पान पीट मान प्रमान कर स्थान दिस्सा में सिवाद में स्थान दिस्सा में सिवाद में सिव

अर के विस्तान में १८ वर्ष बार, मर्पात् तार १६१४ में जार महादुक से पार्च दिलागों के मान मार्पात्त पार्च को भी भवार, संदेशों को प्रवास में रोगत कर मरी करते की धारवणता पड़ी सुत्र पार्मिक स्वार्थ्या को भी हो का आने बहुत , के बारण में केवल महत्ते दुवरात जिसे में ही सत्यानित देवल में के तिर रावसीची कर वारी हुती भोसती थी। पुत्र बारे कार्य के स्वार्थी कर वारी हुती भोसती थी। सुत्र बारे कार्य के स्वार्थी के स्वार्थ हुते हो बहुत । पीडी करी कि मार्थी से प्रवाहतार दिवामां हर ।

अब तक युक्ष चनता रहा, नगमग उतने ु र. का धौरधौरा रहा । बहु-बहे रामप्रवर्गे से होड़-सी हैंद बहुकर रंगकट मही कराता है। नहीं हो बंजाब के रून दोनों जियों— बेहुनम सीर गुजरात में बन रही थी। चेहुनम का दिनग वर्गार छोटा है पर रहा जिले के स्वास्थ्याद करावा हु के कारण नहीं के निवाती बहुं इसक धीर करावर होते हैं। दिरोप अप से मुन्तमान वर्ग के भीग रहा कारण महीं का बुहुम्बत सारोपतार सर्गी विशेष रहा मध्य बाता था। ग्रही नारण मा कि एक धीर नीही साहस्वारे, हुगरी धीर गुजरात जिले के दिवाये भी रस जिले पर धमने मध्य करते रहते हैं। बहु देश पाई तमरा नहीं था, पर महीं हुने वाले क्योंनि सुवत-मान सीयक से, दशीनए दिवायों भी महीं निवासी कर निवास हिन्दी वाल जनता से हैं। शोहियों को बोधी-बहुन करते मिलती बहु ने बन्त हिन्दी वाल नास्ता मारे हिन्दी कर कारण साहरू

हिरणपुर, जो कभी सोहियों का गढ़ समभा जाता था, प्राप्त चाड़ उस स्थित में नहीं या फिर भी प्राप्तपार के इसके में उतका प्रमाव रोव था। रंगस्ट मर्जी कराने में भवने प्रभाव का ये भी प्रयोग कर रहे है।

दिस्पाद के बाब मुश्येद्रशिक्ष भी तम दिनो सारी के मान्दोकत र्व शांच में। रात्ते कोई तम्हें तृत्वी कि मान्दिक दिन्छी कर्या। होने के बारण कोई मनवाई देखरूट न मिल कहें, किर भी कही कर धराना घोत्र दोड़ा कहें, होताने में उन्होंने विश्वेत्वता राही हों। प्राप्त के ही स्वाधानानी और हुठ कर की, दिन्ह बात से एक बार तथा कीं, मेंग्रे हुन्या नहीं जानने ये। मानिक्यान के दिवागों के बात-त्याद के बागों के उन्होंने मीत्याची कीं हों हों। यह बात कें, भी से घरणा देखारी चींचा पहुनकर विश्वेत सकता के सिन्हते कार्त्र को बाद मानिक्यान कर्मों हैं मो ही दिवागा बादश हो अपिक स्वाधान बाताओं का चींचा कर्यू एटी-आधी नहीं सुद्वाल था। धपने हातने के बार विश्वेत कार्यों के से ही ही ही ही

बाबाजों भी दो घपने को किसीसे कम नहीं समस्ते थे। माना कि समय ने उन्हें पनिवहीन कर दिया था, पर ने तो प्रास्तिर होती पंच के स्वारों हो। किए माना ने किसी का रीत क्यों मानते ? बहुधा कहा करते— "दिवाजों में मेरे से प्रापक है हो नया ? मान बही कि के तेरे के को राज मार्ट ता पारा की पारा का मार्ट का मार्ट का मार्ट का मार्ट की मार्ट का कि मार्ट का म

तारदर को बनाव करने ने बिकार से घनवा दिवारों को शीव दिवारों के लिए बावारों से कार्य में निए प्रवास कु कु पूरे के रि य प्रमान दिया निजी नाम से शीव का उनने वाल कुछ पूत्री भी दिएपाद की चारी का साम की से शीव कु ट्रेस्ट्रेट नाम भी के चीप सा बार कही हो पहारी में देने में से परिचार ना विद्यु करना हो। दूरवें की एपाम निजानों — चूंदे देनी ने साम है कि वह सी मन हो सो यह पर मा बाती जेविक दिवारों के पाने के बाद भी कुछ सार्य

रायत्रता नहीं या गरे में, परानु इस होती के बाय जनही प्रतिका सम्मान सीर पूर्वभी का नाम नुषा हुया था, नहीं तो पकर में हरे नहीं कोता पाइते के। 'श्री क्या टिवामों को शीचा दिलाते निस्ताते मुख्ते सुद ही भीचा देखाना कीता ?' यह एक हैली निस्ता भी निकत सामानी की नी हमा

भूत को हुरान कर रता था। उननी दृष्टि में ऐमी पराजय से तो मृत्यू ही मध्यो थी। तोस्पे-तोस्पेट वर्न्ट एक घोर कम मुख्या निवानी सहातता से न वेजम दिवायों का गर्वे बोडा जा सकता था, बल्कि घाने भविष्य को बार के क्यान पर पाउँ पाद लगाए जा सकते थे। उनका गुनु "सुरावें" मिटक में यह दशा गा वाबाती में महरूर कंतना कर तिया कि सुकत

माहुक म पढ़ रहा गा। बाबाज न मन्ट्रपट कारता कर स्वार है स्कूत में निकतते ही हो के कतिय के मारी के रावि कि त्यारों की में के एठ वह करें स्वरच पढ़ाएंदें, चाहे हतके लिए उन्हें हवेली ही वयों न केचनो पड़े। दिवाणों के सडकों में कीनने सुरस्ताक के पर समे हैं बड़े-कड़े तरहारी क्यां पर जा डटते हैं। वेचस यही न कि 'उमरह्यात' के उन्हें बार स्वरूट पढ़ा रिट हैं। उन्होंने यहि स्वयंने सडकों के दुल-दुत बहायों कर पढ़ाया है तो मेरा बेटा चौदह पढ़कर बाईसराय की कौतिल में बैठेगा । फिर देखना कि कैसे मेरे सामने ये लोग टिक पाते है।

परिस्थित यदि पहले जैसी होती तो नासेज की पढाई कराना उनके लिए कोई कठिन बात नहीं थी। परन्तु जिस बंग से उन्होंने सरवार-पुत्रा के हवतकुढ से धन की बाहति थी उनसे उनकी सायिक ग्रवस्या भीर भी खराब ही चुकी थी। पर हीरे की खान खोजने के लिए किसे पहाडों की साक नहीं छाननी पडती है। वे सीचा करते 'सरकार की एक बार क्यादिएट होने भी देर है सब कुछ ठीक हो जाएगा।"

भाई-बहुन, दोनों मे गहरा स्नेह या। चायुमे भी कोई विशेष ग्रन्तर नहीं था। सदर्शन बीरी से केंवल दो साल बडा था।

बीरी का पूरा नाम 'रघुवीर कीर' बा, पर उसे सब इस सक्षिप्त नाम से ही पुकारते। बचपन में ही भा के न रहते पर घर का सारा भार सिर पर भा जाने के कारण वह भपनी भाव की लड़कियों से कहीं धाधक सममदार धीर संयानी थी । गांव की लंडकियां चेतना की दृष्टि से बहुधा समावप्रस्त होती हैं, पर इस बीरी को प्रकृति ने न जाने कैसा मस्तिष्क दिया था कि वह नागरिको के भी कान काटती थी । बात धमी दूसरे के मुंह में ही होती की वह उसका भाव भांप जाती। स्मरण-धिनत उसकी इतनी प्रवल मी कि कोई भी कविता दो-चार बार पढ़ने के बाद उसे कंटस्य हो जाती। क्विता-पाठ मे उसकी बड़ी रुचि बी। कहीं से भी कोई नया गीत या नयी कविता मिलती तो धीरी उसे उसी समय अपनी कापी में चतार लेती और उसके बाद मस्तिप्क में।

मो का दलार दीनों भाई-बहनों के भाग्य में नहीं बदा था, भीर पिता के वात्सस्य को उनकी व्यस्तता कभी उभरने न देती। इस मारण माता और पिता दोनों का प्यार माई को बहन से धीर बहन को भाई को प्राप्त होता। परिणाम-स्वरूप दोनों भागत में इतने घलमिल गए वे कि किसी भी प्रकार का दूराव-छिपाव या संकीच उनमे नहीं या। हॅरी-मजाक से सेकर गम्भीर बात तक वे बापस में निःसकीच कर लिया करते थे।

मुश्तिक प्राप्त के प्रीप्तिक ना प्रतिक प्रतिक प्रित्य के स्वित्त के प्रतिक के प्रति के प्रतिक क

दिराज्य से महर्वियों का क्यां है ये दिनी रच्या को से दि की मान कर के स्वास्त की में बारण बात कुणोरित को पर की मान कर बहुत कर कर किया है की दिन मान किया की मानिकार कर बुदा कर कर माने की दिन महर्वियों के से क्या में दिन्य हो मानी है। कीर के भी बीचे की मानिक किया के प्रभोरी कर कर कर कर कर कर कर की माने के मान मोने के मुद्देन महर्गि कर कर कर कर कर कर कर कर की मान मान कर की मान की मान की साम कर कर कर कर की मान मान कर की

तोरी बच की रिचयों का व्यवस्थान करेती।

सम्म के प्रतिक्त नहाँकों में नित्यहि वहार वा भी ह यह ता की बहु मुदारे में ही, बहुर एक हुए-ना वची कहें वादात बार बहुर वह बहुरित में ही, बहुर एक हुए-ना वची कहें को बोरे पर बार शान पार करना वहार। भी भी हुए समय कर उसी पहुलें में बहुर कर के हैं की करा बहुर के हैं हुए में को कर है के बहुर 'ब' 'या' से सेवर एक्ट्रोज पुरस्क में हैं बची भी का के थे। बोर पत्री पहार्दितों भी है ने बार सिंग्ड कर कर की की को है कर मी। बार के पत्री सुद्द है जा उसावाल सुद्दांत को सम्मादना चुहा।

हिराणुर ने डी॰ थी॰ । महन रमून नी वाह समान्त कर नुर-भीन नी अस्तीयान ने नवनीयर हार्ट जुन से मती होना परा, बसीन सावधात भीर नोई हार्द स्त्रूप नहीं था। नेस हारा हिराजुर से अस्तोबात सम्पन्त तथा घटे ना सहस्त हा। महान्त सहरे चीने साठ वाहा और साम नो छ बने नी वाही से मीट सावार । राज को हो गरे हमें हीरी के माथ माधावस्थी बहले पहला । एक लम्बे समय तक दोनों भाई-बहुनो की पढाई का यही कम चलता रहा । भीती जाने कह से जब सहय की पतीओं से भी जब उसे भपने भीता

वा दिन-भर का वियोग न होगा, जब वह सुर्यंदन से मनमाना पढ सकेती। पर जैसे ही उसे पता चला कि मैटिक पास करने के बाद सद-रांग लाहीर ने किसी वालेज में प्रदेश सेगा तो गहरी टीम उसके मन को भेद गई। परन्त यह दीत बीध ही एक सुभावनी बाबा में बदस गई अब उसने धपने पिता में सना वि बी । ए॰ पास करने के बाद उसका भाई की सिल वा मैम्बर बनेगा भीर उसकी कुशी वायसराय के ठीक दाहिनी घोर होगी, जो टिवाणों को सात प्राती तक भी

तमीव गही हो सकती।

सद्यपि जेहलम कापूराजिला ही राजभक्तों का जिला था, जहां क्सी भी प्रवार के राजनीतिक विवारों के लिए कोई स्थान नहीं था. फिर भी न जाने कैसे देश में घट रही घटनायों का बुसान्त वहां यहच ही जाता या-विशेषतया विद्यार्थी वर्ग मे । सुदर्शन का स्कूल सरकारी या. इस कारण लडाई के दिनों में कियी भी विद्यार्थी या प्रध्यापक के लिए राजनीतिक बार्ने करने धौर सुनने पर कहा प्रतिबन्ध था। पर इतना होते हए भी घट्यापक धौर विद्यार्थी यय-वय रूप से घायम से इन प्रसमों पर बातचीत करते दिलाई देते । सरता जैसे अनकी श्री लडाई के विना भीर किसी विषय में थी ही नही ! देवल स्वली बर्ग तफ ही सीमित म रहकर ये कथाएं साधारण जनता के करती धीर होठों का विषय भी बन चकी धीं।

एक मोर लहाई में मंदेशों की हार पर हार ही रही बी तो दसरी मोर लोगों को 'गदर पार्टी' का नाम गुनाई देने लगा। यहा तक कि इसकी चर्चा मवयूवतियों के सोकगीतों में भी सनाई देवे लगी. जो पत्नी के ताल पर भीर शोकनायों में गुजरी/परतीन

"माटा गुनदी वा खुल नवी माँटा े र पंग्रेज न वे गर्या पाटी

भी भोरतिमें तुर वावनध्या बल्ले व ते भी गीरवां में तुर प्राचना -पावा गांवो तो कालियो दा राज गाँव र्धय मेर नर्भा को । मुरम्य नर्भा को मूत्र की राष्ट्रा नामव वर्षकारी के सब व दिन में ब्राप्त का १ कर वार्षि के कुछ की परिता करिया की माराबुद्देश्य के मेर नर्भा करिया का मार्ग कार्य कार्य मेर किया की बीचिया भी यह ब्राप्त की से पहुंची का मुल्ती क्या मेर के दिन के प्रति के बीचिया मेर की से से मार्ग की स्वाप कार्य कर्मा की सामग्री कार्य मुग्त कार्य मुग्त कार्य मार्ग की मार्ग की स्वाप की स्वा

स्वाधि हो। सीतं का दस दसर अन्तर्शत मिनियों है वर्षि कोते नहां तर प्रोप्त हिन्दान सम्बद्धाद महीन करी सीति करेदी मेर कार्त्ताका के सामग्र तक आहे का वर्षिका में बन्ति परे की नोतर मात्रे सामों है। मुलाह में दर्ज दिवान दिलागा कि इस हैं हैं। में कह मात्री मात्री कर्या की कर नेहा।

त्वर्थ कोई सकेंद्र नहीं काईक पान कर कोरी सार्विक्ट में हैं हैं भीद तियान हा नक्ष्म कर मा का मा ! किया ने मह कह में कीर्य के द्वारा नृत दिनने का जन्म कुछ हो क्षम में न्यान क्या नहीं की पानु बागू माम्या में यह भी नहीं के बीत है दिनाई का माम्या मा दिन्हाया तो जा पहले की जा है का माम्या है में देशी करते बहुत माने हैं पर महत्ते कुछ समाम्या भी देश कुछ सा एक सर्वे पाराव स्टूट (दरीवी शिक्षा) बात हो स्वर्तिक की दिनाई त कर हरें हिमाई के हैं में जब होती हो की स्वर्तिक की दिनाई कर हरें

'तुर्दे हर हानव भे वान होना होया, भेवा है' बोरो ने बड हार्र-कोट के बच के सहते भे यह निर्मय सुनाया हो सुरानि में बाय होने की बादा हो नहीं किया मन्दि सन-मन में बहु पढ़ाई में युद्द भी गया ह

भीरी सावारण सहिन्यों की तरह इरपोक नहीं थी कि वर में । बक्तेने रात गुजारना उनके लिए घनहोनी बात होती। वह धरीर की स्वरंध तो भी ही, ज्यन्तिहारी साहित्य पढ़ने से मन की भी दूर हो गई। परन्तु भाव तक उने पर में मने ने रात मुनारने का रूम ही सवार निता था। वब से सुर्पंड ने देशान पढ़ित साहित्य वाजा भारण क्वित, कभी-कभी उने बहेले में रात गुजारती पढ़ती थी। इसने उठे यस सो न तप्ता, पर नुर्पंत पर कीप जरूर भाता होंगे बात पर एक दिन इसन्तान में विकारी भारण है। गई।

नवार हो जारी थी, बहुतंत्र को पत्त तरि है विकास हो सभी तह पर स्पाप्त नहीं साता था। इसके सहितिष्ट पहुंचे सीट विकास में भी भी हो है कि स्वार्त के स्वार्त कर हो भी। दूसरों ने इस हो में भी भी हो हो के स्वार्त कर होने भी। दूसरों ने इस होने दिवस के स्वार्त के हो के स्वार्त कर होने में स्वार्त के स्वार्त के स्वार्त के इस होता कि हो कर होने सीट के सीट की सीट के सीट के सीट के सीट के सीट के सीट के सीट

साज कीरी सपने भाई से निपटने को पूरी तरह तैयार थी। चाहे पूछ भी हो, बह साज इस पहेली का समाधान करने ही छोटेगी। यह साज भीवा की इस रहस्तमधी खामोशी मा साला तीडकर ही दम लेगी।

धन्ततः बीरी की प्रश्नीशा समाप्त हुई जब उसने सुदर्शन को स्रांगन में सुमते देखा। वह बिना कुछ बीले घदर जाकर लेट रहा। "घाज मैं सुम्हें सोने नहीं दूगी, भैवा।" घंदर जाकर बीरी ने

"प्राज में सुन्हें सोने नहीं दूगी, भैवा।" प्रदर आकर बोरी ने बच्चो जैसे हठ से वहा, "जब तक पटे दो घटे तुम मुभसे बातचीत नहीं करोगे।"

''बच्छा पुछो, जो पुछना चाहती हो।''

धीर बीरी ने उनके समुत पूछनेशाली बातो पा एक बहुत बड़ा रमार सीनाता एक रूर दिया । बीच-वीप से कई बार एसरीन ने उठी उन्हें, इन्हें या दिवानी वात के उपार में एकते हुठ जीवना भी बाहा, पर वीरीने उनकी एकन चलने ही, जह तक बहु तक कुछ नह न लुड़े। बीर तिल बाता पर रहुंकर में दीने कमा सामक्र प्रकृत कही। लुड़े। बीर तिल बाता पर रहुंकर में दीने कमा सामक्र प्रकृत कहा किया, बहु बी-"पच्छा, रिफारी बातों को छोड़ो। यहने उत्त दिव निया, बहु बी-"पच्छा, विकास के सिर्फार की स्वार के स्वार की स्वार स् रिय सुदर् का तथा। जर खुकी के बार, अब सुदर्ग ने ने की भोकों जबते थे जुनाश ना बर् उन्ने नरह खुर सन्यानु पुत्रके बार का है। बहुन सन्ते के बाद साम्य मुदर्गन का उनकी खुमी नोपने से नाहारी प्राप्त है।

्यूरि परा पहा है भेका किसी हे जूस सुम के हैं से समय हैं हैं सिय परा हमा है समस्रा होगा समस्त सुम को नार किया होता है सहित सात, बिर सुन्हें कहा भी पूछा की समरात होते पहारी हैं। सीट परें पहते कीरी सुबक्त नहीं हैं।

बहार विश्वमें, दिन समान्याचना और किर आहु देव बी हार्ड सादि मधी हरियान बहुकत बन चून में बाद भी मुद्दों है के बचार न बिगी सो भाग में पाने यह हरियान को अवीत माने बी टान में से बहु दिगी भी हराना ये अवीत से माना नहीं सहारण कर ह

"सम्मा बीरी," वह बोमा, ' समर नुम किमी तरह बीसा नहीं छोड़नी तो यह भेर मुख्य नुष्ट्रार नायने लोमना ही बहेबा !

मुर्थात में बिरतार से बताना सुक दिया कि किन क्यार हदर था। बाराब रोम बिगड चुना था। बीरी में तथ बारें बड़े दूस से मूरी, कीर पुछा, "तो तुम दमी मामने में आगड़े किर रहे हो दयर-उपर कार-बल ?"

"एं., बीरी, भीरी मामते हैं। मारदर रूपीर तितृ वार्धि के दि बहुत काम कर है है योर तेना बहुतना तामत महत्व करी करते बहुत काम कर है है योर तेना बहुतना तामत महत्व करी करते वार्धि है में यो भी भी तो में बहुति करात है। यह देखाने वार्धि मों की सामति हैं। यह वार्ध करें हैं कर महित हू तहुत्व हैं पर वह ही यो तेना मानता या साहत हो प्रशास करें सीता, रूपतिय हुत्व हैं। वार्धी मानता मुंता मानता रूपते करते हैं। मार्ध्य स्थीती हैं में साहत हैं कि साहती हैं। मार्ध्य स्थीती हैं में साहती हैं कि साहती हैं में से देखाने हैं। हैं है सह वह साहती होती पर दुर्जिक हैं मीरी, कि प्रशास वार्धी की तह है। हमें हम करता बांधी होती। यह दुर्जिक हैं मीरी, कि प्रशास वार्धी को सह तह हम हमें वार्धी है से देखा मीरीया करता हम तहा सी में हम तह हम हैर तक बहुन माई दायन में कार्य कार्य रहे, यर बातबीत के बच्च तक बात या कोई जर्मेख नहीं हुमा जिसके विद्यव में बीरी तबते ज्यारा त्यामुक यो । किर तबने दसरें ही दुया—"योर प्रेया वरामा के दियस में कुछ दया बचा कि बहु साजवस्त बड़ो धोर दिन वया में है।"

बोर धानों से बोरों के बेहरे दो धोर देलने के बार मुस्सेन ने इतना ही बहनर बाद समान्य कर दी, "धानी उसने विषय में बोर्ड पूछ नहीं बातवा, तर इतना निस्त्यत है कि बहु धानी कर पहना नहीं कथा, बही की दक्कारों में कर बाद होता बोरान्य निमान ने कसवी निरम्तारी के निमाह हवारों समें का इताम बोर्डिक विचा है।"

बानकीत भागद और कुछ देर कतती पर सहगा एक प्रतिधि के धारमन ने उस बार्तालाय को रोक दिया ।

स्तिति कोई अनुवास नहीं, सुरशंत का सम्यापक सीरिश्य सास्टर दनीपतिह था।

को ने नवाल साहर स्वीनीहरू ने बान कर नहीं हैया था, वह उनके दिल्प में लिकन पुंछ उनके पाने ने का लिया ना है उनके कर उने कहन कुछ बानती थी। बीरी सी दाने के लिया बहुनता जाति-वारी साहित्य बुर्चान साहर रक्षेणिहरू के दहां ने वास्ता कराता था। राजद यहाँ पान्य या कि स्वीनीहरू के सामान में बीरी के बेहुदे वस साहोत्य सा कोई पिहु न याने दिया। ने ही ही मुर्चान ने यहे बताय, मीदी, यह है में नाहर दिवानीहरू है कि सीरो जनके साम सर्वों जीता स्वाहरा करने कानी। वजके स्वयान में हो बीरो ही साम सर्वों

सुदर्शन ने पूछा, "मास्टर बी, बाप यहां वहां ?"

"तुम्हारे पास ही धाया हूँ"

"स्यों, सद क्यन को है?"

"बात बुरी हो है, नहीं वो क्या जरूरत थी सुबह-सुबह महां माने की।"

"मण्डा बताइए बचा बात है ?" कहरर सुदर्शन में शीरी की मीर देखा, जो बड़े ध्यान से सुन रही पी, छावद उसके देखने का मतलब था कि बीरी मही से बली जाए।

"बीरी," उसने मादेश दिया, "जामी मास्टर की के लिए ……!"

"भावता ।" मारदर क्योत्ती है को बाले कुछ बहै "बीती हैं मेरी ताब रश थी। बालांकित काम की को लाहे लाहे काता हैं। तो हुएते की काम जग भावता वर मुफ्ते हिस्सा हो तथा है कि "बंग करें मारदर की !" कोरों में बोल हो है होरा, "बक्कर दें

माने के किए। यहां नहीं कर भी सक्षी मा नहीं। सक्षा, हो वर्ष बात को मान प्रमानहीं कर भी सक्षी मा नहीं। सक्षा, हो वर्ष

"मान हो।" मान्दर बतीनिन्ह उपमाहित होकर कोना, "उँ बोटने की पहरी है। मान है मार्च की बहुत्ती तारील । राग की वॉ बोड़ियान जफर टहर्गे, कीर का बायत यम जाएते। हमतिए हो में बत्ते की गारी में जाता होगा। सात की माड़ी से तुम दोनी बहिन-गर्द बारस मा जाता।"

"भप्छा, तो मैं तैयार हूं।" मीर वह मुश्यंत की धोर देलकर बोसी, "भेया तुमतबतक पगड़ी बांधी, घीर में येट-पूजा के निष्मव्यं कर सुं। गाड़ी में सभी काफी समय है।"

सुबर्धन पराड़ी बांधने समा झौर बीरी रशोईबर मे चसी गई।

## दुसरा माग

\_

"...चौर यह बात में दिनदान से बह सरवा हूं कि जमेनी के ताप प्रवेशों की लड़ाई कदस्य होगी। यह, हमें चाहिए कि सड़ाई मारम होने से पहले ही वहर की दैवारी बर में। वहाई सुक्ट्रीने को भाषा दोनीन गास से पहले कही की जा वसती, चौर हतना समय हमारी वीसरों के लिए कम नही है..."

समेरिया में रहते बाते भारतीयों यो पदर वार्टी वे प्रमुख नेता 'ताता हरिदयाय' ने यह बन्तव्य ३१ दिलावर, १६१३ वो सैकरोमेंटों (समेरिया) में दिला या, जिल्ला औलायों पर बहुत गृहत प्रमाद पड़ा। भीर उसीक फ्यलबार स्वरचनार गीम ही बहुत कारतीयों ने सालायों की शिक्षा पर भ्रमत करना चारम कर दिला।

सारत हॉटरवार दिस्ती के रहने साते थे, वो सास्त्रकोर्ड यूनि-विति में प्रतिष्ट होने के लिए इंगर्वट को रूप शहा की इन्हों सामान करके के के हुन देशों में मुग्ने हुत मेवेरिका आ पूर्वेत देश-स्वायच्य भी प्रावध्या सारान्त्र से ही उनके तीने से मचन रही थी, वो समेरिका बाकर—सनुकृत बाजवरण भाकर और भी भड़क रही।

स्वतंत्रता का भूत्य स्वतंत्र देशों से ही जाकर जाना जाता है। जैसे-जैसे उन देशों के बातावरण का प्रभाव मारतीयों पर पड़ता गया उनकी मार्खे खुवती गई, बीर फिर अको खुती हुई मोर्खी में गुलामी

ीरात करता हैंगा संपत्त कारीत की शीराक वह दूस सम्बन्धी है दुधा, "सुदर पारी से हैं" और में बावपड़े हैं। बावजी बीर स्वरहरे "बी," मुक्त ने स है शहर को दवर के बरा, "हा है।"

बाया है तथी में है रे इतका दुशता कर रेगा है।"

भी-वारी सीमी व वामान में प्रथातन का बाद बर्डा है रहता है । यर माना से विशेष मण से विशेषी व्याप के से किएरी गांच सत्र के कोरुण भी। युवक का श्रीवाधाना संदूत्त हैनकर है बगुबर यह सुरस् भारत में बल्लव मुख्य पर्दे बगुबर दर्श है। थाई भी रहाते भी । जहीं कह दरे बर देवारे के बन पर देरे गाँकी दार बिकार के के जी। हामने का कोई इंतरा इस होकी गरें।

"Az menit d बर गामने वहीं कभी वर वेंड गया।

"हिन्दी उस है " "बी. संस्थित की है"

एक बार दिर सामात्री के हों है दि दिनोंद की कार दें हैं ही। बदाबिन वहीं गोपकर कि उस बीत में भी कप, मोर बना है दर्ग पार्टी में भहीं होते।पार्टी - दिग्पे रहायों को गुम्सामने के फोतादी प्रानियों बाना बस बाहिए, और सहदियों थेंवे बेहरे करे पह सरका है इससे तो कोई भी दो बजह लवाकर भेर बयाओं तेता? माजाओं को समझ नहीं था गरी थी किए बब से वे देश सहके की सनकदर करें।

जन्होंने विनोदपूर्ण दन से जनने पूछा, 'विद्याची हो ?" "जी, बकेंसे यनिवर्गिटी से पहला है।

"वया नाम है ?"

''श्री, नर्दारसिंह।'' "नुंबारे हो या बादीशुदा ?"

"नी, मंगनी हो चुनी है, और छादी होने वाली है।"

"मच्छा," (सालाबी सुलकर हुने) 'मननी' धौर 'सादी' के सार मृह री निकालते समय उन्हें सबके के चेहरे पर एक माजीव-सी उत्तेवना भी अलक दिखाई दी : वे सीच रहे थे बत सी इसे वह हो देना बाहिए कि बेटा गदर पार्टी की गोष्टियों में ह्युवा नहीं बाटा बाता ! वर इसकी बजाय उन्होंने सड़के पर मजाक में प्रदत किया, "मालूम होका है, शादी करवाने के लिए काफी उतावने हो।"

"आपने ठोक सममा," लड़का सचयुव ही शाबी के लिए उत्सुख दिलाई दे रहा पा, "मैं बल्दी से जल्दी सादी करवा लेगा पाहता हूं।" शालाबी सब भी स्वाद सेने से बाज नहीं साध, 'सायद' ''शायद

शालाजा मेर भा स्वाद सन स बाज नहां माए, आयद "सा तेरी भंगेतर बहुत ही खूबसूरत होगी, क्यों ठीक समभा न मैने ?"

तरा भगतर बहुत हो खूबसूरत होगो, क्यो ठाक समका न मन !" "बी इब मोस्ट ब्यूटीफुल, सर।" सड़के ने कदाबिद सपनी बंग्रेजी

की योग्यता दिखाने को यह बान्य कहा। "धौर भेरा स्थाल है।" सालाजी ने तुर्रा दिया, "होगी भी किसी

समीर भी लड़की । खूब दहेज मिलेगा तेरे मां-बान को।"
"बहुत ही बड़े सानदान की सबुकी है भी। सायद झाप उसके

पैरॅट्स को जानते होंगे।"

प रट्त का जानत हान । दो क्षण के लिए प्राप्त हुए इस मनोरंजन ने नालाजी का दिल सहसा दिया था। दो पल भीर इसे जारी रसने की इंच्छा से वे बोले,

"शामद जानता होऊ, वया नाम है सहकी के बान कार्यी" "यगराज।" "किरो

"यमराज।" विशासिक स्थापन स्यापन स्थापन स्यापन स्थापन स्थाप

दांतों तले उंगली दवाते हुए लाखाजी, नीच के करिडर्नर केयान से सड़के को निहारते रहे। उनकी नजर सड़के के केवा करते हैं, सट-वियों जैसे चेहरे पर जभी रह गई। फिर उन्होंने पूछा, "पजाबी हो?"

जाः "कौन-साखिला?"

"बी, सुधियाना।"

"लुधियाना शहर के रहनेवाले हो ?"

"नहीं जी, मेरे गांव का नाम 'सराभा' है।"

"मण्डा, यह बढामो बेटा," इस बार उनके स्वर मे विनोद मा क्येंग्य को बनह पर शम्भीरता-भरी जिल्लासा की, "कोई काम करना जानते हो?" करते थे। बबाद क्या के करते थे, दूर्याचन चतर दिनाय के हरे में पार्ट्ड विचारी पहली और कह आहे, बहादानदारी पार्ट्ड वे बार बांगारा कम है भार्ट्ड क्या कर कि के, आहे ना हाता करता वार्ट्ड पार्ट्ड देने तक ही पार्ट्ड के हिन्दी की दीवन भी दिनों पार्टिंग उपार्ट्ड करारा ही बाद बार तहुना कर उपार्ट्ड किही भी बात है हैं में पार्ट्ड करारा ही बाद बार तहुना कर उपार्ट्ड किही भी बात है हैं

मनत बहु नमय भी सा नना, जिनके विश्वय से माना है कि है है कि माना है है है वह के दिख्य से में विश्वयानों भी भी कर ना सा नागती को मौत ने कि सम्ब पानां नीति हो है से माना भी है तुझ दानी जाने है है के माना माना माना है के माना माना है के माना माना है के सिंह सुझ हो नोता नमें से माना है माना है से माना है से माना है माना है से माना

सानाजी के समरोबा छोतने के बुझ बार महीने बार करों हैं जुना है, १९१४ के समाबारवर्गी में जब सोगों ने मोटे-मोटे सीनेंड जुनाई, १९१४ के समाबारवर्गी में जब सोगों ने मोटे-मोटे सीनेंड जुनाई का युद्ध एक हो पार में पात हो साथ हर है कर एक पर भी साथ कर है जुना है जो है जो साथ ह

मारत जैसे विधान देता में, भीर भवेडों जैसे महतून धारन विवच गरर करवाना किर करवाना भी विदेशों से माहर, मंड ए बहुत करिंग काम माहर में हैं बहुत करिंग काम माहर मोहर से प्राची के माहर में में बच्ची न तथा महिए मा । रासीने धनुसार पार्टी की धीवना भी है सि में महत्य महिए मा । रासीने धनुसार पार्टी की धीवना भी है सि में बहुत करा मिर

बाएता। बहु दीन है कि विक्रमें एक वर्ष में भी जम समय में हरर चार्टी में बई बची विकास बान दिया जा किर भी करी बहुत बुध बरका देखा। कार्निय देखा की चोटमा में नात्रिकारी को से हन-बन्दा करा है। कर मामेशा दिवा सीमा तक वृष्ट पूरा का, यह समये चीड़े हुटने का भी तो बनने शित कोई साला नहीं था।

पूर्ण कीय वार्ति कुछ मान के लिए हो गुरों में बंद नहीं एक पूर्ण पूर्ण करिक वार्ति के पात्र में भी हमा प्रति हमा उसने वार्त्य की विकास का विभोधों का। यह विरोध कर में बात्रों की संकास हमाने क्या की कि मां उसने का माने कि की हमा का बारी हर पर की माने मां लिए की पात्र के प्रति होता की माने पर पीरा मुझे का सकता। माना हरियाला हर कि तो बात्री में के पार्टि कहा के हिंदू हुए कि पात्र करके सात्र का सकता का कार्यालीय कार्य माने की हिंदू हुए किया। करके सात्र का सकता का कार्यालीय कार का बात्री हैं, हुए किया। की सहस्राता कार्य कराया। विमाधे करहे कार्य की हुए सकता। की सहस्राता कार्य कराया। विमाधे करहे कार्य कराया। विमाध हो भी, वा सितार के बात्र कराया। विमाधे करहे कार्य करवाया।

सामान का बारा कर चुरा का। स्त्रांतिए सार्वेष नित्र भी उनका नहीं साकेश वा कि नहर की कोजना को हुए इंच ने पूरा किया जाए। हमानिए सर्वितानी के प्रकाश में युद्ध सार्थ्य होते ही जानन में सहर करवाने की तैयारी पहने से भी स्वित्व जोर से युक्त कर दी गई। इन्हें सुस्त्रों के स्वाचन होने के तीनरे दिन बाद, सुर्वान असगत

बुद्ध स सकता के सांत्रक हिन का नार राज बात, स्वापिक सांत्रक में भोरीतर के नार राजित राज हु वह पूर्ण प्राप्ति स्वाप्त का स्वाप्त का

बहु भी एक गंधीन ही चा कि दर हुनाई को 'क्षेत्रनाम कर बनाइमें ने बना, बोर एपर एटर वार्डी का ब्यान कर बीहानी मनका पानी बहुना ने गांदियों मेहिन दे जुनाई को ने बनाइनों के 'क्षेत्रियां बहुज हमार प्रचार हुवा। क्षेत्रीयिक प्रचारा भी बनाइने के वाब था। क्येंग्रे से क्षेत्र जिल्लाने बोर बहुनाम मोरी-बार स्वार्टी हुव था। हुवार से क्षेत्र क्षित्र क्षेत्र प्रचार कर सहस्त्र के बहुन

से सरम तारम देश में लाए जा रहे थे।

भीतियाँ जहाज सभी समरीका सीर जागान के बीच बांध सन्

में ही या कि वास्तरिका पांचु पूछ हो गयाँ वा समामार की

पहुँचा। वहां यह बान नामके बागी है कि गोदगीन्द्र सन्ता है।

वगके वह तायी दस जुनवर अभार हा करने के इसारे हैं।

हिंदी हैं कि समामार से या पहुँचा करने के स्वारे हैं हैं।

'को निया' जहाब जब बोकोहामा (जारान) गर्या हो हरते हैं 'को मोशार मार्क भी बही चा पहुंचा मा है तिहित थो र कतरि विह संपर्ग की मुनाकाल मुश्कितिहरू एह होटल से हुई। इस प्रकार 'को सामती गर्क समित्री थोर सदर पार्टी में परस्वर सम्बन्ध वेदा हुया।

म्लाकात के समय जब होतुनिह झीर कारितिह साथ है पुरिक्तितह से मह घटना घुनी हो आहमों की हालव में उनके धुनि उपाब नैदा कर दिया। उसी तमय २२००० हातर का चैक मार्कर भग्नानों में —ीवतमा संतिरक्त किराया जहान के सिर पर धाँ हुआ पा —जन्हें देश्या। इसके मतिरित्तत दो तो रिस्तील और धाँनी सारक्त भी दिया।

यह तो सत्य है कि 'कोमांगाटा मारू' के बाजियों पर प्यादती भौर जुल्म नेवन एक व्यापारिक सिखिबिय में हुए ये, पर ग्रदर वाटी के बाद को इसने बहुत लाव बहुता, बर्बोंड कारी वे देश वहुंजरे के बहुते हैं। एवं बादव अर्थाने दिवाद बुवा वह सुराव वैदा है। मुखा बार (बंदा का के दस दुर्वरण भी ) कियों में, को 'बादवां (क्या बात) भी कारताह कर हूं दे वहीं दे हैं। भीनावार कार्य बन-बता (कुशा हि बहिनों के) मुलीकों केरा बच्च केनकर बाद हुए उन सत्तवन बादियों का कारताब पड़िनों को मों को ती है। है।

रम मुख्यकार की खबरें कारिकारियों की ... की किस्ती में अब परे के....चारे में श्री कार्यकी गुरू हो नहीं, और जुब बहुन्यका । जिसके कारकार बहुन से सार्थकारी सम्माने नहीं कि देख में कार पूछ हो जुता है, और बबरे प्रमुखन के बहुते ही। अस उनके होतने सीर भी बहु करा !.

## 90

 जाता। पट्टूनने पान नात्त्र को कार्ति ने नित्त हे माद नात्त्र है जुड़ भी भेट कर दिए गानु कार्ति पान नात्त्र का निर्देश नात्र होत्त्र की आगो होने का पत्त्र कर कार माद्र मान्य नात्र का कार्त्व में कार्त्त्र कर कार्त्य होत्त्र कर कार्त्य के स्थानित कर भीर पान पट्टूनन कार्तिकारी मेगा बहाजों में ने हैं। बदावर निर्देश विकास कर के त्रित्त नवद्यक्त कर त्या हमा अपना कार्त्य की भी पानों की पान के त्या कर नाही का निर्देश के बाहु कार्त्य

परम्पु इतनो सकति घोर भीकारी के बाद भी हुवारी बाहिकती सही-मामान बादने दिलानों वह पहुंच गए ३ उनमें से बादमें पर हीर सही-मामान बादने दिलानों वह पहुंच गए ३ उनमें से बादमें पर हीर साईक हो कभी निमासनी सबदय बायम बाद से नहीं

कर्तारिन्ह सराभा को, जो सबेदों ने पिए पूजा ने एसे से केंग्रे तक भरा हुआ था, पकड़ने के लिए पूजिंग नवने सीयक कोड़नी है, पर न जाने की वह एपाबा बनकर उनकी नवहों से बढ़ दिवता।

माति भी यह योजना समामा '१०४७ के दिश्यन जेंगी हैं भी। इसी कारण देश गुरुवते ही शांतिगायिने ने सबने यहने जो काम दिना यह या सैनिकों ने मन्त-मिनाप पैदा परके उन्हें ग्रहर के निए हैंगर करना।

सचायुक जस समय स्थान था गये से तेन है से हमार प्र ज्यांकि पहले हो हि हर एक पानती में हम त्यार के लीना है दिन्य है क्यों नियानी रही जा रही थी। किसी धार्मिक वा नहां कि प्रावती में वारिका होना प्राावन नहीं था। दिन्यों भी किन्येन्स होते हैं सिकारियों में नहें तक पानते पुरुष है, जे प्रथानार है। वहां चाहिए। सिकेप कर से बोध तान को उस के सहते क्योंपित होते चाहिए। सिकेप कर से बोध तान को उस के सहते क्योंपित होते सानी के होते हुए भी सिक्त बेटनों में जा पबता, और निया किन्ते अपने कारानारी से बहुने के निया कि तो होते होते पानी मुद्दी करते के तिवा। सिवादियों की तो तात कोते, मूर्व वर्षों में दिन्यों करते के हुए से दोने में के सम को नहीं होते के पानी में हिन्यों के प्रथानी सिक्त भी सामा से पारद कराने से उन नोगों के दिन्यों में प्रथान किस भी चारिकारी को मात्रा नहीं भी निकती सराम के प्रथान

इय शहनता वा इमने भी बड़ा बारण वा उस दवन में बैंकिक प्रकार वा प्राप्त के प्रकार वा वा प्रवाद की शंक वर्ष की क्षेत्री के कि वर्ष कि पूर्व के के बार दें की रिप्पायनक का रही थी। क्षेत्री को हर का हर हो चूरी थी। देव के वर्ष वर्षुया परन्दें हैं क्षेत्र कोरी हरता कर हो चूरी थी, सितके वर्ष किया बस्त कर दूरी कर के-प्याप्त कर यूर्ण कर विकित कर के बार दिस्सात बाहितक सुमुद्द होता वा रहा या, कि मुद्द में बाते वा सब है

हिस्सान प्राप्तत नवकुर हुए। का रहा मा, रहा पुर बीधा नाम के मुद्दे में माना । प्राप्त ने कम किंदिकी को बारणाने का ही न मा, मई मीर भी हसामार भी को पन हमन परिवर्षाणों को राह रोटे सही भी। नहरों बड़ी हमादा मी साम त्यांची की कमी, सर्वोद्य मुद्दित का हान धारम्य करने के लिए बहु बहुन बड़ी माना में बाहिए थे। बोरी-क्रिंग जितने साम-साम से शीम विदेशों से मेंबर बने से, से सो सनकी नावन सरान्यात य साथ अरुपा य नार नाय में से दी बर्गस धारपक्ता के सामने माटे में नायक के बराबर मी नहीं से । मिर के अरुपा भी बरूठ-या माय कर्डे समूद से स्टेंचना पढ़ा, सब कर्जे पता सता कि ग्रावेंजों की बुलित न बान क्लिन समय नहांक्र से बचरते

समय क्षा ब्रह्मक में ही बन्दे विरम्तार कर में।

यान्यतास इन्द्रा करते हैं लिए वह तयह के उत्तार कोचे बाने सीने देश में एक को की ही दल बीच का सकास वा दौर वहि कही सिकड़ा भी शो बहुत नहीं मुख्य पर। यीर हतना मुख्य देने का राज्यां भी को उनमें नहीं वा बो मस्ती-साथी पूर्वी दिस्सी में हुं। केंशकर बले बाय थे।

से-देकर देश में एक ही जगह ऐसी थी बड़ा से धरव-धरव विशवे की पुछ भाषा की जा सकती थी, भीर यह थी बंगान की राजहोती पार्टी, को उस समय तक कई कांतिकारी मान्योतनों है कि कुटी को । परपंत्रात के नांतिकारियों का सस समय नाम-सान ही सनसे सम्पर्क या । सी इस घोर विदेश स्थान दिया बाने सथा । यर इसमें उन्हें एफनता बावक नहीं हुई। कर्तारीतह सरामा ने बंगास के मुक्य नार्ति-कारी धनीन्द्रनाम सान्यास के पान काकर जब पता किया हो सबे बताया गया कि बंगाती क्रोतिकारियों के पास पिस्तीओं की इतनी क्यी है कि सामय में बाकर कर बार वह बारने ही शाबियों की बुरा मेरे हैं। बसवता बम बनाने बीर सप्ताई करने के मामले में वे सीय प्रवासियों

di ermerer reb.

बरमूप बतात के कर्णनवारी सब सक्त बनार के सर्गन्य में पर धार्यम विश्वात वही याने दे । बालाल में बानवन्त प्रन्ती लिए का कि बचारी कार्रिकारी को दिया में कला के, देनवा हुई है केन समझोर है, दुलरे लाविक संस्था धनाडी की बी के के के कार्राला के मोश्य मही माने का शवते । राज बार साध्याम के पुणरे दर म शरामा में प्रमे बनाया कि सभी एक नवान के वर्ग नवारी सफाई है जार िया मही बार तके, बीर केन्द्र स दोने के बारण के तीन सम्पन्धान ह नूरी में बाम बर रहे हैं तो मावान को इनने हैरानी ही बान बाबा बीर बहिरवाल की हचा ।

महोत्तक पत्राव की बंदर वाही को बसा विशे में बहारे व मा प्राम् मा, इस बाम में यादे तब तक सकताना नहीं दिल वार् तक माने बावर बनाती वातिकारियों के प्रमुख नेपर सामितारी के हात में पंजाद नदर पार्टी का नेपान नहीं कीय दिया नहीं है भारतिमक दिली में जब बनाय में में भी मान-पान निर्देश

प्रामीत न रही हो पत्राची वादिवारियों से दूबरी कीर ब्यान है? माराम कर दिया। बार्डे निष्यं या कि बाहे दिशी भी हेंद है है हवियारों की प्रान्ति प्रायस्थक है । क्षत्र की तारील निस्कत है ने में निर्मा देर हो रही थी उत्तती ही सन्दे धीर मनप्रमना की सवादता का प् थी। इन बार्सों को स्थान में रखते हुए एक के बाद एक, बई बोरिजी है सबी घारम्य की गर्र ।

तब् तुक च-्यात हवार के समझन अधिकारी मारत वहुँक की ये जिनमे से बहुत से मजरबाद कर दिए शए, धीर कड़मी बीवार निर्देश समझकर छोड़ भी दिया स्था। जो सभी तक भी पुलित की कार से बचे हुए ये, उनके नेता कर्तारमिह शरामा, हरनामिह दूंडीताट बगतितह मधुरातिह, पहिन बगतराम, पृथ्वीतिह, दरशिर पूर्व प् बोर गुरमुकतिह सततो बादि पूरी चीनती बोर तेजो ने साम करे बावने काम में जुटे हुए थे। वान्तिकारियों ने कई बोर दल बामी टक में किसी न विसी देग से विदेशों से चलकर देश वहच रहे थे।

देश पहुंचने ने बाद जान्तिनारियों ने समय-समय पर सामेतः विष्, भीर ग्रदर के लिए नई प्रकार की योजनाए मनाते रहे उनमें है को मोन्द्री शांके पहला रहती है वह स्वन्यन के मारावर में सामावर्ष (यमुक्तर) में हुई निवर्ष स्कृतन निरम्ब किया गया कि परिश्वित्तरों बाहे बेढ़ी भी क्षोत्र हीं, है, मारावर को प्रदास मंत्रा क्या रहा दिया बाहा इत नार्व के लिए को नरेटी बताई पर्ट, बताके नेता कार्याविद्ध तराया, परंदत जयाया, नियानिद्ध और नुमारिङ्क सम्मा निवत विद्या पर्दा पर बाहा में पुरत करावरीं, विद्यावद्या हिम्सायों की कभी के साराव मुद्दा स्वीत स्वर्गित कर नी गई।

तब एक पंचार की दुक्त हात्राज्यों को हाथ विकास में हरणता मिल क्ष्मी थी। विदेश कर के विधानीय (सार्टा) का दिखाला मंत्र र शे कार्टार्विक्ष हरणा की प्रेरणायों के क्षारकर में प्रस्कर को होने बाते कर का प्राप्त करने के लिए न केस त्यार था, बीक जात्रसा भी। कारणा र किसने के देवी प्रकारों को इस्त क्षार का बागी बहुती थी कि संदेशी सफलारों को स्वार्ट्य कर दी जायेंगी। बीर कब यह बोकना सफल न हो तकी हो। वनको मार्टानिस्पात होंने

उसके बार जो बेटक १६ नवस्यर को मोता गांव (फिरोक्यूर) में हुई उनमें बताया गया कि प्रतक्षनात्त्र प्राप्त करने के लिए क्ष्में की प्राप्तरपक्ता है, पतः चरकारी सजानों और प्रत्नागारों को बूटने की योजना को स्वाहार में मात्राजाए। योजना को पहली कही के प्रमुत्तार वियोगीर छातनों के प्रत्यान

वाना का पहला कहा के मनुसार ।प्याभार छावना का स्वान नार को सूटने का प्रताद स्वीकृत हुआ, निवस्त्रे तारीज रूप नहाजर रखी गई । इस काम की जिम्मेदारी कर्तार्रावह सरसार धीर कुछ सन्य नेतामों को शींगे यह । पर कई रकावटों के कारण यह प्रस्ताव भी काम में न सामा जा परा

उद्ये के प्रचान कार्कन कर्या कि ३० नामार को विहोसपुर मानने का पुरिष्यासमा सुर तथा १६ कर दुरोद के सिक्त निरंपक समस पर कार्कनारियों को दीतों के कुछ सदस्य देखारते दर सवार हुए, हुछ बोरों पर । परन्तु रासने हों तीयों पर स्वेचकर व क्यों पुरिष्या के पुरुष्ट हों भावें ने बेकत यह सामार सो बोर्क हों है। यह प्या सांक दुखें हमें यो के बेकत यह सामार सो हमें हों है। यह प्या सांक दुखें हमें यो कार्किकर कि सांचार सांचार हमा दिया ल्या), बार्चा यस बाद दिवते ।

इत पुनेत्वा में बदर बारी के कार्यक्रम की बन्दवाब कर स्थित विश्वीय क्या में बोधां नेपाधी के मारे माने के बारण वार्ती की की विशास हुई । बुलिस बुरी करह महोशी के बीरे बड़ी की, बबलिए बूड वालिकारी की बावने बावने वार्त को बात क्या, कीर को बाहर की दीतियों के राम से के वाताना होतियानुत के नांदी वा विका भूपमान की धोर का निकान के लोग सरकारी नीविया हाते से तेना के पुत्र वातान, बीर सम्ब की सहस्र की बीरवार्त करते थी बर दिन्ति भी काम म तक्षण न हो नहें । धाल में बन हे मेश नवादया है। वस १२ दिगावर को पत्र ह जिया हया (यो बाद में सहसारी हराई कर) ली गारी का संबद्धत और भी दिसर गया । यर इतनी महरी कररत यर भी नांव वालिकारियों का याताह बना कहा तो प्रवक्त कहा बार्व या बर्गारितिह सराभा का प्रतिमान को प्रितिमान के दर त्रित-रात काम-बोह बरते हुए व्यक्तिकारियों का किर से होटना के वार त्रित-रात काम-बोह बरते हुए व्यक्तिकारियों का किर से हाथ कोई के विष् क्षेत्रणों में मोरिटया करना रहना ।

गुदर पार्टी के नार्यनम का ग्रुमा होर, दिसम्बर १६६४ के हुन है गमान ही बुना का नामानार समयमतायों से उन मोनी है वो धगुक्त माठ गीता, बह या कि बिना मतद्वत नेपूर्व के बीर दिग् विधिवत् नेग्य नी स्थापना ने, दिना भरत-गरंत हास दार्श की मुपञ्चित विए बभी बुछ नहीं बनेगा।

इत बार्त की सामने रखकर सन् १८१६ के बारणम में ही इक मा मुनित इन कोगों को मूखी, बोर यह मनित बी उस मन के बचारी राजदोदियों के प्रमुख नेता रामधिहारी बोध के हाथों में नेतृत्व सारती रामबिहारी बगान की फांसीसी बरती करने पर के निवासी दे मोर

कारेस्ट रिशर्थ इन्स्टीब्यूट के दरवर में हेड बनके का बाम करते हैं। वे इस दिनों विस्ती पहुंचल नेस (बाहराय साई हाडिक पर हम पैनने के घोष) में सूमियत थे। जनकी गिरणतारी के निए साई हाउ हजार रुपये का पुरस्कार घोषित हो चुका था। इस समय वे अनारह मे ममिगत होकर नाम कर रहेथे।

रासिबहारी से दूसरे नम्बर के बंगाली नेता वे श्राचीन्द्रताय खान्याल, जिनकी सहायका से कर्तारसिंह सरामा को 'दारा' हरू

बहुबने का सरवर दिव क्या । राष्ट्रीहरूरी को क्यी कार्य कर्यक

े सारीप्रवास काराज के बयान ही एक बनाड़ी दुनव भी वन निर्मे बताब के प्रवासी कारी के बहु-बहुनव बना के बहुन जा, किनवा बोल या—किया बनेक रिच्यों । के डीनी दुनक बनावन में साम की से बुबाएं में, भी हर बनन और हर बना के बनके बनक पड़ते में। बाग्यान बीर काराजा हांग यह बनाड़ में बनाव के बारे में में

बमाना कृते—विशेष वन के स्वार के मित्र वैनिकर्न होती के विनव है, हो गाड़े क्यानात हुई। उपक्षेत्रे नवार वा विनुष्य बात्रावेद वा स्वत्य हो रिका, पा काम बादि के पूर्व के बात्र की विपादनी वानुसा बाव्याल कर केमा बाहि के। साथ हम बार्ग के लिए वपन्ति कहित सामान जी, सीर विर नियमें को बार्गार्थक सरामा के साम्य बहान केसा।

भीव बहुत बीटिय दिना के इस बाराया कारते के बहुत साथ का है है इस्तामीय दुर्शमाद मी-विकर्त क्यारीओं के हुए हुए कह इस का पूर्व कर दिवस में लिएकोट हो के दूर को इस मार्ग कर वर्षमालियों के कर-विभाग के बात करती पुत्रका में बहुत क्यारी मार्ग को इस्ताम में बाती हिम्मी हैं यह स्वाम कर सिवा है—'ब्यामीस्वी के बात रहते स्वामक क्यार के हुए में के कि एक बस के विशाधिक है मूर्त एक दिनों के स्वामक क्यार के हुए में में कि एक बस के विशाधिक है मूर्त

एक पेतीरेंड रूप हो पराधी थी। पर बंगानी बंग के बब कमारें में बी बड़ी कटियाई उपमुख्य कारे थी बंगामा थी बड़ यह कि हमार विशास कर्ष बढ़ाया था। एक बग के लिए कम के कम १० के सामग्र आशी थी। बीट वर्ग के पी बढ़ कमी थी, बतार कारी थी बोनमानुसार पार यूक करने के सामग्र बाजों बगी थी। बारपक्ता थी। रातः को ही काम रोड्ड करके सन्दे मान्य कावियों की दुवारी ही सिक्षा, की के--करनावरिष्टु स्वरूपीरी, कमारिष्ट् मुर्गेरी, रोगा रिड्, कमानातीरह सरिक्षामा कीर कालु राज्यसम्बद्ध

कीर प्रभव देनारे दिन मुख्यान राजानिक पाने के प्रधान में है एक मां भी भीता हुई, दिनके नामान के नहीं और वहिंताहरी हैं प्रधान करने "पाने के बात माने पाने पाने का माने दाने हैं दिना राजा भी राम के नामें ने नहार्त कहा की, माने हुन्हें हैंग हुन्दा मोदिन विशोधों नुमानहीं नहां जा मिनने देने के प्रधान में का दिना माने हुन्हें में

सब मान नेवा हुता वि वाबा वानने थी। योजना वा थीरिये बढ़ों में विमा आहे । शोध विभाव से वाभाव विवयत हुता वि हो

विमे में 'ताइनेपाम' तांव के एक वर्ति को मुरा माए।

हम स्थान वह हावा हायते के बार दिन पायाम् "सन्दूर्य दर्व के एक और किये को मुरा स्था, महाने बादी कर प्राप्त हुए। इर हमना मही कि निक्की यनका बाद बार तकता, हाई हो साहराकी की मार्थी हमने की।

हिर धीर भी बहुँ छोटे-मीरे डांड डांतमें के वाचान् जयूने से परवर्षी को भी एक वहां डांडा जिला समुगतर के मीड पार्ट के बाला येथे मातिपारियों की बीजना के समयल हीने वा डारन्ड कांग बाता है।

राके परचान् साथी वा यह निर्मातात एवं तव चाता रहा वव तक रामा में सपना बहु सम् पूरा न कर रिलाया, को बहु बाई व वर साथा था हिं, "शे है के सादर-सावर सावने तायने तीने बाँगे वा देर मागदमा !"

छात्रानियों में प्रचार का सांशोनन हो वहने हो हो बोर-मोर है बारी था, मोर बक वंधे को बोर हे भी स्थित करिताई न रही हो गोना-बारद की पंचटी में देवी सा गई, मोर बनारत हो भी सेन्ता बारद मिनते की साधा हो गई। यह देर दिश बात की बी है

धात में १२ फरवरी को जो दादा की धम्मतात में साहोर के एक बुद्ध मकात में बैठक हुई, उसमें बहुत सोव-विवार के दरवार में धराता हुंचा कि २१ परवरी को साहे देश में सैनिक बांति का प्रारम्म



मान सुन कारे सानन को अक्टा है जहिर । यह है भी दान हो कि जहार कुण मीटक एक विद्याने से मही मिलाई महर्त मान है। गारी में प्रामनित है देश अन्य सान क्या नामान नाम दोहते मीडकारित के मानिकार है का के सीकार कुण में प्रामनित में पूर्णन में विश्वक विद्या हुए। यह दि यह देशों में हु बारों में गारीन मुनेदा जा पन मानिकारी होते मन्य हैन होता होता है।

देर की तुरु की भी दरशाश को कराव पर एवं मीति हैं। बारी भी तिमार्थ में मार्थ में हारों का विभावत हैंगा का दर्श कर का कि मार्थ में मार्थ में कि मार्थ में हर होते के मार्थ में मार्थ में हर हैंगा की मार्थ में मार्थ में मार्थ में मार्थ में मार्थ में मार्थ म

हुगामितृह जब मोची दरबादे बाते महात पर पहुंचाती पर्टी दे गदम्मी ने जनगर निगरानी सन बर दी।

तन तक गारी को दिवसान का कि हमानीतर को करने होंगे हुँदें तारीत के बारे के एक को तक्त करी और अपनुष्ठ को करने जान नहीं जा । स्मानकात्र किया का को में एक अर्थक के करने जा । कर बात कुछ दिवस हो को हमानीतर के करने आगा कि देंगे गोरे अगत कर के के लिया और अगते कि तिकेश के कर के जीवनात कर के के लिया और अगते कि तिकेश के कर के जीवनात कर को कर लिया और अगते के तहत्व वार्तिकारी कर की

महान की तसाठी में से जो बागव-पत्र पुसिस की सिसे, छुटें साधार पर प्राप्त के पांत करें तक हर तरफ समस्वार केर दिए पर। बागडों में से साथों जानवारी मिली। सबसे प्रविक्त सावपानी छनें नियों में बदसी नहीं। नियोगीर की पटटन को साथ है ७ वर्ड बात रव का दिया गांग । एकहिन्दू को (किएपी विद्वार कियादीर कारती की की पा रिकाल पा किस करा ।

uddate ber eren sen fen en er et fift if centil to era da grie ett dere fette er t & pil ferift ihr bet wiere war wenn' er fir al र कारी क्याई बन्दे के सामाई बैनकी को एक शारी के बाँक ता है है है । दिशासून है जारे के बहु बेंडण का वि रुपर्द वह दीती प्रकृत क्षत्र के सार्वात क्षत्री कीत्व जातिक ही कोर क्षत्र का के of gre er ten to et ene e) et laft feren gent हो देशह, दोरा-दात दोर दल कारीवर्ग कारत करत कर एक (CON 413 41 4) ERM 41

रा है। बारवं स्टांब्ड बारे की बड़ी खारी दा एवं ही बाब ११ टारीय का कार्यक एक हीन के पांच सा वर्ग पहने दान

है काला कर है है। का बहरांगरी की श्रीकार दियंकर क्यांची कर राष्ट्री हुए ही दर्द । इंद्रीम्द्री दे क्रीलीक्ष मोदी दे कीली ही दर्द af effet ei et en aus es med-mad freief at age web दी दा बत बड़ी दें । दिरीकार झारते व बारणा दिए का वे बारवारी है बैहार में वर्द द्वीबरा का बहुबी की । दहां की बादशेर दश क्षत्र बाहीरहिन

रत्तवा बंबान रहा था, थी बंधी देश्य, बंधी बार्ट्डम दर शबार शार बोर क्यी दियो टारे बीर बैंच्या ही में बैंड्यर क्यू -बस्टू क्यू हा ह्या परिवादांत का निरीक्षण कर प्राचा । वह क्ल्येगरिहा को होली सभी टीमियों है बड़ी थी, वो बीउंद डाने वाने करे दे दन है टाजर बतीयों के बीर्डन बरती हुई क्या किती रोवटीय के विधेक्तर पहन कार्रीबह सरामा ने बाने कान की पूरा करने का पूर्व कर के

प्रसन्य रखा था, जिसके पनुसार राम के दीव बाढ बने बेंचजीन की वाहियों वा कुछा एके वैतिक हारा एक वि व स्थान कर वर्रवाहा बाता वा । यदः भावरीह दे सन्य काम दुवरे साविती वर बोहकर बह बारिकों की प्रशंक्षा में निवत स्वान वर बाकर देठ बया। यह ब्रा विराहियों की भी प्रतीया थी, बिन्हें रात को करते हान रहकर कावनी

.,

"महत्व पर बादर म'ता बदर्श है" weiten ?" ertat fe und grat afffer mirt ff fo े तेन सबन बर दारा ! करा कान संशीतह बस करी हुना !"

"लब सूब खुबा, मार्गा से शाना नवर्गा । लगी बारे में बर्गर

\*\*\* \* (1 £ 1"

सवाय सु के विवस्तान के लेकर लाते में सवार होने एक बराबा है कोर्ड बरन नहीं किया । यह सवाह है दे के बाबाई श्रेरे-विह मा रोधन की धार बहुना नवा बादा की बहात में नेशी मानियाँ में नारे बारने में बाद नहीं हुई। इस गमा के बहनी में बीच रहें है-Cincatagia & Mail 1

बोची दरबार्ट में गामन बाबने तब बात बोनो बाहरी हबारा भरता हुया नराभा नृत्या राज्या नहां साता प्रशास करता हुया नराभा नृत्या राज्या नहां हि सा स्वयं हि है

### 93

रावि का दूलरा बहुर कोत रहा बा, बढ नायथा बारा को सी में चारण कीटा। मोती दरकार काला मकान रण नगर कारेंद्रे साली नहीं चा, रणनियु बारा के सादेश के सनुवार करायों के सन्धीहता काले यहाँ की भीर रख दिला।

बहां जब बहु पहुंचा तो सम्बद्ध स्था नवा । बहां जब बहु पहुंचा तो सम्बद्ध साथ दो माधी-हरवार्वीहरू दुंडीताठ धीर जगतमिह मुर्रागही स्वरिध्य थे।

परिस्मिति हर नदम पर रागरे की मोर यह रही भी। कोई नर् 

न थी। थोड़ी देर तक हीनों कई प्रकार की सानाकूषी करते पहे। जाने समय दादा ने जो बानें सरामा को समझाई बी उनने सारे सावियों के सामने चुहुरा थी। जिनका सार यह था कि इस हमने जितनी भी जारने हुई हो है, पुलिस की नजरों से सपने को क्यांत ही कोशिश करो। यहां भी कोई सायो हो, उसे वहा बाए कि महर्प पनाव से बाहर हो जाए। साय ही दादा ने यह बेडावनी दो ही कि



"ग्ररे वार।" टुंदीलाट हुंतकर बोला, "पूरे गोवर गरीत प्रे

इतने निरात बाताधरण में भी इन सोवों के बहुर पर किनी ET 1" प्रकार की विकास विकास विकास नहीं दे रहे थे। जगननिह का की बार मजाक से "गोवर गगेश" वहुत्र छगती हुनी छहाई बाडी बी।

टुंडीमाट ने दोगों को हुगा दिया। बहुता गर्वा, श्वाम कर्रे मुस्तित नहीं यदि जरा हिम्मत बांचे तो। मन् १६०३ में से देवाई स्रावनी की पल्टन नम्बर २५ में कई ताल तक निपाही रहे पूरा है। इसलिए मुक्ते परती सच्छी तरह से धानी है। दूनरा पेतावर में तेडर खरहद सक के बहुन-ये इसाये से भी परिचित हैं। बारी रही दारि निशों की बात, यह तो माई, इसे बुछ समय के निष् त्यागकर हैं। मुख्लमानी हुलिया धनाना पड़ेया, शभी हम बिना किही सहरे हैं

"पर वाचा," सरामा ने एक मीर संवा प्रकट की, "मान निर्दा काबुल पहुंच सकेंगे।" कि इस तरह हम पुलिस की नजरों से अचकर रह सकेंगे, पर यह जी को सोच तेना पाहिए कि बायुक्त जाने के लिए तो हमें जमरीर को गा करना होगा, जहां की चत्या-चत्या जमीन संवेत्र हिपाहिकों है हैं

"सरे तुम विस्तान करो बेटा, इस बात भी ।" दुंडीलाट उर्व पड़ी होगी।" हंसी के रंग में बोला, "जमरोद की झोर जाने की हमें झाबत्यहर वहीं पड़ेगी। मैं तुन्हें एक ऐसे रास्ते से से लाऊंगा जी बिल्रूस सुरहा

"बह कौन-सा, चाचा ?" जगतसिह ने पूछा।

"पैशाबर कभी गए हो बबा ?" दुंडीलाट ने उत्तर देने के हरा पर जगतसिंह से प्रश्न किया।

"नहीं भाषा, मैंने तो वह इलाश देखा ही नहीं ग्रामी तक।" "तो सुनो।" वह बताने लगा, 'पेशावर घटर से पांच ग्रीत दूरी पर 'मतनी' नाम का एक गाव है, जो सरहदी इलाने से बोडी दूर है। श्रीर उस गांव में हमारा एक सहायक भी है, बाहे इतनी मू

से मैं परिचित नहीं हु।" "बीन, धावा ?" सरामा ने पूछा। "जस्का नाम है माई धन्ना न्हा हमारी पार्टी से बहि उत कोई सोबा काबाय कहीं, यह बारे को है में मुता है कि साहब बार बारोकाओं की पूरी गहाया करता है। यहने की जियने सोवों के खाहुद बार को, खरिकत्व बारी की सहाबार में। भी एक बार देवावट पहुंचने को देर हैं कि बाबुत मुझ बहुवे ही समसी। "

होतो ने प्रधाना-करी नहरी में हुंशेचाह को देना कीर जगकी हो हों में बिनाई। सर्वनाम्बान में चैनना हुण कि जितनी भी जन्दी हो

गढे देताबर के शिए कुथ कर दिया जाए।

रेण के गकर को विजना नहुत तमका क्या मा यहना है। बहु सहरे बागा था। चाहूँ दर होंगों के ही मुनलमानी बेस दना विका कर वर विस्ति के होंगा नहीं होगा। होता, नेना होर गीन कराई की के तोन साहियों में होट पोटकाओं वर निकामी करने हुए यूच रहे थे। सब मोगों की बसान वर स्टीटर्जी की ही क्यों की, हर समावार के पने स्त्री विस्ता में में दिसाई देश हैं थे।

रावनिविधी तक भी बाजा तो जैने-निवे करो, पर इनने खाने रेत से बाजा बान-मुमेरफ सुनीवत भी नते समानेवासी बान थी, पर शबर को समुदा नहीं दोड़ा का सकता या---रेत का न नहीं तानिका ही गई। नहीं तो देवत ही।

सराबाद स्टेमन पर जनर कर ये कीओं वाने पर सवार हुए, चीर समाजाद सेख-पनीय घटी की यावा के दरमान 'कहांगीर' तहशीन में बा पहुंचे। विशेष धाने नीयहार खानती नी सीमा घुट हो जाने से इन्होंने जगत के सान्त्र देश बनाना सुरू कर दिया।

भोग्रहरा से पेपावर तक या सारा इलाया छावनी बा रूप होने के बारण पणड़े जाने या दूर दाण लढ़राया, इतलिए बल्तिमों से दूर, बही सप्-मुख्यर की सवारी, बही पेदल बसते हुए चन्त में ये तीनों पेपावर

भी सीमा के भन्दर जा पहुचे।

२२ तारीप का चर्चा हुम वह काष्ट्रिया २६ तारीप को तैयाहर (कुमा चाहे पाने के कराव दे वीकों के घरमार कर दिया र र बादम करना घर्ची दार्क मान्य में नहीं या , देवाहर के चाहे। का पीछा दरनी सकती के ही रहा या कि उद्यानी स्वारवस्त्री करते के वरहे अने का नवता चा , वेत्रसा मुंद्र पुणा कि रात की है। सकती पहेंचा बाद । जहां करहें बाते युविनक्त माई पानाविह के ते केवत राम किया को बन्ता को इन्तर हाता ११ वाहे हे लिहान को की

सानु में नामकातान बाताह बराहते कर मीनी शुल है के हैं। बर्द सार सब ने मदा पर बन पर :

बही बहुन कही बन्दीका नेहान क्यों पर बाँड होती हैं बदारों त्यर भी बानों ता मोही बाने मोने बन बहु बाँड हो भी में बही बन बाहबा हुन्दी तथा नमाने का बहु बातहा ही देशनीहामान तीलें का राम और बन्दे मोने बा महाने पर बहुने की तरी बाला के मोन बिन भी को हो है के

ताने पा बब बे को हुए हम तीना ने सामह, बाम होर्टार इसार ने स्थापित हमें कि हम ने की बिह्न में हैं दिलाई से हमार ने ही क्यों तह मी एकी क्या का साम हिन्दे के लागे और जा में है या क्यान होता किया है को हमी हमा की हमार्थी है बहार के यह पानाई, प्रमार्थ के बाद कार्या हो को हमें हैं साम है का बूच का तमार्थ, प्रमार्थ के बाद कार्या हो पर हमें हैं साम है कार्य के सार्थ के मेरे की हो नहीं का प्रमार्थ की हमें हैं कार्यों का सुमान तमा तर है काराय नहीं हो हमें के हमें सार्थ का सुमान तमा तर है काराय नाह हमार्थ है। हमार्थ

तथी बीत बतांत पर से उन्हें सेर को तहार धेती साबार हैं। दो-"सीके हैं भी दोन्हों !" (बीत हो है सहे रही है) हैं के एके पुरानेशामी और सन्तेत्राथ भी की दिहारे नहीं थे। मार्ग के मंतिहरूत सब बार से साक दिलाई दें रहे से डो उस से कारायें। सपती महुवी सो नामित हाहोंनी सोर सीपी हिए होनी के हार बारी बहुत का के एको का गर्रे के ।

हरीबार-यो ब्रामी वे शेविजीवात के बच्ची बाह वे बीर्गबक्त बा-दोशी बर्गबरी वो शेविह वेजवर कार कोवे ही वदा कीर क्षण

है दूरारा "देशकार कर ।" 'देशकार 'दमा 'देशका' का शुरुषन है, दिस्सा कर्म पानी है हैना कर है प्रमाणीं की । बदान सीती है सामार है एक हमा बता का मीहे हैंना माहे क्यार क्यू ती कार्य को स्वता कर कर देशे । बता कर के हैं देशान क्यार कार देशे हैं हम् हमा हमें अगते कर है के हैं देशान क्यार कर कर देशे हैं हम् हमा हो आहे। बता देशा बद्दे कर्म मही कि वह है के राम क्या मी क्यारवार

कुरत में क्षेत्र ही दुरीकार में क्षत्र का बावर बहा कि बस में हरकर 'रोपव" (बक्की बार्च ) बावेदाओं के बाकी वर का रिची ।

बारी मेहरी रेजिन दारी बाने में बारी रोगक था पुगरा बचीन पर दिमाने हुए तीनों में बारी-मार्ग में करण में नीने कह पूरे पात में बंधा और दिन बजी महत्त्वी दासान है है होता है हुएता तात दिया, "पूत्र बुद्धा मा रापने "" (वहाँ में या पई हो)। बनार में हुरीसाह पूरी ताह निजेंब होनर कोमा, "वैवादर न राज्य।" (वैवादर से वा रहे हो)।

"वेरता वर्द ?" (वहां वा रहे हो ?)

"मतनए ता।" (मतनी बा रहे है।)

दूरीभार हे मुंह है 'अननए' दारु वा निवत्तना वा कि बताने' ने ऐने दोनों को बुरना यह दिया नानों बोधों को दिनीने सेंच नवाने हुए वकड़ निवा हो। युवक बटान-व्यो सभी तक वीडे कड़ा था, तैंची नार को बिहा का के के बाद आई पानर्जा है ही परिणा है है। जी जाए है की होंगा है। कि जो है को हिए है कि प्रति है कि जो है को है के हैं के है के हैं के है हैं के हैं क

धनातिह में ये गारी बारे तमधान के चरितिया बहु भी बहै बनाया कि बहु परान जो राहे क्या पहुंचा कर करा था गूनी सार्वतिय कोर का निराही बार बदि बहु में ये सोस धनातिह का नाम में तेही साधव बार्कि सोनी को ही मोभी का निधाना बनना पहुंगा।

भोजनारि कर गेरे ने बाद भाई प्रमानित में महान की उसी तत पर एक मुनिजन बनार तीन दिवा, जिनमें पहेंने हैं है जिला पूरे बाद मा बाजीन दिवा हुया था, और दीनारी में उसी ताद दीन बहे तिनये दिवाय हुया थे। जहां रहीने देशहर बाहकर बहुँ दिनों ही बाहर हुए हैं।

साम को बारतिक बातचीत का कम सारम्भ हमा। हुँहोनाट वे सपता निष्मय प्रवट कर दिया, यो बाई सम्मानिह के निए कोई गर्र बात म थी। वह पहुंति ही इस दरादे को समस्र चुका था।

्या राज्य का का वा अस्य कृषि भी बीद उत्तर में माई भागातिह ने यो तुछ नहा नह दत सोवों के निए साताजन सो या, पर तथा थे बात कर निस्तास्त्रमा सीवों बाद करवाना भीद नाजुन तक निभीशे पहुँचाना मानातिह के निए निहन नाम नहीं था, अवस्थित स्वति स्वताह नाम से तरे हुए नई उंट परको क्षेण करने केंद्रे कार्त के र करण वरक्षक दक बावके के अपने को क्षा-को कोरिताएक वैद्या है। कई भी करनी कोड के की कह ने हुवना को क्षत्र के नहीं नवारा बहुताव ना क

बर्गी कर्मार्टिश में समाप्त कि बाहुक वाने में किए वार्ग कीत के बात बाता शास्त्रक हैं, वह अहाई के बाहब बीता की पुराना में किए एक त्याब कार्यों में क्यांत निर्देशक की ताहु वहीं त्यांत त्याव कर बीत अवार्त हैं। हैं हिससे बुगल एवं वीवा बात बार के

nan in ume ube agus mis latt f.

कीय दश क्रिक के वर्षा कामानिष्ट के में दूसाम दिया पर पार्थ के प्रदेश दिया पर पार्थ के प्रदेश कर प्रदेश के प्रदेश कर प्रदेश कर

पान हम बनारिया । परमार (पान प्रदेश में प्रदूशनान ह हा प्रदूश का प्रयास की दीन हम हम प्रदेश की प्रदूशनान है हैं प्रदूश की परित्र का मुझे की प्रदेश हम के कि प्रदूश होंगे की भी प्रित्र कार्यों हम जी का पूर्ण पहुर्श्य हम के के क्षाप्त की भी प्रदी की प्रदेश का माने कि प्रदूशना हमा का और पह हमाजह की ही में प्रदी की प्रदेश का माने हमें पान हमें हमाजह की ही पर हमां की भी का का माने हमाज की माने हमाजह की दात करनी प्रदास की की का का मूर्ण की माने की माने की प्रदी हमाजह की हमाजह मूर्ण की हमाजह की हमाजह की माने की प्रदी हमाजह की हमाजह माने की हमाजह की हमाजह की माने हमाजह की हमाजह की हमाजह की हमाजह की हमाजह की हमाजह हमाजह हो।

भाई बुध थी हा- विश्वती मुख्यात क्यों व प्रश्नती पड़ी बाहुक ला एक बार होंचे क्या पहुंचना है।' हुदीचार में समया स्थालक

हिस्त को क्यानित को मुना हिला। बताय की प्रीत हुए एई किन्ते ही हिला है। इन व ब्रोप के मु दर क्या को प्रीत का क्यान है को क्यानित है। इन्हें मुद्दी हिला का अ कार पहुंचकर की के क्यान कर मुद्दी मुद्दी हिलाही होंगी जिला। की कारतारी के लिए उनके हिला करने के के

मनती में एक ही बबार ना, छोताना मुख्यारा, बरा है ना सरागर संगवाए जाते थे। पर गरू तीनों से मुत्रवारी हैंगा कुछ है, स्मितिए इनका बुद्धारे जाता बहित था। एक: भाई प्रमानित् की बढ

बार जन्होंने गुरदार आगा बाह्य भा र भना भार भनावत् । बार जन्होंने गुरदारे से मन्त्राह भर के गभी संगदार संगदा बिर्ट । समझारों भी संस्था संपन्न नहीं भी। सोर जिउने भी से बहु स तो 'कौत्री सनदार' जैंगे सरकारी या 'सायत मनद' घीर 'सावना समाचार' मादि गरकार वे समर्थक । मतकार गरकारी देश मर्द-गरवारी, पर इनके माथे से मधिक यन्ते गहर पार्टी के ही समावारी री भरे थे, जिन्हें गहरी रिच से सीतों ने पड़ना झारण्य विया।

समाचार एक से एक बड़कर निराशायनक ये-"१३ करदरी की जनाबार एक सं एक बहुत र निरातात्वत प्रमानित स्थानित है के सन्दर हो हु बन दिन निरातुर में गहर हुमा। जिसे बीनीत बही के सन्दर हो हु बन दिन गताः। भेरठ में रिसाता नम्बर १६ के जनादार नाहिर साने की महानुरी से ग्रदरियों के गुरुपंदाल किया गर्मन जिसके को वर्षों नहीं गिरपार करा दिया ' गुरुपंदाल किया गर्मन जिसके को वर्षों नहीं गिरपार करा दिया ' गुदुर पार्टी वा नेता महुँ निरह मीर ठाके से सायो साहीर के प्रनारकों बाजा मं नता भन्न नान कार कर साथ साहीर के प्रनारकों बाजार में शुनित हारा मारे पर्या महि से सतरनार ग्रांसि—निनमें नपुरांनिह धोर कार्यार्थंड क्रांडी भी प्रांसिक है—काबुत की घोर भाग गए। 'पुनित घोर हेना की सित्रयता से भगोड़ों का पीछा कर रही है ''कर्तरसिंह सराभा झीर टा॰ मधुरातिह की विरक्तारों के तिए दी-दो हबार का पुरस्कार रहा गया। " गर्दारयों के चालाक मेता भाई परमानन्द को भी निस्तार कर लिया गया, बीर उसकी रचित पुस्तक हिल्दी माफ इंदिया बन्द कर सी गई'''ग्रदरियों को पूरी तरह कुचतने के लिए 'इडिगा हैपी ऐवड' लाग्न कर दिया गया'''ग्रदरियों का एक सतरनाक नेता बन्ड राम का पुल आता हुमा पेतावर में पकड़ निया गया गातावर में प्रकार में प् पहार मान रहाना था जनन पुलिस के पास पारी के बहुतन में के आहे दिए। "पारिविद्यारी मोत्र को पण्डने के लिए, वित्रकों पिरस्तारी के तिए पहले हैं। याडे सात हजार का इनास पीपित किया जा चुना है। पजाब सरकार ने घीर पाच हुजार का इनाम नियत कर दिया

बड़ी चिनित्त गुड़ा में देशार का दुवाम ानवत कर दिया ''' बड़ी चिनित्त गुड़ा में ये तीनों एक-दूखरे के हाथ से महाबार छीन छीनकर पड़ते जा रहे वे भीर रङ्ग-पड़कर तिर चुन रहे थे। बुछ मन्य सबरें भी मीं—''एक हवार के सपमग ग्रहरिये पनहें

wx

या बुरु है: "कई प्रपत्ताची मुगरिश कर बुरे हैं: "बावियों को विरक्तार करवाने में गांचों के नाकरदार, जैनदार बारि पुनिय को स्तामायोग्य सहायता कर रहे हैं। "'यदर पार्टी के बस्तित्त्व को पूरी दाह से कर्ट कर दिया प्रमाण"।"

सभी समावार एक से एक बड़कर हृदय-विदासक थे। वहीं भी बुछ ऐसा इन्हें दिलाई न दिया जो करा-सा भी सामाजनक हो। छोनों से स किसी को भासा नहीं यो कि बेजल एक हो सप्ताह में इस सीमा

तक पार्टी पर बच्चपात हो जाएगा।

"सी, एक धौर पुगीवत ।" इतने में टुंडी नाट बोल वटा, "बची-सची धारा भी जाती रही।"

"'क्या है चाचा ?" सरामा ने उनसे पूछा, "क्या पड़ा है ? दूचर करना तो जगा।"

धसवार पर चुकने के परचात् ये तीनो बहुत ही ह्याय दिलाई दे रहे थे। कितनी हो देर तक वे एक-दूमरे की धीर ठावते रहे। मानो पुछ रहे हों—'धव चया किया जाए ?'

# ۹ų <sup>1</sup>

कहारे की सर्दी पड़ रही थी बर संगीठी से जल रहे ईयन ने कमरे की गर्व क्लिया हुआ या। आई बन्ताविह से बात करते हुए स्रायक रात बंदित चुनी थी। १६६ कि इस्तत के दनाय रन ठी रहेगा। पर रूग जाने के सिए भी तो अवगानित्तान में से गुडरन पहुता था। भीर सफगानित्तान में बदम रसने का जो नतीना ही सकता है, दसकी ने ससवारों से पड़ ही गुरू थी।

पात में गार्र घन्नाशिह ने यही बुहिमतापूर्व सम्मति दो कि वर्व तक पकड़ा-गक्ही का घोर कम नहीं है। जाता, तब तक उन्हें उनीके पान टहरना बाहिए। बाद में धतुकूत वानावरण देखकर यह उन्हें पाना

निरसान भीर बहा से हम बी भीर भेजने वा उपाय कर देगा। भाई धम्मासिह के प्यार भीर सहानुमूति-भरे व्यवहार ने छाउँ सबुद्द विचा। इस समय दुमसे सुबद्धा और बीई दवाब बगाही

रावता छ।।

रत एक स्वतन्त्र देव था, जित पर सदेशी काझान्य वा वीर्र दवार्ष नहीं था। साथ ही साला हरिदयाल के प्रयत्नों से स्त्री सोगों की वही दिनों भारतीय क्वंतिकारियों में दिन पैदा हुई थी। कड़-दस जाकर रहें हर प्रकार की मुख्या घोर सहावता वितने वी सावा थी।

कार जाने ना मुक्ता सबसे प्रिक्त नाराभा को वार्य माने जिनका इस सात में पत्रका विश्वात था कि कोने कानी पत्र पेंडा की बढ़ी एक्टेंग आएके। बादा कानी-काम उससे बढ़ा करते में कि बढ़ि गहर की योजना सफल नहीं माने की किर दे रहा की तहाजा के मारत की स्वत्यत करवाने का मोड़ा उसएंग उपर प्रावत हिस्सान स्वाप्त की स्वत्यत करवाने का मोड़ा उसएंग उपर प्रावत हिस्सान स्वाप्त की शासन के प्रावित में सहावता साल करने की वेपा में की हुए थे। बादान में प्रवित्यत मान करने की वेपा में भारती वा प्रावत्यारियों को सहावता के तिए उठस हो हो जो कोनी पहें के भीवर ही घरेंगों में पाना विस्तर जोत कर भारत से सामने के तिए मजहार होना करेंगा।

धवने मेत्सानों को गुरगुरे विस्तरों में निटाकर जब भाई पन्ना-मिह भपने शयनकरा में चला गया हो बाद में भी देर तक तीनो वार्त करते रहे। मीर इस बातानाप की समाध्ति धाधी रात से पहले न ही

सनी।

यहुत दिनो के परचात् माञ्च इन्हें इतनी सुरादाशक नीद मिली

शहर तथा नहीं होने पर भी प्रमाहण्या पर्व बादि पत्री शहरे को भारत्यका नहीं भी तीनों वार्तायां नावनाव दियों भी- पहेंचे प्रमादिह की, दिए त्याया की, भीत प्रमाद कार होतान की।

सार्व का होत्र पायहर कात्राथ हुआ। हुमैलाट और कार्गावह तोत्र हुन थे। यह नवाम बनाद वर बनाद बास्य नहां था। औत्री विको देखेंगी के बत्राय न तो प्रदर्श कांग्र कार्यों और ही विकेश नवास्त्र का अन्यतन्त्र का स्त्र कह बनाद करवाई हुए कार्य की होत्रारंग में मोत्र देखाना, दोवानी को स्त्रामानीट्या बीत्र विकेश कार्या

वरा भी द्रांत नामें के प्राप्त वर्ष कर नाम हो। तमा, द्रोप वशाई पर बची हुई चरी की धार देगारा हुया दरनाव कारण हो गड़ा। बारणाई बीच है होने व वारण द्राव तमानी है। तुरारा वशा हिंतादियों की नोमें व तरान तमा।

क्षेत्र-बार करमी पर एक घीर ताथी बारवाई थी, जिनवर इन सांत्रमें के बरवार वह में श्रमशान भीरेण चपना बारल सहसा धान बारों घोर संघट चौर किर करवारा सामक में, में उत्तर बना ह

धायन बहुन बहा का जियारे रिकारि कार में बाहुन और समार र टूर्न में हुए में, भीर धनार आज मुख्य को आहरी में अहर हुए बा। कहा है कि पार्च हो पहराने के में देश मार हुए अहर में कि हैंनि ने प्रकास भीती जगह पर शिवड पहा था। जब भी तेज हुता का भीता जाता, बाहुनों की मुनी ट्रिनियों से में बीतमानी बाहाज दीता होंगी थी।

त्रीय देवारी वर बोधी देर दन नामा मुख्य देवारी से एए-प्रार देवाना रहा। वेसे ही देवारी हुए वह बातारी के एक बोधा बुध के पान-बहुर निष्य की महिन्दनी पेतारी पह रही थी-बा परा पिट वहार के बीहरे देने के मानवा नामाप्त के बाधा के हैं हुए के बहु बुध के बातार वा चीह गुरू देवार का माने का हिन्द करणा के के हुए विशानकर को बेटा मेठा, बीद किए वह कर का मी मीर सामा पहार भी के बुध विशानकर का माने

केंद्रे-केंद्रेन जाने उसे क्या सुभी कि साना कारत उपने उदार-कर केरताही है एक सार खेंच दिया, बीहवा के भी के से उदकर यनार की शुक्र दहनी में जा बारका ।

बारवर्ग के बने वे यह सब उपने हाम रहताब हुए हो होते. में में मोटबुक निवामी और समान प्रेमाब समावद विवर्ध है. हो गया ह

दह है। मारे बनका मारेड टिट्ट रहा था, हाब हुन हो में हैं पैनिया बनकों मेरेबुन के बन्ती पर करावर बननी वा रहि हो। बिया में बनने हाथ बागक धानन बनका हनी में मुस्ति हैं में 'बर-पड़' काम हुया बनके बाम में बियन हाम रहा मार्डि बनने में हैं। से भीचे में निया, बर बने स्वान बान हा कि बहै पत

वह करर ने उनर धाया था।

माण पटा या इतने हुए यापन समय तन उतने नहर है पैतिस मिनाते नुबार दिया, और चिर उतनी मानें नावने हैं। भागात पर जा घटनी, जहां दो-एक तारे टिमटिया रहे थे। नेटी मोज में कालने के बाद यह पहने टिट्टे हुए हाथों को बतनों सेता समीच लगा-

योड़ी देर के बाद बहु बठ लाग हुया। उनने प्री रे की वे बग्बन ठठावर सह विद्या भीर प्रते कथे पर हालवर की दियों बग्बन परा। उत्तरा हवाल सा कि उसके स्वार्थ कर कर कर है जि

उतना स्वाल या कि उनमें साथी सभी ठक सरिट मर रहे हैं। पर ममरे में गहुंचकर उसने देखा, दुईलाट मीर जगतिहरू हैं। मारपाई पर साथ-साथ बंडे यातें कर रहे थे।

"तू नहीं गया या है?" दूँडीताट ने चंछ साते ही पूछा धीर दत्तसे पहले कि उत्तर में गराभा कुछ नहता, जगतसिंह ने उत्तर की पर पढ़े हुए नम्यत भी भीर देनकर मुस्कराकर पूछा, "इसे सोड़ी वें वेते गया था नथा?"

दुँडीसाट को भी सरामा के इस पागलपन का धामान हुमा, बी राधीं से कांप रहा था, पर सम्बल को छोडने के बजाय जियने करे <sup>दर</sup> रसा हुमा था।

दोनों का विचार था कि हंगी के उत्तर में सरामा भी भणे स्वमावानुसार नहले पर वहला मारेगा। पर सरामा इस समय बहुत यहरे विधाद की मूर्ति बना हुमा था। हसी के स्थान पर वह गम्भीरती में बोता, "वही को बादमी की दुवंतता है कि हर समय इसे जान बचाने की ही चिन्ता पढ़ी रहती है।"

"माई राष ही तो बहुता है सरवा," दुंशीमाट ने दाद थी, "यात्रा करनी काबुल और क्छ की, और हरना सही से ? यायद ठंड सहारते

का धम्यास-----) " "पर मैं पूछता हूं," सरामा ने उसे टोक दिया, "कि कादूस वा स्स जाहर हुम करेंगे क्या ?"

बात मुनकर दोनों हैरानी धीर गुरसे से इसकी झोर देखने सगे,

मानो सरामा ने उन्हें गासी दे दी हो।

"बरेंगे क्या ?" दुशीलाट ने तफरकर कहा, "यह तुम क्या बेतुकी बार्वे बर रहे हो, बर्कार ?"

"वेतुकी दानें नहीं चाचा !" शरामा की बादात में मानो धयुधों

को प्रादंता थी, "ठीक कह यहा हूं मैं।" ' ठोक वह रहे हो तुम ?" जगतसिंह ने और भी धरिक रोप से

वहा, "वहीं भाग हो नहीं पीवर भाषा नीचे से ? साफ-साफ बता इस समय तू होता में बील रहा है या वेहोकी में ? माखिर तू चाहता पवा 2 ?"

"मैं ?" सरामा ने भारपाई पर बैठते हुए बाकी रहती हुई बात भी बहु थी. "मैं बाहुता हूं कि दिन बढ़ते ही हम बापस प्रवाद की मोर घत दें।"

"वस ?" ट्रांशिट ने बप्पड़ मारने जैसे स्वर में बहा , "तुम हो। बेटा, बड़ी-बड़ी डीगें मारा करते ये ।"

'गस्से में न भाभो चाचा।" सरामा ने कोमल स्वर मे कहा.

"इतना कायर न हमको मुक्के।" ' जरा रोशनी भाने दो," सराभा ने अगतिमह से कहा, उसका

धरीर सामटेन के प्रकास में स्कावट डाल रहा था। जगकितंत्र सरवता हुमा बाई घोर की हो ग्या।

भौर फिर धपने लिखे हुए को जब सरामा ने पढकर नहीं, पीड़ित स्वर मे गाकर सुनाना मारंग किया हो दीनों उत्पर भवते चले भा रहे थे। सरामा गाए जा रहा था 🐫 ı

"मुरमें दाकम नहीं

दारी सांत दार सभी नेतृ कीहरा। हिमार्टिक सहित्यके हा तर सर्वे । क्योरिक रिट्ट से बी माना प्रार्थः। दिव्यक्ति स्वार्थः के बी स्वार्धाः स्वार्धा के स्वार्धः में हिम्द स्वरद्धाः। देर्द प्रारा करहान् तरिहे रूपके। स्वार्धः करहान् तरिहे स्वरं । स्वार्धः स्वार्धः से सिमार्थन्यः। द्वार्धः नत्तरिहा सी स्वर्धा सन्द्रम् । स्वार्धः नत्तरिहा सी स्वर्धा सन्द्रम् ।

विधानकारिया की धीन बादन् । भन्न धारो श्ला कांग्र मुद्द कर्या । बली पिट देगा दे की बाट अपने । बल भी पंजाब में मुगार भी विधा बादद पिरदी दीवा नेमा सीहिए। भीत गान पेटे लहुई साई गान ।

सभी गिर सेलां दे की व्याभा मजरे।" (साने शासियों गे विसुध होता बीरों का काम नहीं है। सर

मुभी इन या पड़ी है तो द्वान में बता गांभ ? जिन मोयों के हार मिनकर हमने देश पातार कराने का भीशा उठावा या वे हर जैसी है गत रहे हैं, थोर हम धीरतों को तहतु मुद्द शकर बने बार ! से बने, बतारर हम जे ते तोड़ कार्ने सीर मनने गांधियों की साजार करें हर्षे

हुन्दा बनकर मृत्यु से भावर सेने हैं।) समता था, कदिना ने दोनों खोताओं पर महरा प्रभाव डाता थी जिनका प्रभाज दें रही थी जनकी नियाता, जो कदिता के हमार्ज होने पर भी कायम रहां। "बा स्थासन है काया ?" टंडीलाट जो टकर-दकर धारते और

"बवा सवाल है बाबा ?" टूंडीलाट नो दूबर-दूबर धरनी धीर सावते पाकर सरामा ने जससे पूछा, "बुछ घन्छी सनी यह सुकबन्दी ?" जसर में टूडीलाट बुछ नहीं थोला । फिर जसने बनवर्डिह से <sup>प्राठ</sup>िका, "शिर जसने बनवर्डिह से <sup>प्राठ</sup>िका,"

किया, "बीर तुन बताघों भाई।" "भई नमाल की निवता है।" जगतिवह प्रस्तापूर्ण बन से इतना

ही बहुकर चुप हो गया। "मात्र करना भाई!" सराभा की बाबाज में बसंतोष था, "हैंवे हिंदी बहिन्यानेत्रत्व से दोवने के निए नहीं विकी है यह नुकारी, की निर्क साम्नारी में ही बेरर पेट कर कराया। "कोर दिए विकतिए विकी है <sup>37</sup> करणियह की कपह पर हुई।

मार बरंग्य-भरे रह के बीमा, ' हजारे दिन बहुमाने के लिए हैं" नराजा को यह बात की संख्यी नहीं नकी। बहु तक पड़ा,

न्द्रपता को यह बात की कन्द्री नहीं नकी। बहु तक्क रेडर, "बाबा, तुम यह बैंडी बहुकी-बहुकी कार्ने कर रहे ही हैं" "मैं बहुबी कार्ने नहीं करना करोगितह।" दुरीनाट में दूरे बीच में

न सहावारण महा करण कारायहा । हान्यार महा पास कर । कहा, न्यांक हो है हि हिमार से कुछ (च्यु-ना का क्या करण है। होज-ह्यात की हावश व होत हुए मु वैसे निका नरमा बारे नरमें कि हम कुम के गांव कार हैं — हम (क्यों सी तर हैं हा क्यांकर मार्थे हैं। होट हमारी हो मान न्यांगे होगी हमें, ही सक्योंकर

कराबर साथ है। द्वार दुनमा हो बान प्यान होगा हुन, दा प्रवास रही क्यों न बागम के देरे रहते।" "बाबर!" संदुबिन होन क स्वान पर और भी बोध में बाकर

'वादा!' अपूर्वित होन क स्वान पर और की बीच में संबंध र रुपाम बीना," तुमने मेरी बदिया का बनगव ही नहीं ममझा दायद । नहीं हो!-----

सावारायो हुई है बनाव बापस काने के निए ?" "मृत्ये में न सायो जाजा !" सरामा ने नम्म स्वर में कहा, "वहने मेरी नात मृत सो धारित से, उसके बाद तुम की कहाँसे मैं वही सान

म्या।" अगर्रावह विज्ञासापूर्व मुटा में दोशों की बोक-वर्षा मुद रहा था ६ "अच्छा।" दुवीमाट ने मुख्य को दशने हुए कहा, "कह को सुद्धे

भट्डा दुडासाट म नृत्य का दवात हुए कहा, "कह जा सुन्दे भट्टा है। पर परादा फिसाबिफी मत छोटता।" "बाका!" वह मानो बाद-विवाद के लिए डील-वटि से सेव्

होनर बोला, "बबिडा की ये पंकितन मैंने कियी कविनामेलन के बोलने को नहीं लिखी हैं। बल्फि करने होफ-विचार के बाद मैंने किसी भीत से पर दूरेवयर निसी है। दिर भी हूं तो सहया है। मैंद बरावा है कि सामें स बराधी मतने बानी परित्या भी विवास वही निममी भी नाम मूंह कहरूर, या बायू ने हरहा? बरावी। शो देन से बहुती के लिए बरायी मोताही, केद ना से प्राचीन करावा हुन्दि हुने प्रेडानिक प्रमुप्त ने मोदे। महावि शासभी निर्माणकर गावार बनता है। देवानिक प्रमुप्त ने मोदे। बहावी भागभी मानिताहर गावार बनता है। देवानिक प्रमुप्त ने मोदे। बन्निम पर पहुचने ने तियु वर्ष सार निराता और वर्ष बार कहात है। है। बची मादें। "याने बगानिह हो गानो पिन करते नहां, "हैं है। बची मादें।"

"हो, हो।" हुछ से ब ढंग से समनधिह ने उत्तर दिया, "बरडे व

पुम मगनी ज्ञानवर्षा ।"

सरामा ने देन ब्याय का बुरा नहीं माना, बेने हो बोनता है "देने मानने से हम इक्ताद नहीं कर सकते कि हमारा श्रीवन के गया है, विशेष रूपसे यह हह करवरी बाला से बहुत ही वृति हैं हुमना गया.....

"मरे यह तो हम सब जानते हैं।" हुंशीलाट ने भैमें सीवर हैं "हमेंमें दूने नहें कीननी बात कही है। बात महत्तव की कराँ "मतसब की बात बग हजी ही सबफ मी बाजा," बहुबीओं, इस समय तक एक हजार के सरामग्र हमारे साथी पकड़े वा हुँ

शौर बाकी जो सभी तक बाहर हैं, उन्हें भी जल्दी ही वे हरा<sup>जी है</sup>

पण इवादेंगे, मेरा मतलब सबेडों के देशी कुतों से हैं।" "ठीक है पुम्हारा क्याल।" जगतिहाँ बोला, "जर मह की!" बात है ? हममें से कीन महीं जानता कि सोडों के दुक्तीर हैं हरामयस्थी न करते तो कोई हमारा बाल देश न करता। पर छी

इलाज ही हमारे पास कीन-सा है ?" 'खनाज नहीं पतबे के कम में बाद्यमान से तो नहीं बाएना भारी रारामा बरावर बोरता चला जा रहा था, ''इसमे कोई सक नहीं परिश्वितियों की पेथीरगों ने हमारे चारी सीट सबेरा फैना रहा है

परिश्वितियों की रेपीश्यों ने हमारे बारे प्रोर प्रदेश होता रही। निसी घोर हे भी इस समय हमे रोजाने की कोई शिल्ल दिलाई ही है रही। पर इतका मतलब यह सो नहीं कि हम यहाँ वर हा धन्मासिह के पर मे महीनो डेरा जमाए मैंडे टर्स, कि कब स्थिति डी<sup>ड</sup>री ी बहु का बहुई दिखाई न देश दिखाँ है है हमार्ग विकास का हुए। बारू बहुए की विकास दिखाँ के हुए। मेरा महिला का मुख्य हुए। मेरा बहुई हैं मुख्य हुए की दी देश दारों है कि महिलाम हुए महु मुख्य हुए है। दीन महिलाम के महु हुए महिलाम हुए महु कर है। इस मित्रियान के महु हुए हैं में महिलाम की है कि म कि हुए हुए हैं। महिलाम हुए हैं। महिलाम हुए हैं कि हुए हुए हैं। महिलाम हुए हैं। महिलाम हुए हैं।

मूत्र कार्य किन्ने क्षेत्री करता," हरीमार प्रवण्य कीमा "कीर्र प्रत्यक में मान हो भी व्यक्ति कहीं भी क्षीत्रीय की मान की। मो नार्य के भी भागत करता है। जो कार्य है दिक्त के बुकारे किंग मानहांच नहीं बच्चा है। यह प्रत्य के पुत्र के बिकारे क्षात्री के बीत हों भी बच्चा करता है। बीत व्यक्ति कहा कर मूनकर इस मान करता हो बात्रा वा तो के दुकार है कि सहरे हाने करी

बाता है। है तो इन काइ बड़ी बहें — छरी बाली बीड बड़ी ब बहै. सक्तमा बाई बिसे वा म विके! बोला-बोला बाई बार को को को के का मा कि छवड़े केहरे वर मानी दबनने बची। बतार है द्वीताट वे कुछ बड़ने के निवाही दिसाए हैं। वे कि डमे रोको हुए बेंगे हैं। सरावा बहुता बचा, "टांगे कारिकारियों की भाषा में सिकों का वर्ष वा फीटे वर्ग कार्यों को 'बाब' कहा जाश था। इसी हालू बलुओं की ह विरोगीओं को 'कबूतर' भीट कारतुर्गी को 'खंडे' कहा जाते हो।

"सब नमजे में था गया है" हुई नाट बोन बड़ा, "वर्ध है की बात करते हो म. जो हाक्टर अनुसानित्र में तैवार किए के हैं कम बैक्टरी में बजात से ?"

"हो चाचा," गरामा मे गुरूद की, "मान कोई इरवा दीर पर उमारे काम चल परमा है। दशार दिवस्त हो हर की? कि की मामुश्लिस ने पता नहीं नहीं पर बह स्वार मार्गि बीर में हो दी दग गमव को नमुसानिह के कोर्ट में हुए दर्ग है कह दिना धोर चला गया। पर जिनहान हमारो हमस्सी के निर्दे हैं बाधों है "

जरताहित होकर दुबीलाट बोला, "किर तो भई, करने में मंत्रा मा जाएगा मीर मरने ना भी। मुक्ते बही हर या कि नहती कोरी वार्ते ही न नर रहा हो।"

सरामा ने बनाया, "यदि प्यादा धावरपकता पूर्ण हो बंदान भी कुछ स्थान हैं चाचा, जहां से जरा महने दानों में संपत्ती सकत है।"

दुशैलाट की तरह जगतिगह ने भी उत्साह प्रकट किया, <sup>वि</sup> हुके क्या परवाह है। साथ ही जितना हो सबेगा, सायद में भी हुँव

कुछ इस बाम में सुम्हारी सहायता करू।"

"तुम भी ?" राराभा ने भीर भी उत्साहित होरर पूछा, "तुन है नया नहीं पर पुछ रसकर झाए हो ?"

"ररकर तो कुछ नहीं साया, पर मुझे एक मित्र की सहायां है इक मिल जाने की उस्मीद है।" सरामासे भी स्थिक प्रमन्त हो दूंशीलाट जगतांत्रह से बहुने तर्ण मैंने तो समक्षा था कि तुम सिक्त ग्रेप सारत ही जानते हो, पर ही

हो......। जगतिबहु ने हसी बा उत्तर हती में देते हुए बहा, "नये सारने के स्वादा भोड़े दौड़ाना भी जानता है।"

"पता है हम सबको।" सराभा बोला, "तेईसवें रिसाने में नौन्हें

बर बुढे हो, तो वहीं पर कोई ठीर बनाया होना । क्यों ?"

"तुम्हारा क्यान ठीक है क्यार।" बरवानिह विस्तार से बताने ा, "बहां के रिसालदार के घारशी से निवता हो गई थी। घरदनियाँ हाय में बहुत कुछ होता है। उनते बाददा किया हुमा है कि यह भी दे धावस्थवता पहेगी वह विसादती नरन की बहुत-ती मुनियां और हे दे स्वेगा।"

"यह तो बड़े सीमान्य की बात है।" सरामा ने संदेह प्रकट क्या, ार बर्तमान परिस्विति में मियांमीर की छावनी में हमाछ प्रवेश रता क्षीत-सा बासान काम है माई।"

"मिर्नामीर जाने की बाबश्यकता ही न पढ़ेगी कर्तार।" "तो फिर कहां ?"

'हमे सरवोबा बाना होया—बरू नम्बर पांच में, बहा तेईमद रसाले का पाल-फाम है। वहीं मेरा वह बित्र रहता है, बूडिसह उदली।"

टुडीलाट बोता, "कुछ न कुछ दो काब क्स ही बाएगा इनसे । प्रामे को होगा देखा काएका ।"

'दिसी को बुछ पता है बया ? जगतिवह ने सरामा से पूछा, "कि डॉ॰ मथुरासिह इस समय हहां होता ?"

"भगर पता होता तो अपनोध ही किस बार्ड का या। मधवार में ही तो पढ़ा था कि वह स्त अला गया है।" सरामा ने कहा।

"पायद सभी तक वह पकदा नहीं गया श्रीण ।" दंशीलाट नै धनुषात्र भगाया ।

"वेशक," तरामा ने उत्तर दिया, "नहीं तो धत्तवारों में छप गया होता उसकी गिरफ्यारी के बारे में । गुपनाम झाइमी तो है नहीं । किर जबकि पुलिस ने पुरस्कार भी कोपित किया हुया है उसकी गिरपनारी के लिए।"

"सैर," टुडीलाट ने निर्मय के इस में कहा, "वहां जाकर उसका पता लगाने की कोश्चिम करेंगे । फिलहाल हमें कर्तार्रासह के प्रस्ताव पर ही बमल करना पाहिए, और जल्दी से जल्दी । हमारे लौटने तक मेरा विचार है कि परुद्रा-चक्दी का हगामा कुछ क्य ही गया होगा । सी तुम्हारा विचार है कर्तार, कि पहले

"याना को से दल बारों को हा" बीरों ने बालगारी है हैं 'देद कोद कोदी नामा दिवस करते हुए, बोली को दूरहर्ट हिंगा, "कान तो बाल बता हुए बालों, पूर बालों को हैं पुरुवात की नहीं हुई।" किर यहने नामा को बोरे केंग्रें, " करते में दि बारों के पात नाम समझ है बोर बारा स्थानती की 'पटें हैं, जिस देद को बार पटें हैं में

"रथुवीर," धगने नता साथ बरते हुए बहा, "हुमने दि" पूरमा या, धनका बहुत-मा आम सो दिता पूप ही दरा नर ह

िट भी सभी बहुत कुछ है पूछते के लिए।"

बीरी में बहुदे में बस रही सकती की बरा बादे करते हैं। "पूछिए किर।"

"हाथी के पर में नभी कार्यर बा बाता है रचूथीर शहरी बात तुब्के पूछनेवाथी यही है कि भगनी विजयों से तुर्देन मोह है ?!"

"बम ही" बीरी ने चून्हें में दो-तीन चूक मारने के परवाहै। "इतनी जी बस बात थी जिसका क्याना कर दिया है"

"यहा दानी छोटी बात मही बोरी !" तरामा के हरन पुरामिक्शीला, "यह बहुत बड़ी बात है, जो इस समय स्रामारी है पुरामिक्शीला, "यह बहुत बड़ी बात है, जो इस समय स्रामारी है

"पर सरामानी मुमते ही बयों पूछ रहे हैं भेवा?" भी पी ने हैं। या प्रमन किया, 'प्रमने-आपसे ही बयों नहीं हुए प्रसन बाहर मेते? यदि यह भारती जिल्ली का भीह तोड़ सकने की बील ए हैं हो बया इन्हें इतना अभियान हो गया है कि दूसरा की हमीं? महत्ता?"

"तुम की बीरी," बड़े माई ने छोटी बहित को सममाने हुए वर्र "सड़ाई पर जतारु हो गई हो ? जरा सान्ति से बात करों।"

"मैरा बहु मताब नहीं बा, पुत्रीर मिं पताम ने बीज करा । "मैरा बहु मताब नहीं बा, पुत्रीर मिं पताम ने बीज केंद्र बहु, "वैरे जैसी सहनी को कोन उपदेश देगा। किर है की श दुन्म भी नहीं, पुत्रारी ही उम्र का बा दो-तीन तास दुन्धी होऊगा। दिल्ला के मोह है मेरा कह बोद हो । अतस हैं।

"मच्छा। भाष भवना वह मतलब भी बता दें।" बीरी वेहेंगे

! वहा ।

र पहान वरा संभलकर थेठ गया। वायद इसलिए कि इस सङ्की बात करना जसने जितना प्रासान काम समन्य था, धव उसे बह तना प्रासान नहीं करा

"साथे बोई तारेह नहीं रचुबीर," यह गुड साध्यावर थीता, कि सपनी उस नी सारीजी ते तुम बहुत वयादा सामारी है, और यह ने तुम्हेंय नहीं में जिताना कुछ में महत्त वयादा सामारी है, और पूजांक स्तुमार यह भी सामारा पहेगा कि बड़ी में कही वरीसा में करण भी जुब करती है। मोतिगारी कर में में कही वरीसा में करण भी जुब करती है। मोतिगारी कम में मिला भी कुछ देशी-करियास तीने तारायक होते हैं। मोतिगारी कम में मिला में मोते बातीयात में तार्में हुआ है, यह भी उसी देशीन का एक भाग है। इस समाये में सामार प्रमुखी भी प्रवाद यह होते। पर बहा अगा तो बहु है कि नुमारी बहुता जा होता। भिरा होती। पर बहा अगा तो बहु है कि

"बवा मतलब ?" बीरी ने जिलासा के द्वन से पूछा, "जरा मुके

स्वस्ट करके बताइए।"

"मुरा न मानी ।" यह थोला, "मैं कोई गुप्त बात नहीं बहु रहा, यहिक तुन्हारे माई वी उपस्थिति में कह रहा हूं कि एक न्यान में दो उलवार नहीं समा सकती।"

"में कहती हूं," बीरी ने रीब और कुछ रोव के रंग में कहा, "मुभे पहीतवां समफ्र में नहीं माती ; हम गांव के लोग तो खरी-सीची बात करना जानते हैं। हो, धापका बना मतलब है—इस 'तलबार' सीर 'स्वान' वाली पहेंती से ?"

"बीरी !" पुरर्जन ने उससे गुन्से हे कहा, "तुन्हें करा सन्यता से बात करनी पादिए! गांववाती होने का यह सर्प नहीं किजो गृह में सार, बरने जामी। तुन्हें पता होना वाहिए कि इस समय तुम क्लिसे बात कर रही हो!"

"कोर्ड बांत नहीं मित्र 1" सराभा ने जससे बहा, "मैं कीर्ड बुरा तो नहीं मात्र रहा हूं इसकी वालों का। बिक लुक्क घा रहा है इसकी रमज्यविता कुक्त ।" चौर किस उसके बीरी से कहता सुक्ष किया, "पहेली हो सही, पर इसे सममता कठन नहीं है। मेरा मतलप यह है वार्त मंजूर है कि तुम अपने घर पर रहकर ही फिलहान वान जैरोक मास्टर दलीपसिंह कह रहा है। बया यह मंजूर हैं पुन्हें "बापका मतलब है पार्टी की सदस्या बनकर ?"

"नहीं, पिलहाल सहायक के रूप में।"

"स्वीइत-प्रस्वीइत का तो प्रश्न हो नहीं, बस्कि रहे

बहुत समय से इच्छा है सरामा औ, जिने धाप पूरा करेंगे।" "तो वह दूसरी बात भी मुन सी।"

"सुनाइए।"

"मेरा मतलय विवाह-शादी के भामले से है रधुवीर। मार ह साल-छ. महीने तक तुम्हारी बादी हो जाती है। मैं पूछता है हालत में तुम कौन-सा बदम उठायोगी । यस इशीरा उत्तर हुमी

बाबी है।" रूप वाला लोटा भालमारी में से उठाकर बुरहे वर रही बीरी हुंस पड़ी, "बस, इतनी सी बात के लिए ही इधर-उपर की । रहे थे ?"

"फिर वही बदतमीको ।" सुदर्शन ने फिर उसे हांटा, "मैं वही मदव-तहसीव से यात कर बीरी !"

"कोई जिल्ला न करी दोस्त," सरामा ने उसे टोक दिया, "ड माई होकर भी शायद इस लडकी की कीमल समक्र नहीं सके, विवेध एक बेगाना होते हुए समभ रहा है। सो जैसे भी इतराहित बोलने दो। इससे मेरी इज्जत में कोई फर्क नहीं पहला, न ही इतर् तहजीब में ।"

"भाप सो सराभा जी !" सुदर्शन हुंग पड़ा, "उल्टा इने गई रहे हैं, एक करेला, दूसरा नीम खढ़ा।" शोर किर उसने बहुन से कर्नी

शुरू किया, "इनकी बातें तुम्हें ऐसी-वैसी लगती हैं पर...." "ठहरिए भेषा," मानो बीरी पर मूछ भी प्रभाव नहीं वडा है "मुक्ते पहले एक बात इनसे पूछ लेने हो।" मौर उसने सराहा ही सम्बोधित किया, "मापको एक पुरानी घटना याद कराऊं, हराडी

भी। याद है वह पुरानी बात ?" "कौन-सी ?"

"वहीं जो धमरीका रहते हुए लाला हरिदयाल से बापने में

e) ." "याद मही था रहा, रघुबीर, वि तुम वीत-भी बात का जिथ कर रही हो ।"

"बटर बसदार में मैंने बायबी बन मुनाबात वा बदान पढ़ा बा. अब सामा की ने एक बार धारने मूछ इसी प्रवार के प्रदत विए थे,

बंगे कि बाब बाद मुमने बर रहे हैं।" "थो. याद था नया । लग्हारा मनलब उप मुनाबान मे है न, अब

कारों से क्रमी होते की इकता से बर मैं पहली बार माला जी के पान WOT MT 7"

"बी, उभी स्नावात का बिक कर वही हु। क्या साथ बना शक्ते है कि उस ममय उन्होंने कीन-मी बात विरोध क्य से पूछी थी बागसे ?"

"दायद यही विवाह-तादी के विषय में ।" "धीर धापने शायद उत्तर दिया था कि मेरी मगनी हो चकी है

चीर विकास भी जरद होते वाला है ?" "बेशक, मैंने यही उत्तर दिया था।"

"तो किर घरा भी वही दशर नमभित । भाषशी संवती पृद्धि 'बमराज' की महकी ने ही पूरी है - जैने घायने उस नमय सालाजी

को बहा था-तो भेरी यमराज के प्रतिनिध के साथ।" सराजा के बेहरे पर एक मीटी सी बमक वैदा हुई। वह बोला.

"मेरी मनेतर का नाम तो 'मोत' है, भीर तुम्हारे मनेतर का नाम ?" "मेरे मंपेतर का नाम 'यमदत'।"

"ती पिर वस मेरे पास मुख घोर पूछने ने लिए बाबी नहीं है, रपुबीर । मैंने से भी नुम्हारी परीक्षा ।" परीक्षा का काम समाप्त हो गया और इसके बाद सराभा ने बात

थीरी के धारे प्रकट कर दी, "जिसने लिए उसे बुलाया गया था।" "निन्हाल जाधीयी रघुवीर ?" घन्त में उसने बीरी से पछा !

"जाऊगी।" उसे चसर मिला। "TE 7"

''बोधिय तो जल्दी ही बर्स्स्सी ।" "'तत सहकी को - बारटर मधुरासिह की सहकी की-जानती हो, जिसे बास्टर के मंडार का पता है ?"

F 3 - 104

गुकान बराबर प्रमागाहरत बाली की भागार करते। या । यर बीरा बीर ही मुख्युम बनी रही ।

बाबाजी पूरे बालाई सीर बांत के बना रहे के, 'क बिट्टी की बीवत का सभी ताहै पता नहीं, जी मुद्र सर्वार म मिना है।"

"बनाइत् दिना जी ।" सुरर्धन में चानुबना दिवानाने हुए हैं "स्यान के मुना ।" के कोते, "तथ पूछी तो तुम्हण व बनाने के निग्र ही मैं में गब पापड़ बेन रहा है। इमडी बीनर व तुरदे सभी सर्गमा जब तुम बहुत बड़ी बागीर के मानिक बनेरे-मनमान बीर परो के तीर पर मनिस्त्रामिन दिवानी की दुन धाधीनता स्वीकार करनी पहेंगी।"

"रिम तरह बार्जी ?" मुदर्मन ने मुंह कश करके पूछा। "इम सरह," गुर्गी में मरत बने बाबाबी बना रहे थे, "हिंदीन महीनों तक हिंब धानर पंजाब में एक दरबार करने बाते हैं, वि बारे में खन्होंने सुद जल्मेल क्या बा। उस दरबार में केरन ह बादमी बुवाए जाएंगे जिल्होंने मही के बाम में बड-बड़कर बरी गरकार की सहायता की होती।"

"किससिए बुनाए जाएमें विवाजी ?" सुदर्शन ने चोर सांव है थीरी भी कोर तामते हुए जनते पूछा। श्रीरी इत समय बल्दी-बली भवने हाथों की लंगलियों को मरोड रही थी।

"इनाम बांटने के लिए बेटा ।" उन्होंने बताया, "बहां तक मेरी जानकारी की बात है, सामसपुर की बार में, साम ही जेहनम नरी के तटों पर लगभग सात हवार एकड़ कभीन भी मुख्येवादी की जा पी हैं। भीर यह जमीन उस दरबार में हिन भानर इनाम के रूप में बाटेंगे। मेरी इच्छा है यदि हमें कहीं घवने ही जिले में खमीन मिन जाए, तो बस चादी ही जाए । भगनी भोर से तो यही कोशिश कर रही हैं कि घर में ही नौ निधियां था जाएं। जिले के डिप्टी कमिश्नर है पूरी उम्मीव दिलवाई थी। मागे जो परमातमा को मजूर हो।"

कागजात को ठीक दम से छमेटने के बाद दे शीले, "टहरी, पहनै मैं इन्हें सम्हास भाऊं।" भौर उठकर वे सन्द्रक की भीर वते।

"हों में वह रहा था," बादस झाकर झपनी हटी हुई बाब्द-

न्द्र साम को पिर से कोने हैं पूर करूरि गुर्धिन का बताना युक्त किया 'पर बेबन कम्मीद पर ही हो मरोडा घरने नहीं बेहना चाहिए देता । यह सहनारों का पानी ने पानी का गा दिनाव होता है। जिन घोड़ यो नहरू तरा, नुष्क पर। वहीं हो हमने हैं जब माननोड़ घरने सुक्त बता निता का हफता है। दमीनित मेरी एमा है कि बाद भी मीडा हमने बेहना जावर एक बार दिन्ह दीन और है कि बाद भी मीडा

"टीक है पिताजी," मुदर्शन बोला, "फिर तो प्रापका बी॰ शी॰ से पितना बहुत जरूरी है।"

"पर मैं लोपता हूं," वे बोले, "बच्चा हो कि मिनते ने पहले बोर इस बोछ एजट सबी करवा हूं। दिवाजों के मुस्तकों में बाई इस नहीं के सदावर है, पर चण्डी चोर एक सींद्रत को बाही होती बाहिए कि बांचक ने बांचक काम करके दिकामा बाए। इसतिए केरी सब्दे हिंद मनुकार के बाराय माकर दो-तीन दौरे कर्क स्मीर उनके इस हो और बोर के सिम्हें।"

बाद हा बार साथ सम्मात । ें "समृत्वर माप विस्तिए जाएँने पिठाची ?" सुदर्धन ने जिजाहा-

कुछ बोले चैसे ही भंगुलियां मरीहे का रही

से अमृतसर जाना पड़ रहा है बेटा।" के ्रहते होने एक अतरनाक किस्स के

?" सुदर्शन ने बाहबर्य प्रकट करते हुए

बहा, "मुध्दे तो बाजरण पहाई में हो शिर मुचलाने की हुर्नहर

मिनती, राखदार वच पड़ ?"

"धरे माई," वृत्र की धातानता दूर कार्य दूर वे कों, प्राम्यों कैनेसा धादि देशों में को बतावी रहते थे, त्या मही उनके दिन्स क्या विद्युत के दारे मां को की ने ने न्या ते दूर है उसकी पर्यक्ष विद्युत्तान घरटाने। क्या विद्युत का विद्युत का परिवार करते हैं महाईके मोठे कर धननी मरदार की महाच्या करते, जन उसके मोर

"मण्डा विभागी !" सुरर्धन में भीर भी भारवर्ष प्रवट हैं। "मैंने तो उनने विषय में साम तक कभी कुछ नहीं सुना।"

"बोई सात की बात है बेटा?" बाताओं क्रियारपूर्व कराने सं "बब से पुढ पृष्ठ हुए। है, तभी से वे सोप भीतरहार भीतरहार का को सिषदी बनाने में मने हुए हैं। वेरे दल नमय कनदी कुर सप्न हो कुरे हैं—सरकार नकते पक्षत्रहरू धन्दर करती जा रही हैं।

"गर एक राजभवत जाति के नाते शिसों का भी तो कर्तम हैं। सरकार के लिए धपनी बफादारी और नमकहलाली का बहु-बहुक प्रमाण वें । तूने पूछा है कि क्सिसिए मुक्ते धम्सवर जाना है । बात व है बेटा, कि समुतरार में इसी सप्ताह सिक्तपथ के नेताओं की एक की बड़ी रूमा होने वाली है, धौर होती भी भी मनात तस्त पर, विद्रां बाग्रियों के विरुद्ध पूरी सिश कीम की भीर से एक गुरमता पास किन आएगा। यह तो मुक्ते पता हो है कि छिल कौम ने यद में भवती बर्ड दारी का प्रमाण हर पहलू से बढ़-चढ़कर दिया है। सिख कीम की इं यात का धभिमान है कि अब भी धंत्रेजी सिहातन पर कोई मुक्तित का पड़ी, इसने पूरी सहायता नी। १८५७ के गदर में भी तो सिखीं ने कोई कम बहादुरी का परिषय नहीं दिया था, विसके सिसंदिते में हमारी कदरदान सरकार ने सिलों को प्रपत्नी कृपा से मातामात कर विया । पुलकिया रियासर्ते उनकी ही कृपा का फल हैं । उसी तरह धव मी जिन शीयों ने दोनों पक्षों में, युद्ध जीतने और बाग्निमों को कुवतने में, सरकार की बढ़-चढ़कर सहायता की, निश्चित राप से उनकी सार्व पूरलों सक विसी को कमाने की भावस्थवता नहीं रहेगी।"

"आपने को विताजी, बड़े काम की बातें बताई है।" सुदर्शन ने मरपूर

बानाजी ने बड़ी हचरत के रग वे नहां, "कितना सच्छा होता, यांच कित्रसत का एक दांव घोर नम नाता। किर तो हमारे नीमाम्ब के एक नहीं, दो नहीं, बारों दगवाजे सुन बाते।"

"बहु कीन रिवासी ?"
बहु कीन रिवासी ?"
हर देंग के स्वासी का स्वासी वा चारका के लिए बंदा हर दूर करने का बात है। जाना कि वारकार की नवारों में प्रमान नहां मुंच है। यर रहने मुंच है। यर रहने मुंच है। यर रहने मुंच है। यर रहने मुंच है। यह उस नविंदि है। वह के कि कि मुंच के कि मुंच के कि वार के तर है। यह अपने माने में माने कि मुंच कि वार के नविंदी माने कि प्रमान कि माने में माने कि माने कि

हो, किर तो ने निर्माण और व्यवस्त निर्देश प्राप्त है सारी। मुद्दे व्यवस्त पत्त मुद्दे मुद्दा, तुम में है। वर्णामें के स्थितियत सरसार के इन्दर्दे तीन साहियों को एक हो एक में निरक्तार करना दिया है। तो त्याहार से साई और क्यार क्या करवार है। एक निरक्तार सुत्त की सुत्त में सुत्त स्वादार से साई और क्यार क्या क्यार के लिए अटल्ड ह्यून भी सूनि सोर कई हुआर मक्यों साम की चोषणा को यह का कुछ होते हैं। किन्ना साम होता हो हम में साम की चोषणा को यह कि हा किन्ना सम्याही होता साई हम भी इस वोर कुछ हाथ को क्या कि तहती ।' सुरक्ष को सा, ''यह कीन-या करिल काम है रिकारी। मुद्दे यह बुरक्ष मोही का कि हो होए एक को स्था कुछ है। सुवार वर्जन यह बुरक्ष साई की हो होए एक को स्था कुछ है। सुवार वर्जन

बागी निरपनार न करवा दूं तो भेरा नाप बदस दीजिएगा।"
"बीठ रही बेटा।" बाबानी ने स्त्रेह धीर उस्साहपूर्व हाय खबकी बीठ पर केरते हुए नहां, "किट दो हमारी खात पुर्व केर वाएंगी।"
"पर सुरहारा माहीर बाता कैंते समस्य हो सकता है बेटा, जब

पर तुन्हारा भाहार बावा कर्स सम्मद हा सकता हू बटा, अब तक तुन्हारी परीजा नहीं हो बाती ?"

"यह ठो ब्राखन केम है जिलानी।" नह बोला, "यदि ब्राएकी मर्बी हो तो में परीक्षा का खंडर एक ही दिन में सरगोपे के बजाव साहोर करवा थे।"

"धगर यह हा जान किर तो बारा ही जान हरें।" "त) यात हुया ही समग्रे । यात्र ही सरमीचे बना बता एखामितर बानी पहचात बामा है। वह मेरी बात बनी?

गुर्धान ने तो सेटर बदलवाने की बेंगे ही दीन मारी की। में यह वरीशा देने का इरादा ही छोत्र चुका का जिम हका है। गरामा ना सब्देश निला। मेंटर दननी सन्दी बरतदाना हैने वहीं या। यर उमे तो बाबाजी की चड़मा देना या। बाबारी की जाने, सेंटर बदलबाने में बदा निषम होते हैं।

# 29

बाबाजी जब बावन साए, तो बड़े सुग्र सोर उत्लाह ने परितृष्टे सदा की भाति भपनी यात्रा का वर्णन उन्होंने बीरी की पूरे विन्हारें सुनाया । मुदर्शन को साहीर के रिस्तेदारों के पाछ छोड़ने के दिस्तर उन्होंने बताया कि वहां लड़का बढ़े भाराम से हैं। उसे एक मनग्री एकान्त व मरा मिल गया है इत्यादि। साथ ही उन्होंने बनाया कि सुदर्व की राय है कि परीक्षा दे चुकते के बाद भी वह कुछ देर तक साहोर में हैं। रहेगा, ताकि वह बाणियों को गिरएतार करवाने का काम बालानी है प्रराकर सके।"

भीर इसके बाद यावाजी ने अपनी उस सफलता का वर्णन शुरू दिनी, जिसके लिए उन्हें समृतसर की सात्रा करनी पडी थी। वे बता रहे के "बहा पर धरास्य लोग ये थीरी । प्रकाल तस्त के पात तो सूई एंडवे की जगह नहीं थी, जब सर सुन्दरसिंह मजीटिया बीर बन्य कई बहें नहें इतिस रईसों ने बागियों के बारे में भाषण करना गुरू किया। दिर

बहुमत से जबघोषों की गुंज में गुष्मता पास हुमा ।" "कोन-सा गुरुमता पिताओं ?" बीरी ने धपने मावावेश को निय-

लित रसने का पूरा प्रयत्न करते हुए पूछा।

"तुम सो बिल्कुस पमली हो।" बाबाजी मे प्यार-मरे शेष में रहना पुरू किया, 'इस दिन बताया नहीं था कि मैं दिस सहैं। में कमृतसर जा रहा हूं ? गुरुमते के सन्द से बे— 'विदेशों से बाए हुए उन

ह्मार धीर प्रवेश करवार के विच्छ बदावत कर रखी है। विक एंक ही बेडाबनी दी बाठी है कि कोई भी बुद का दिल यन राजडोहियाँ ने बोई सम्बन्ध न १थे। बहिट बहां तक भी हो तके वाहें विरक्तार करशाहर माने समाट के प्रति सच्ची राजनवित का कर्तमा पूछ करे।"

शेरी सुनती का रही यो धौर पुन-मुक्टर कुचमी हुई सिवधी की तरह दिव भी रही थी। पर अपर-अगर से बहु बपने विता की बाउँ सुनती ऐमी सब रही थी मानो बहुत दहरी दिमचन्त्री हे सुन रही हो। बीच-बीच में बहु प्रयक्त के भी सक्द बोमती का रही दी ।

यमदसर से भीटने के बाद बाबाबी की व्यस्तता दिए से प्रारम्भ हो वर्ड । बार्ड बिड्मी ने स्वायी रूप से उनके बर रहना स्वोदार कर लिया था। बेचारी निराधिता थी। मतीने के दरवाने पर बैठी गुमय बाट रही थी। बाबाबी ने बीरी को मादेश दे रखा था कि वह माई की दोनों रामय शाना शिमाया करे, जिसके बरने में बह घर की रखवासी

क्या करेगी। काम कर सकते के योग्य हो बेकारी वी नहीं। कीरी के केवम विचारों में ही कई परिवंतन नहीं आए वे बस्कि उसकी म्यस्तता ने भी कुछ नया मोड़ से लिया या। पहले की तरह प्रव यह बेबल पुस्तकों बाही कीहा नहीं बनी रहती थी, बस्कि इसके साब-साब एक और चीज भी उसके मन को बहुतानेवाली बनदी जा रही थी और

यह वा बही कामा चमकदार खिमीना, जो न केवल उसके लिए मन-भाती बस्तु थी, बल्कि बहु उसे विसीके प्रेम की नियानी भी बान चही थी। जब कमी भी उसे भवनर निसता, दरबाडा बंद करके और मौतर की चिटकिनी सगाकर उसे सेकर बंधी रहती। कभी ससे सस्टा-पस्टाकर देसती, कभी सोसकर, कभी बन्द करके । बार-बार उसके मैगबीन में कारतस दालती धीर दार-वार निकासती।

कई बार उसका मन होता कि उसे बमाकर देखा आए। किसी संबेरी रात में वंते से कर अरद मोटे पर चन्नी माति महिना है। विद्वार कर वार्ट कर चन्नी कर वार्ट कर चन्नी महिना है। विद्वार कर वि कि घर को धान मगावर बला थूं, कभी दिन बाहुता है..."
"बा-बाहु" बादानी ने बोन कोगने में रोका, "मैन दन दोन को समार बिना है। बान तो कुछ भी नहीं है बोन। बिना दर्धार के दशाव पढ़ जाता है। दगका दशान कोई मुदिला कही। दीन दिन भारत कमात हुए दगका दशान कोई मुदिला कही। दीन दिन भारत कमात, एक्सम दशान हो आधोगी। जायो, धन्यर जाकर

धाराम करो ।" धौर बीरी धम्दर जाकर गेट गई।

# तीसरा भाग

#### વર

है साथ की बरहार को धोर थे एक धोराम-तम प्रस्तावित करते सार दान, विकास देश कर सार का धोर के एक है सात है ने पूर्व का यो धोर दिवर्स दियेच कर थे उस दिरोही — क्योगित हा साम-ना करने दिया तथा जा, बो मध्ये धारिक सारोमित कि एनु मिल उस्ता द्वार सार साथ और दिनकी निकास के निकास के ते पुरात है पुरादार एका आहा था देश बांजियन के भीरामान के देश दिस्ताव और तमायुक्त सारों में दिलामार के साम के स्वास्ता की स्वास्त्र की देशों क्या पात, जिसने उस्तेसकों भीरामी थे पाता की सार करने की मा मार्थी की निकास कथा। इस सामुर्गित के साम निकास प्राचित के स्वास की साम क्या की साम क

जन नोतों में सरियन मोच नानियु मेर उस में में पहेंद्र पिट्टू हो। यह मानियु में मानियु में यह मानियु में मानियु मानियु में मानियु मे

माहोर मेंद्रम जेम ने रमधंच बर मत बुध समय से एक फीनेर-बातीं नाटक सेमा मा रहा या इसमी विज्ञान के मीडिमारी में विरक्ष मुक्तमें वी कार्रवाही हो रही थी। इस मुक्तमें की माहीर कीविटिसी नेसे का माझ दिया स्था।

मुनदमे को मुनवाई तीत कियेल स्वायाधीशों का एए बोर्ड कर रहा था कोरों में से वो व्यवक थे, बीर एक मारतीय । व्यवें के साम ये —एक एक दरिवन धीर टीक यो लेतिया । बीर टीम या पढित विज्ञानस्थात माहीर का एट क्षेत्र महत्त्वारी करीन के ए में दोलोंक के एक प्रशिक्ष विरिट्ट कि तीन को मुलावा गया था।

स देशक के एक आध्य बारदार पाट मन का मुसामा गया करा इस मुक्ति का सारफा से हिल केता में दूर स्त्रीत, इंट्रिय की हुआ। सुक्ति की मूची यर वह सरसाधियों के नाम संक्रित के, जिनमें से पुलिस ६४ की निरामात कर चुकी थी, सीर दीय १७ करार कीरित कर छिए गए थे

नार्वस्त्री नो गर्वसामारण की हिस्ट के धोसल रखने के लिए जनता में वि दिसीनों भी मुददान मुन्ते को समुत्रात नहीं भी । दर्द तक कि सामायारणों के सम्मादराता भी, विजय पितिस एम्स मिनि-टरी नवर्ट मादि सरकारी प्रसारों के, प्रस्त नहीं या सहते थे। चार्वसाहि के विकस्त के पीता हुई रिजेट की-बन्ती सकता के में वि आती थी, यर पासे सब हुए सम्मार्थी का होता। वेचल मही मही, महिल सम्मित्रकों के साम पेती के समय नहीं करार का मंदिणांकि स्तिर प्रमाननक स्वस्त्रार भी दिया या रहा था।

सह बात नहें दुख बाती थी कि जरता है। धोर से एवं देशभारी है। कीई सहस्वया सा सहस्य नहीं दिया जाता था। उनके दण ती दें हैं। विस्तान पूर्व के धुनुपार जैयर के हिना पढ़ें सहरू नहीं जा तर के हैं। पर सामध्ये भी बात वहीं कि हतने बेट्टे अधिकारों के होई हुए भी मुक्ताने ही अमेरी की सतर है भी तह पहुंच आही भी हैं। है हुए भी मुक्ताने ही अमेरी की सतर है भी तह पहुंच आही भी हैं। है के उनके सत्ता-प्राचीभागों को मिला जोते हैं, जिलाहे विषय से नहीं हुए नहीं माना मार्थ कि में हैं। हम जाते हैं, जिलाहे विषय से नहीं हुए नहीं हरामानी को मुर्दिकाए बाध्य होती है। यह माहीर कोर्दारीकी केस से हतानाहिको को बीहरो के की बारत यह अहिदान में रहना यह रहा था। देव दे नहीं होरेन्द्रे बर्चवारियों को बड़ा कारेय का कि रियों क्षांबद्दान के भी बात व वरें बीर पूरी बसाई के देश कार्र । बहाई पर हरू हान था कि क्या बाए हुए केंद्रिकों की हरडू दन कक्षी समय-समय बाह्यरही में रखा बाता, बहा एव-पूत्ररे के बिलने की सर्वका वही

र तें को नहीं बॉल्ड हरावाती की होती है। स्वीवय केरी की बरेगा

e fø वेष की दिन देश्य में वाहिशांग्यों को ग्या हुया का प्रवर्धी इस बाह बोर्टा की -- लीत हवर कीर बीच नीचे । इबके के ही बोहरी नम्बर १३ वे बर्तागीयह बराबा कीर वनके हो बाबियों ही

ः वार्च को दावित किया दया को सरदावा के प्रवस्तर लाए दए है। बाहे बाह के बराधा कभी कांट्यांत्यों वे बांटा वा, वर बन्दे बमाबारों की रक्षती बाद केंड बुकी की कि हर-हर ठक शीव क्रवीची बार्ते बरते । मोय वर्त 'बोलारी महचा' बहुने बने है । यहकी प्रतिक्र देवन बाहर ही नहीं. बहिन्द केल में भी भी । बडी बारन भा दि जिल दिन उदे बहु नावा बदा, हरएक की बवान वर उवका नाथ नुवाई ter er . with bie b eit uner er ner et i grow an ber et ZWE WIL

वेतर धीर बेटी का रिस्ता प्रायः मेहिये बीर मेवन बाबा बयप्रा नाता है; पर कराना के बाचरण में कर्मचारियों में एक बारचर्वत्रमध बाह देवी कि बह बेलर और नपरिचरेण्डंग्ट को भी 'धो' बहकर सामी. पित करता का दावीग्डनाव साम्याल के प्रमुगार बाई परमानग्द का बस निध

सन्त्रदाय के एक राहीद के बदा है सम्बन्धित था।

धार्ट वरवानंद का काम बांव करियाला, रहतील वित्र दादनका, जिता वेहलम में हुमा था। चन्होंने प्रारम्भिक थिया 'बरवास' गांव

के एक स्तुत्र में प्राप्त की बीर उसके परवात कहरता में एम॰ ए॰ पास करके माहीर के डी • ए • बी • कालेब में प्रोकेनर नम गए । किर ११०५ में प्रशास करे का । 171

समय इच्छा हो। फिर मैं क्यों न कई महीने पहने ही ई<sup>न्छ</sup> सेने योग्य हो जारू ?"

मुक्ट्में की कार्यवाही चोर-दोर से बल रही थी। हुरी के को छोड़कर प्रायः निश्व ही पेशी हुमा करती । ..... से नये से नये और बनोक्षे महाह चर्यास्थत होते, प्रकार की गड़बड़ी पदा हो जाया करती। कभी-कभी हो ... में और भी तससी बाजाती जब किसी गवाह की गवाही ममियुनत द्वारा धुनीती दी जाती भीर जज गवाहों ना पड · Parent · vivi प्रारम्भ कर देते।

नोक-मोंक वा त्रम बायः चलता ही रहता।

गवाहों में मधिकतर पुलिस बालों, या गांवों से माए गए वेन्ह नावर माध्ययत पुत्रत वाली, या तावा ध माध्ययत माध्ययती की बहु संस्था हुमा करती, जिन्हें इस देश के बरी पुरस्कार मिलने की माशा दिलाई गई होती थी। उनमें वई दोई सुवरों की सक्त-पुरस से भी मादिशवत हुमा करते—केवल सिवकारियों की पढ़ाई गई पड़ी के सामार पर ही गवाही है?! आते से ।

जजों की धविकार-भावना सीमा के बाहर थी। निवसानुवार व के लिए यह मायश्यक होता है कि मिस्युक्त का बयान जैसे वा है फाइल में वर्ज कर लिया जाए। पर यहां यह हाल वा कि वो भाव है विकर लगता व दर्ब कर लेते । धेप सभी कुछ छोड़ देते । यदि ह सम्बन्ध में कोई मिश्रयुक्त प्रथवा उनका वकील प्रापति करता है। उत्तर देते—"इहिया सेपटी ऐनट के झनुसार हमें ऐसा करने ना झी कार है ।"

जिस दिन सरामा की वेशी होती उस दिन मदानत में सबसे प्री हुंगामा दिखाई देता । जैसे ही उसे भदालत के कमरे में उपस्थित हिंद जाता कि वह सबकी भारतों का केन्द्र बना जाता । यह हथहर्रियों जुकड़े हुए दोनों हाथों को सदतातों की तरह बजाता हुआ, और हराई की माति मूमता हुमा कुछ न कुछ गाता हमा भीतर प्रवेश करता उसके गाए हुए गीत बाद में इतने लोकश्रिय हो गए कि सीग उन्हें बती बाजारों में मूनगुनाते हुए सुनाई देते। विशेषतया उसकी ये पश्चित हो बहुत ही लोकप्रिय हो गई थीं :

बच्चा वर्ष हिन्सी बारी द्रवसात हुं स चूर्माण्डरित करते होता हुए होता, दोह बड़ी दरहे दूसती बारी दात हुं ॥ दर्श का दूसक के हुई दरहा है तो, दर्श के दूसके हुई दरहा है तो, भी रहर है देस बिची दिस्टी दरशर हुं॥ बीर वर्ष से हुई की है दरहुत दीवरा बायन बराइ ही बेरी से वर्ष है हुई होंगे हुई की है। वस प्रीति है वर्ष

त्यां दशने मधने । यद्यपि दुधने वर्ड कांत्रचान्दि ने त्री व्ययो-व्ययो पेदी है वड्डे इस्मेदार बचान (एए वे, पर वो हमचन करावा पी पेदियों ने सबस

न्दर १४व थर राह दाता हरार यान

दा होती वह बहिलोय दी।

नवजब छ बहीने इन युवर्षे वी वार्ववाही होती रही, जिनमें प्रकारी वस वे बुन ४०४ गवाह हानुव विष् वष् । जिनमें से स्रवेति सराहा वे विक्रत तीस स्वयंत्र स्वयंत्र

हरकार पक्ष व हुन ४०४ तवाह हान्यून रेवर्ड पर्यावनम से सबस बरावा के विवेद तीम पवाह नूमते । साम से सह नाटक — सो पिस्नों से सहीतों से माहीर वी सेम के रयमक पर सेना वा रहा बा—१३ नितम्बर, १९१६ की नवाले

हुता । देने तो सभी धांत्रपुरतों को कानून वो धनेव चारायों के बनुवार वजा नुगार्व गई, परन्तु कर्तारानिह तराजा पर वसके धांवक बाराई नगार्व गई, को रण प्रचार को —कारा—१२१, १२२, १२४, १९४, १९६९ १९० १९८, ९३१ और १९२०

यमिनुकों को —विदेश्वत मृत्यू-स्व बाने प्रमित्वा को — जिन कुरितन कर ने कांनी नामने के बित् वेदान करवार के बहुने के ही नित्या कर गया था हात्या उदाहरण धावद ही नहीं निता हो। इस मुन्दूरों के योगे सक—को इंताब नरकार की करनुमनी बने हुए से —गरकारी निर्मत के बिरु कु हुक कर नवले के है दिस ग्रहा की

कृतिकारियों के किरद महते समिक दिम व्यक्ति में क्रवन क्या रता या यह वा पंताय ना महतेर 'शाहरम मो ब्रह्मोहर', तीन तीपंकों से स्राधिक नहीं पड़ सको : ""गृहर पार्टी के स्रीन्यूकों को १६ सितान्यर को सखा सुना दी गई। बोबोल को मृत्यून्डंड, "खेव को कालापान स्वाधियों के संख्वी नेता कर्जारसिंह सरामा को भी मृत्युवंड""

मीड़ को वेलते हुए जब बीरी बाहर निवली तो उनकी टार्गे सड़-सड़ा रही की । प्रमाद बानी वाली उसके हाव से गिरते गिरते बची।

पर पहुंचने हो वह घडाम से साट पर गिर पढी। सावाजी जस तक जगकर स्नान करने की तैयारी में संगे हुए में कि भीतर भाती हुई बीरी पर उनकी दुष्टि पडी। इस प्रकार सड़खड़ाते

धीरी को उन्होंने इनसे पहले कभी नहीं देवा था। "क्या बात है केटी?" साट पर कैटते हुए उन्होंने पूछा। "कुछ नहीं पितानी" औक हूं।" बीरी ने सालें सनते हुए सौर पत्र के ते सपत करते हुए कहा, "ऐसे ही करा तिर ने चककर सा गया

बहु भिता को पाने स्वस्य होने का विश्वास दिशासा चाहुं गर देखने बाता कोई बातामा बातक हो नहीं या यो उसकी पा जाता, जबति कीरी के पेट्रेट गर बाताओं को एमर्च चीता पा रहा या। इससे पहले भी आयः बाबाओं बीरी के विशिव्ह हो जाते हैं, जब कभी ने उसे प्रचीवन्ती स्थिति हैं।

बीरी पर घवस्य ही किसी दुष्ट भारमा की

वाल में बीरी हद दर्जें की ढरपीक ग्रीर दुवेल-हृदय लड़की है, जो रा-सी भी भयभीत करने वाली बात को सहन नहीं कर सकती। न्हें माद था कि सुदर्शन के यहां होते हुए भी जब किसी बाधियों इत्यादि ही बात किया करते तो बीरों के हाब-भाव में भवश्य ही परिवर्तन मा राता या। कई बार उन्होंने उपचार के लिए निश्चय किया था, पर हार्यक्रमों से उन्हें कभी प्रवकाश ही नहीं मिला। प्राज जब उन्होंने रीरी पर छाया के प्रकोप का सनुभव किया, तो सन्य सभी स्रोर से व्यान हटाकर वे 'जाप' करने में व्यक्त हो यए। जिस स्वान पर बैठ-कर उन्हें भीरी का तांत्रिक उपचार करना या, उन्होंने उस स्यान की मपने हाथों से लीपा। भाज संकांति का दिन इस काम के लिए ग्रुम या । पाठ-पूजा के लिए घूप, धगरवत्ती भीर घन्य घावश्यक वस्तर्ण वे बाजार से खरीद लाए। पर यह सब कछ घरा ही रह गया जब उन्हें शक से जेहलम के डी॰ सी॰ की धोर से एक घानध्यक पत्र घा पहुंचा। पत्र अंग्रेजी में था। शीरी ने पढ़कर सनामा। माई की निरन्तर सहा-यता के परिणामस्वरूप यदि प्रधिक नहीं तो इतनी-सी ग्रंप्रेजी की योग्यता उसने प्राप्त कर सी थी।

समें हैं जा मूर्त रेप मारी, स्वर्धी पुरस्तार के सम में बादी जाने ना ही-क्षेत्री के दिवार में उनके साम है मार्ग को मार्ग विभाग के दिवार ही- में कराते. पास तेना सावस्तक समस्य होगा पास हो ने सपने तत्र नांचा हो भी बीद प्रस्त कर स्वर्धने, यह सुनुस्त करते करते हैं है सम्पन्ता हूं। बहुते ही दे त्या देश साम के तिया हो- हो ने हैं सिकते सी सातें भी पासें हैं, सीर कहां सामक्ष्यी प्रस्ता हो जी, हि तस्त्र सी सातें भी पासें हैं है, सीर कहां सामक्ष्यी प्रस्ता हो जी, हि तस्त्र हो भी की ही हो हुए हुए जा सुन्ता जा। को स्वर्धन सिक्त हो स्वर्ध सुकत सी सी सी सामना यह के मा हस्ता गई।

की • सी • ने कावाजी को तुरन्त बुला मेजा या जिसका ग्रम सम-

वे वहीं भी न बाने का निश्चय कर जुड़े थे, परन्तु यह भी तो कठिन या कि आयायेशी जब स्वयं प्राकट दरवाड़े पर स्टक्ट हे, तो ने प्रवसर की को में वे प्रयाः निश्चित प्रैसले में बोड़ी-सी प्रयमा-बरशी करने के विवार है जहीं। यब तो नाही का स्वयं निकेस से बाता, धीर:संस्थी

थ । नकल संबाद

- Address

पाने कोई रिवेद बाद नहीं थी। 'जहर की नून' वी हुए का दूसनी बीतरां, दूर काशिता बीर कुछ तक के जो नूसांके ने हार्रें के। नूसांच ने बीर ते कार्य देन की केशनती दी नहीं की बहार का कोई भी बादन बार में न क्ले, कर बीरी वा बन करों न सारा दि नह पाने भे था के कुछ ताह है या नहां है, वा बादन के करिवाद बीर कुण ता किस के हैं।

सामे बाते करते एक सामो के बाते उत्तरने साराज विषा उसने सी बाता, जिल के सामो के बाते नाराज की त्यांत क्यांति की से बातक विकास की तो अपने साराज की त्यांत किया के करें हैं। कैयाने ने बाते के सामों के मात्र करते की सरक सामने करते हों। कैयाने ने बाते के सामें की सामे की साम का मात्र के सामा आजे सामो का सी सीट किया की अगर-मात्र करने नहीं मुख्ये सी सीना की सी करने किया की तो किया है।

प्रातःकान की हुम्मी रोगानी के कारण कमरे हैं सभी तक पूरे वीग्य प्रकास नहीं कार कर बोमद में जार तमारे हैं। वह पूर्व पाने नामी रामुक्त के जानी मनोरामा किसी होए हुए आलि से सी हो गई। की हैं। दरसाई है कालगा नामा कमी हों। इसमें सोमों में पूर्वतियां क्याराती का गहीं भी सीर दिन की बहुकन तीन होंगी जारों की

यहां से हटकर वह जमी सम्प्रकृषी के पास भाकर बैठ गई भीर मुक्त हार्यों से सभी कुछ दसमें ही समेटने कती।

अभात ना पूंचनारन छट चूरा था नातान में यह पूंच रहे वारों बांतों में तिरानता के नारण नार रही थी, जो नार-नार उससी पूर्व निर्दों में तीरों नाराती और निर्देश पीछते तक का उने प्यान नहीं था। एक हिम्मपनी पूंच में मीरी भी धारों नार-नार दो नात्मी के क्षित्र पूंच रही भी । कभी जाता पहें हुए जगूक पर, कभी धामने रही जाइकी पर। वादरे कार्यों में नहीं नाय- पूंच एक प्यान में "जार-वार पूर्व दा गा, जो नायन न एकर हम तबस बीरी को ठीत कर में सरितात होंगा दिलाई दे रहा था। मानों नहा समुद्ध गारे को छीत महस्त्री, वे दोनों तवनार का गए ही, भीर कमरा एक 'म्यान' के कर में बरत बगा है। सहसा उसपर कुछ ऐसा पागनपन-सा सवार हुमा कि सन्दूकची को उसने संदूक के नीचे सरका दिया और फिर मटके से बैंग को उठा कर वह रसोईघर की भोर मागी।

फिर बीरी से एक मौर पागलपन हो गया, जो वह मचेत रूप से ही कर बैठी भवता जानबुमकर, वह समझ नही सकी। उसने एक भयानक घटना की बामंत्रित किया। होश मे रहते हए भी वह यह नहीं समझ सकी कि यह निमत्रण उसने जानबुक्तकर दिया है या अन-वाने में। तब एकदम बाहर निकलकर उसने ग्रोर मचाना शुरू कर दिया---"पिताजी ! पिनाजी, धाग लग गई, जल्दी धाइए""।"

मद्रपट बाबाजी सीढ़ियां उतरे। रसोईधर में वो कुछ उन्होंने देशा सिर प्रक्रकर बैठ गए चल्हे के पास कछ बीओं जली हुई पढ़ी थी थी। कुछ ध्यजली स्थित में, जिनकी काली-काली राख पर ताजे गिराए पानी का थीलायन सभी विद्यामान था। बैग भी जला पडा था। रेवल उसका व्यवसाय ही बचा था जो पीतल या लोहे का होने के कारण धारा के संभाव में बच गया। बाबाजी नया देख रहे थे ? उनका भाग्य जलकर राख बना पड़ा

सावाधी बता देश रहे हैं 7 उनका भाग जनकर राक नाता पुत्र स्मा-जकता सुद्राध भागित वितास के देश के तर पुत्र सा । 'बद्द तेय सम्मान हो !!! दिस्साते हुए बाताजी ने गूरे बोर्स्ट स्मान के देश देश के दिस्साते हुए बाताजी ने गूरे बोर्स्ट सहत न करके चीरी मुंहे के कब कोगर परि पर देश नाताजी का स्मान करी राज को है में ने सीवा हुमा था। सीहात ते उन्होंने तर देश की जनता-मुक्तान्त यह कि मां बोर्स्ट कने दू मुग्नी में बोर्स्ट ने बहुं कतर रह गई है, पर चर्चा भीगी-भीगी राज के महित्तान साथ सही रह हुआ भी हुमा पा सकता को हुए सामने हैं के बहुं कि हुए को मीहा पा सामना को हुए समने हैं के बहुं कि हुए को महिता पा सकता को हुए समने हैं के बहुं कि हुए को स्मान पर के का जाना ही जिला एक हुन चुके वहाज के बादबात का एक कीता।

पहला सप्पड़ बीरी के शरीर पर पड़ा था, धोर इसके पत्थात दो, बार, पांच बच्चड़ बाबाजी ने सपने साथे पर सारते हुए एक शरह का वितार सार्य कर दिया—हात दे हुगेश-वह का हो गया सण-मर में ?" बोर साय ही साथ वे बीरी को भी—बो घपने को संगा-सती हुई बेठ गई थी—कोस रहे थे, "तरा सरवानात हो हुस्तातिती!

कर ही।\*\*\*\*\* बार हारों में न्या बरणा है है बाँद बादवान तर नए तो दनका यह धर्व तो नहीं कि नव पूछ बना बना । ऐना वेंप-मानार है जिसमें मेरी बार-गहबान नहीं है ? महबंद की बिहु दें चीव नहीं की जिने भीन न जानी ही । वर्ष बहनरों बीर वी ने की वर्गावर्ग में मिनी की। बी । बी की दिनाने की बारानी

वा जारावान में सामी की शो और को हिमाने की जारावा में बहा है दिखाने का से मुके देने हैं कियर जा बता जा ' मारों ने जारे बोर देवान में कहा रहि और देवान दूर्ण करात मारावा का से में के हिए के सभी करता है हो देवाने तालू के मारा के मार्ग निवाह के मार्ग करते में हो दे हो व्यक्त व्यक्त करी। वहुंबन के जारावी निवाह के मार्ग करते में हो दे हो व्यक्त कुष्ण में हात मार्ग कराहुं की मुख्या करता दिखी तीला में में देवानों के निवाह निवाह जा मारावा करता है की मार्ग मारावा की बजार को मारावा कराहुं की मुख्या करता है की मार्ग करता

चन्हींने पहन मिया । तारे में बेंडे बन्होंने बिरोप ध्यान रसा कि बरी पीसे की तकती से रगड साकर कोगा फटन जाए सा उनमें की शिपुहन म यह बाए। बहुन पूछना होने से जगके पटने का अप बना ही रहता था।

भेंट के बागरे में पटुचकर बाबाजी को लम्बी प्रतीक्षा करती गरी। बैड मेंटे के परचान् जब उन्हें बुगाने के लिए चपरानी सामा ही के तरकर करे ।

सी माहब ना नमरा शाही ढम से मुनिजन या, जिनमें नई छोटे नहें सीचे घीर कुतियां थीं। नावाजी ने दिल नी मटनाना नगा वर्ग क्षां साहब ने उठकर हाथ मिलाने की घरोशा धकडकर मामने रसी हूर्र का साह्य न प्रधान हान समान का सपता धन इक्त सामान राज्य एक सामारण-ती कुर्मी पर उन्हें बैठने को कहा जबकि बाबाजी ऐने प्रधानों के क्षेत्रे से कमा जोडकर बैठने के सम्पन्त में। एक तो पहने से ही उनकी सवियत परेशान थी, दूसरे यह धपमान, जिसे बहर का क हा जान आवान न राधान था, दूसर यह ध्यमान, निस्त कहा बुद्द समाप्रकर उन्हें पी जाना पड़ा । धीर सबसे बड़ा घ्यमान वह हि बिना कुग्रत-श्रीम पूर्वे, निना किसी प्रवार की प्रावप्तमा हिए घी साहब ने सरकारी धाटतरों जैसे क्ये स्वर से उन्हें पूछा, "बसी की, साह्य न सरमारा भागपरा भागस्य स्वरूप गण्य प्रणा सुदर्गनसिंह क्या मापका सडका है ?" भीतर ही भीतर तिलमिताते हुए बाबाजी ने 'हां' में उत्तर दिया।

8×3

वे सोच रहे थे. इतना ग्रभिमानी है यह अलमुहां कि 'बाबाजी' भी इससे कहते नहीं बना ?

मेज के दराज मे से एक इल्की-सी फाइन निकासकर उसे उलटते हुए क्षां साहब ने उसे ठडे लहुने में कहना चुरू किया —"किंदने मक्सीस की बात है कि एक पराने बद्धादार की सतान इतनी गुमराह हो जाए! फिर भी मैं सममता हूं कि भापका बहुत बड़ा सौमान्य है कि भापकी यह निर्देश देने का मनसर विशेष रूप से ऊपर से मिला है। वरना भाप जानते हैं कि बड़े से बड़े जुमें के लिए बाबून में बाहे कुछ बील था जाए, पर बगावत के दोषों के लिए इसमें किसी प्रकार की भी रियायत की गंबाइस नहीं है।"

सां माहब बैसे ही फाइल में म्यान गडाए बोलते जा रहे थे। इघर बाबाजी पसीने से तर हो रहे थे। न केवल चौरे का कसाव दीला पड गया, बल्कि वे ऐसा अनुभव कर रहे में मानो फांसी के तस्ते पर खड़े

हों. धीर रक्ष्मी का फेटा उनके गल में पड़ने ही बाला ही।

जैसे ही स्त्रां सहव रुके कि एक, दो, तीन बार खांसकर, मानों इनते जाते गसे को क्षोलने का बल कर रहे हों, बडी दीनता से वे बोले. "क्षमा करना जनाव (सा साहब के स्थान पर जनाव शब्द निकालते समय उनके होठों मे बिरकन-सी पैदा हो गई) भापकी बात मेरी समझ में ......"

"ठहरिए," सा साहव बैसे ही फाइल देखते हुए ऐसे गरजे मानी विसी नौकर को हुवम दे रहे हों। जिसे सुनकर बाबाजी फिर बोलने का साहम न कर सके। उनकी प्रांतों के मामने प्रधेरा छ। रहा था।

काइल की देखते रहने के परवाद सा साहब ने कहा, "मापने क्या कहा. कि मामला भापकी समझ में नहीं भावा ?"

"सच कह रहा हहुजूर।" बाबाजी रोनी-सी झाबाज में इस जार 'हुचूर' बहुकर गिड्डाग्डाए, "मैं घपने गुरु परमात्मा की साक्षी देकर कह रहा है कि मुक्ते ऐसी किसी भी बात की बाज तक कोई जानकारी नहीं है। यदि ऐसा होता तो मैं बपने हायों से बपनी सतान का गक्षा ਬੀਂਟ ਵੇਕਾ ।"

मदि कथ्यता से परंपर में तरलता का था जाना संभव है तो यह भी संभव है कि बाबाजी की स्पिति को देखकर, अनकी गिडगिडाहट

माप सुरन्त चने बाइए चौर बैने भी संगव हो सके, नामे के लिए मनवाकर साथ में माएं। एक मौर क मगर इगमें देरी की गई तो 👵 🗼

इरा हो। इपर मुमार बड़ा भारी दोव में मैं बीन कर रहा हूं, उपर न केवल ग्रागी क्वावके जाएंगे, बहिन सब तक मापने सरकार की जिल्लों भी मिट्टी में मिल जाएगी। यह भी संसव है कि सावके नि मदम भी उठाया जाए। भावके सहके की ती इस मूख मिलेगा, जो दूसरे वाग्रियों को मिल रहा है। १३ विजन

जो हुक्म सुनाया गया है, भाष भववारों में पढ़ ही पुने होंवे स्ता साहव के भाषण का बंदिम भाग बाबाजी नहीं है जनके सिर में भीर भी तेज चक्कर धाने शुरू हो गए।

"मण्डा जाइए।" कहकर सां साहव सोफेपर है उ भौर बिना बुछ कही विछले दरवाजे से भीतर चले गए, जिम्हा को तभी पता चला जब घरदली ने प्रवेश किया, जिसके मार वाबाजी के लिए भर्ष था, 'बलते बनी।'

कमरे में से निकलते समय बाबाजी की दावों पर हुआते व चल रही थीं। दोपहर की कड़कती पूप में भी उनकी पांचों के संख्या का धुमलापन छाया हुमा था। उन्होंने घोगा उठारकर है पकड लिया ।

रेलवे स्टेशन पर पहुंचकर उन्होंने हिरणपुर के बजाय माहीर दिकद सरीदी। बीरी मरे चाहे जीए। जो हो चुका है उसे छोड़ जो होनेवाला है जरीको जिता उन्हें साए जा रही थी।

## રહ

बाबाजी के जेहलम चले जाने के पश्चात बीरी के दिल को बीरी सा संतोष हुमा कि बाज मर में उसकी मानसिक या शारीरिक रिकी को परसने-जांचने वाला कोई नहीं है। भीतर से बाहर और बाहर में भीतर। जैसे जैसे समय व्यतीत होता गया उसकी मानसिक बेर्चनी बढ़ती जा रही थी। उसे कुछ भी समक्ष में नहीं का रहाथा कि वह 275



धार तुरत्व चते कारए और बेंते औ संबद ही सहै, सहसे दो हुए नामें के लिए पनवासर साथ से धार्म सुद्ध होता बन काई पार रामें देंदी में नहीं हो हमता मेंनी साधार हर दोनों के कि मुख्य हो। इधर मुख्यर बहुम मारी दोन कोगारिक क्वांत के से से में मैं तीन कर रहा है, उधर न बेचन धारते बचन के साते में बारों, सहित कर बज इधारते सरदार में दिखानों औदेश में, धारूने में सिख आएगी। यह सो संबद हैं कि धारते लिए सीने मन्द्री में सिख आएगी। यह सो संबद हैं कि धारते लिए सीने मिनेया, जो हुए से साविधों की स्वत रहा है। दूर हिजार दो के में हुएम स्वाधा गया है, धार प्रवक्त से दें हैं में

सां साहव के भाषण का श्रीतम भाग वाबाजी नहीं सुन हरें। उनके सिर में भौर भी तेज अक्कर धाने शरू हो गए।

"मन्छर जाइए।" कहरूर को साहब शोके पर वे उठ को है" मीर बिगा कुछ कहे पिछले दरबाड़ से भीतर चले गए, प्रियहर बाहबी को तभी पता चला कब मरति ने प्रवेत किया, जिसके मामनव का बाबाजी के लिए मये पा. 'बतते बनी।'

कमरे में से निकलते समय बाबाओं की टांगों पर हवारी चीटां चल रही थीं। दोगहर को कड़कतो पूप में भी उनकी भारतों के हामने संख्या का धुंपनाचन छामा हुमा था। उन्होंने चोगा उतारकर हाथ हैं पकड़ तिया।

रेलवे स्टेशन पर पहुचकर उन्होंने हिरमपुर के बबाय साहौर हैं। टिकट सरीदी । बीरी मरे चाहे बीए । बो ही चुका है उसे छोड़हर, जो होनेबाचा है उसीही विंता उन्हें साए वा रही थी ।

२७

बाराजी के जेहतम बसे जाने वे परमान् बीरों के दिस सा संतोष हुमा कि मान पर में उत्तरी के कि दिस को परसने-बांचने बामा गोर्ड नहीं हैं। मान संती-बीस परस क्यांत होता हैं। बहुती वा रही थी। वहें हुएं वा करे. कैसे भावने निराश मन को धैव बंधाए ।

'बराया हम संगार से हुण करने बाता है। वसे मुलुदेव मिल हुए हैं। बहु कोशे ने करकने ही असार है, क्या बैं करें, क्या गित में बूर्त एक बार भी नहीं के बारणी? वसा यह यसमब्द है? इसी तमी प्रमान हो समया है, यदि दिलाओं से कासे हैं। क्यें है में बूर्त सामायी के नहीं कोश सारं। वस्त्र में असार होंगा हिन दे मुझे सामायी के नहीं कोश सारं। वस्त्र में वस्त्र प्रमान होंगा हिन दे में पर क्रितारे दिन माहे सारं। वसार के वस्त्र प्रमान होंगा हैने तमें पर क्रितारे दिन महें सारं। वसार के वस्त्र प्रमान होंगे से मुझे क्रम सम्त्रात है। भी प्रमान के परिणायनक्ष्म ही मुझे दी सारं से पहले के के सारं कारों से परिणाय है है। क्यों सारं में से पहले के के से कारों सी परिणाय है है। क्यों सिर्णाय मुझे सारायों के पहले के के से कारों सी परिणाय है। क्यों स्थान कारों क्या में महिन सही होना—कोई कारों बहुता बनाकर पत्री जाना जाता है।

सीरी के शिवशा था, जेला कि बाताओं जोते समय पने बहुत्या, में, कि ने ताला समय पने बहुत्या, में, कि ने ताला समय पने बहुत्या कार्य मी, कि ने ताला समय पने बहुत्या कार्य मी, कि ने कहुत्या कार्य की ने कहुत्या कार्य की कार्य पत्र के सार्य नहीं की ने कहुत्या कार्य के सार्य नहीं कि ने वहुत्या कार्य के स्वाद में कि ने वहुत्या कार्य कार्य के कि नियम कार्य कार्य के नियम कार्य कार्य के नियम कार्य के नियम कार्य कार्य के नियम कार्य कार्य के नियम कार्य कार्य के नियम कार्य कार्य कार्य कार्य के नियम कार्य कार्य कार्य कार्य की नियम कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य की नियम कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य की नियम कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य की नियम कार्य कार्

हुस्या दिन भी मुक्त पता , किर तीवार भी। यह बाताओं नहीं और, दे हिज्य के देशके के दिवस भी के देश-भा-तीय हो। यह अहा पत्नी भी यातः ऐसा होता पहला या। वस भी जातें दोरे के मोटने में निष्यत तथार वे पत्ति कर बाता, तो ने या स्वत्य वारेस साहित के बिटाम करते के । इस बार तो जातें के पत्ति हमार के पत्ति हमार या, बाहि के भीरी को बीरारी भी हमार की अहोन स्वत्य भीर भी सावस्वक या, बाहि के भीरी को बीरारी भी हमार की अहोन स्वत्य के भी

मान बीरी का मन बहुत स्टास था। उसे कुछ भी मध्सा नहीं १४७ मान तुरून बने बाइए और बेरे भी संब हो गई, महर्ष को यूण माने के लिए बनवाइर नाव के जाएँ। एक धीर बाद बड़ाई मान राव दें भी महें ही एमान नीता प्रावट हम के पाई हुए हो। एपर मुख्यार बड़ा मानी थीन मनेगाई नावित के तार के मैं बीत कर होते हैं, कपर ने केम माने बचा के कार के तार के का बाएंगे, बहित घड वह माने गरपार को निजानों भी देवा में बिहुते में पान वापानी। यह भी कमाई है कि मोने के पाई के बहुत में पान वापानी। यह भी कमाई है कि मोने हैं कि स्वाद में बहुत भी मान वापानी कार में हम हो है। इस हितान को से मान मिला, को हमरे बाजियों को निज बहुते हैं। हो हितानकर नो को की हुन्य कुनान वापाई, मान कमानी में कही हो हो हो

सो साहत के मायणना चतिम माग बाबाजी नहीं सुन सके। उनके सिर में घोर भी तेज चनकर माने सक हो गए।

"मण्या नारए।" नहकर थां ताहन सोने पर ये उह नहें हुए भीर बिना हुए नहें रिएने दरवाने से भीतर परे नए, जितहा नागरी को तानी पता पता जब भरवती ने प्रवेश किया, जितहें भाषनत ना बाबाजी के लिए धर्म था. "वनते बनो।"

कमरे में से निकलते समय बाबाओं को टागों पर हुआरों थीटिंग चल रही थीं। बोगहर की कड़कती पूज में भी उनकी मांलों के सामने संच्या का पुंचलापन छाया हुमा था। उन्होंने थोगा उठारकर हाथ में पकड़ दिया।

रैलवे स्टेशन पर पहुंचकर उन्होंने हिरणपुर के बनाव साहोर ही टिकट सरीदी। धीरी भरे चाहे औए। जो हो चुना है उसे छोड़कर, जो होनेवाला है उसीही बिता उन्हें साए जा सी धी।

### ২৬

यावाजी के जेहनम चने जाने के परचान बीरो के दिन की पोझ-सा संतीय हुमा कि माज घर में उसकी मानसिक या धारीरिक स्थिति की परतने-जांचने वाता कोई नहीं हैं। श्रीवर से बाहर धीर बाहर से मीतर अंति-के समय व्यतीत होता गया उसकी मानसिक वेषैनी बहुती जा रही थी। उसे हुछ भी समक्ष में नहीं या रहा था कि बहु ब्या करे. कैसे प्रपने निरास मन को पैये बंघाए ।

भारत्मा इस बंदार से पूज करते बाता है। ये मा सुद्धं मिल बूग है। बहु संत्री पर सदकने ही साता है। बचा में वहे, संत्रार स्मृह है। बहु संत्री पर सदकने ही साता है। बचा में वहे, संत्रार सह तो तभी सम्मन्द ही सकता है, सौर विज्ञाओं के साहे हैं। वहें हुन मह तो तभी सम्मन्द ही सकता है, सौर विज्ञाओं के साहे हैं। वहें हुन है के सूर्त पर विज्ञान कि स्मृह स्मृह स्मृह स्मृह स्मृह स्मृह स्मृह कि से सौर पर विज्ञाने दिन साहे समार। बचा है स्वसं धुम्द्रम स्मृह स्मृह से से मुझे स्म सत्त्रात है। सौर मा के विष्णामनस्वरूप ही मुझे दी स्मृह से मुझे स्म सत्त्रात है। सौर मा के विष्णामनस्वरूप ही मुझे से समाने के तहाँ में में में में भी समी है है। होती स्मित्त में में समानों के तहाँ में में में में में स्मृह से स्मृह स्मृह स्मृह स्मृह से स्मृह से कठिन तहीं होगा-चेरी हम कोई सहार समान स्मृह स्मृह स्मृह से स्मृह से

भी ऐ भी पिरदाय था, 'बंधा फि बासाओं जाते समय से के कहाए , है कि तथा स्वार मोठ पाएँग, पर तथा गोठ कर दा गो भी मुदूर महें तो उपका पन बहुता हुए हो गया, भीर राम दिश्या के कारण खाके सामी के दें प्रकार के प्रमानक दिश्य उमरति करें साए—दी- ती-ती- के उन्हें सुमान हैं " नहीं के दिल सोग" "हमार "पर दाने ती-के निमानक का बना यही भारे ही नवात है ' साम देखा के दिवास " " " देश के दिल से हमा कि साम के सा के दिलामें का हुए स्व सहुत कर सकेशा ? एकस्म दिल सी पोट-मा ?" " वही निसास मेठार" "

हुमा दिन भी पुत्र गता, फिर तीमार भी। यह बामानी नहीं और, में दिन में तीर में दिन यह में मोदिन अपनेशा ही पान होता पहते भी बाय: ऐता होता पहता था। यह भी उन्हें दीरे से भीटते में निर्देश्य नाय है सारिक तम जाता, ते ने पर अपना करोद साहि में दिना करते में हम कार तो उनके लिए यह और भी सावशक या, वसकि में बीरी को बीराई, की हातन में को क्षाकर गए मे— विकास अहीने मानत वाहर भी क्षावर्त करा। या।

मात्र वीरी का मन विद्व प्रदोस वा। उसे

कर रही है, जबकि हमारी पार्टी ने अभी तक कोई महत्त्वपूर्ण कार्य कर एहं हुन बार हुमार पाटा व ना पार कर वा बुद्धिया कार नहीं किया, दिवाय इसके कि हुम कार्यकर्ताओं में वरस्यर तालमेल स्वापित रक्षते के लिए काम कर रहे हैं। माता गुनावकीर मी हुमाँ वे एक हैं—हुबारा ब्यान रक्षते वालों भीर पाटी की म्राज्या अर्थों ये बहुत पुरानी कार्यकर्ता है, इसलिए पाटी के दभी छोटे-बड़े मेटों का इन्हें जान है।

"पत्र सम्बा करते की धावश्यकता नहीं, वर्धोक माता गुलाबकौर की खबानी तुम्हें धावश्यक बार्जे मालूम हो सकती है। धतः एक-दो

शतें तिसकर चिटठी समाप्त करता है।

"इसारी पार्टी को इस समय मदौ से पधिक स्त्री कार्वकर्ताओं की ग्रावहयकता है बीरी। इस समय सराभग सभी कार्यकर्ताओं का पीछा

धारमण्डला है बीरी। इस समय सलमा सभी कांग्रंकाधि का पीछा ।
। धाई थी कर रही है। इस्तिम्द क्षेत्र मार्थ पो धा पहले हैं 
नो बेबल स्थिती हारा ही पूरे विष्य जा करते हैं। पर इसे पार्टी का 
दुर्भाय ही कांद्रपू कि मात्रा पुत्र साथ के प्रतिक्षित इस समय, पंजाबी 
साविकाशियों में की भी धाय को कांग्रंका लि हैं। स्वार की 
साविकाशियों में की भी धाय को कांग्रंका लि हैं। इस की बंगाली 
सीविकाशियों में की भी धाय को कांग्रंजी कर किया के स्वार्ध में 
के स्वार्ध मात्र प्रतिक्ष के स्वत्य के स्वार्ध में 
कर पहिं हैं। साथ एक दर्जन सावी भी जनता बही कर कही था पर सावी 
के स्वार्ध मात्र प्रतिक्ष है कि योगी करता है। पर सावी 
के स्वार्ध मात्र भी आहम करते हैं किया है कि मात्र प्रत्य स्वार्ध होंगा 
पायस्यक है। बहुत समय दि इस कमी हो मात्र प्रवार्ध को 
स्वार्ध हम मीम यह लिया हम दर्जन है कि मात्र प्रमुखन करने के 
पर सावी सीर पुत्र-पामक सहीविका मिलती भाष्रिए। आरों भोर 
पायस्य हम मीम तब एक स्वार्ध की स्वार्ध मात्र भाष्य । 
स्वार्ध-सावी भी प्रतुप्त स्वार्ध करती स्वार्ध भी साव्य प्रत्य । 
स्वार्ध-सावी भी प्रतुप्त स्वार्ध करती हो सी सी मात्र प्रणा । अस्ति 
प्रतिक्षी भीर पुत्र-पामक सहीविका मिलती भाष्ट्र । आरों भीर 
प्रतुप्त मात्र सी तब सुर साव्य की दरकी है तो सीन सुलगा । से पमकर हमारी नजर बगर कहीं टिकती है तो बीरी, तमपर । बल्कि सच तो यह है कि तुम्हारे बिना झन्य कोई नहीं, जिसे सुम्हारी तुलना में सड़ा किया जाए। जिसेय-रूप से इस समय इसकी धावरयकता धीर भी धरिक बनुमद की जा रही है, जबकि माता के न देवल बारच्ट जारी हो चुके हूँ, बहिक इनकी गिरफतारी के लिए इनाम भी भीपित किया नहीं है। इसिए यहूने की तरह तका प्रव धाम यूमता-किएना सतरनाक समझ बाता है। चाहे सभी तक वे वेश-मूबा बदल-कर सपने कार्यों को निवाती बभी बा रही हैं, पर सावस्यकता इस बान की है कि पुक्षेन किरने में इनको एक महाविद्या है। में पाकरणक कावी के निए मुख्य क्वान वर बैटकर निर्देश की पूँ। मुद्रे विश्वान है कि तुमने सम्बो महाविद्या सारद कुछ सन्द की निम मकती।

"तह मैं जातवा हूं नोरी, हि मानात होने के बारे हों से नियारी की भी किया करती चाहिए। वह भी तमकता हूं कि नी नीम पर से मानवा है कि मानोती, तो नियारी की बता दवा होती। नेहत, देश के लिए प्रदिश्च मानवा का कीमता की देश हो के हैं पार नहीं है। एक बार तुम नावा में भी हर कर चुने हो कि दू पर से बाहर किसी हमान की भी गढ़ी जा मानी। यह तुम से चितार की कि तुमारे किया है। तिरकार कर निया जाई। हो

'''' समझ है हि से शीम ही निएशार कर निया बाड़ हैं स्वारात में सायक होना चृत्य वा संभागों की नवा इस हैं समझ कुरहारे मन में माजिकारी भागत है—तिवा सार हैं स्वा किया करती है—ती सुर्यंदे नेगावनी देश हूँ कि ति में महाना का तो भी भी, कुर में माजिब होते हैं कर दुक्तां नेवा पुरारा औह है, स्वता काहरण सामद ही कियो वहाँ साम का बेस, बहुत से भी कुर में मुक्ता नहीं चाहिए कि में साम का बेस, बहुत से भी कही बहुत होता है। मेर हम हों पातान का बेस, बहुत से भी कही बहुत होता है। मेर हम हों पातान का बेस, बहुत से भी कही बहुत होता है। मेर हम हों पाता का बेस, बहुत से भी कही बहुत होता है। से हम हों पाता का से साम हम किया हम करते हिंदा हम की कि हम हो कर सी बार्य विश्व है या तीस करते हमारात्री की मा के सिए बीच देने के विद्वीया

तुम्हारा मैदा-इधर भीरो ने पत्र समाध्त किया, उपर मुलावशीर ने उठके चेहरे से नजर हटाई। बह चीरी के चेहरे में बरावर हुछ बनने की चेटा में

लगी हुई भी। गुताबकीर को सेकर जब भीरी कमरे में गई वो शीहे भा रही गुताबकीर को सेकर जब भीरी कमरे में गई वो शीहे भा रही गुजाबकीर में इन शब्दों में मध्ये जदगारी की मध्यितीर की, "रचुबीर! मैने समभा या कि तुम होगी कोई कड़े दिल बासी सहबी,

·--

परन्तु तुभ तो पहुची हुई हो बहायहुवन के सिए मेरी वैधियों को

तुम्हारी शिच्या बनना चाहिए।" "भाष स्वा कह रही हैं माता जी ?" सज्जित होती हुई वह बोली, "मैंने तो प्रमी मापके साब बातचीत भी नहीं की है।"

"उदान ग्रीर कान से ही तो सभी वार्ने वही-सूनी नहीं जाती बेटी। बता हुवा प्रवर में पदी-सिसी दहीं, पर सात समूद्र का पानी तो बीए हूं। जैसे तुमने पत्र में से भवने भैवा का हाल-चाल पढ़ा है, वेसे ही मैंने सुम्हारे बेहरे से तुम्हारे मन का । सुना तो तुम्हारे सम्बन्ध में सुदर्धन से बहुत कुछ था, पर सोचती थी, शायद ऐसे ही सडका

धपनी बहन के गुणों के पुल बाध रहा होता। पर..." "छोडिए इन बातों को माताजी।" बीरी ने उसे टोका, "पूर्वत पाकर बातें करेंगे। भाग जरा लेट बाइए, यक गई होगी, मैं तब तक प्रापके जिए दो रोटी सेंक न्।"

"प्रच्छा विदिया।" बारवाई पर बेटती हुई गुलाबकीर बीली,

"बाहर से मेरी टोकरी धौर बृठरी उठाकर समासकर वस देना ।" "दण्डा, "कहकर बीरी बाहर जाने के लिए मूडी । गुलावकीर ने उससे पुछा, "धर मे कोई भौर व्यक्ति तो नहीं है।"

"नहीं माताओ ।" वह बोली, "पिताओ बाहर वर हुए हैं।"

"तुम घर मे घडेली हो ?"

"भने भी क्यों, माताजी ?" वह इंस पड़ी, "सरामाजी का दिया हुद्रा सहायक जो मेरे पास है।"

"मुने मालूम है, मुदर्शन ने मुन्दे एवं कुछ बठलाया या।" बीरी को रतोईबर मे पहुँचे पाच-गात मिनट ही हुए थे-- उसने पुरहे में नेवल बाग ही बसाई भी कि गुशाबकीर यह कहती हुई जसके निषट मा बैठी, "मैंने सोचा, बात बहुत सी करने वासी है, पर मेरे

पास इतना समव है नहीं। स्थों न दोनों कार्य साथ-साथ हों। येट-पुत्रा का भी भीर बाठों का भी।"

"माताजी," बीरी बैठने की चौनी उसकी घीर सरकाती हुई बोली, "बाप दो बड़ी विद्यान तो कर होती।"

"विधास कांतिकारियों के भारत में कहां? विश्राम या तो मृत्यु के परपात् या स्वतन्त्र होकर ही किया जा सकेगा। हां, यह बतायी हि साहित के द्वाराते हिनाओं बकी मोर कि कही ?" emille bir all harrefefentingent,"!

attidi, bene en en gu gir

बतार से मुनावकीए ने अपनी अन्तवारी के बाचानार म गया कि बोरी का रिया बायक्य एक की मोत्र में कहा की बाद विकास है । कीन बिक प्रमें बनावन कि सबसी मुक्तिया पूर्वन कार्र की बीक बार्ड करीक बेबी ती बड़ी दिन की दल्ती तनर ही स्वी वि कारिकारिका के बारित विक्रे बाली में है। करें पाना का श बुका है कि बुक्त को विश्वतार करवाने के नित्त बाद बायहन कर् er wirt furm ? :

'हाय, में बर नहीं " बीती का हाथ बाना काम पछ हो छ

मबा, "बार वह बरा बह रही है माताओं ?" बतार में बोर दिनना पुत्र दुनावकीर में बताया, बुन मेंने र बीरी के निए धांबरवाम करने की कोई मुजारण क्षेत्र नहीं पर वर्ष भी । चबराहृद्द ने बनका गमा मुमने मृगा । बनकी निर्धात की मार्ग हर पुनाबकोर बोली, 'यह कोई संकरत की बात नहीं है बिटिगा सरकार-मनत मान्याप को सातान से भी बहुकर सरकार की मंति विव होती है। सबजा धर छोत्रो दन बाजों को, सीर बेरी बार्ने स्वार सं मृत को ।"

बीरी चाहे बड़ी घटराहट में बी, पर बारें मुनने के लिए उनने प्रयासपूर्वक महराहर की बस में कर लिया।

"सण्छा, मुक्ते यह बनायो कि वह काता कडूनर कहा है वो सरामा ने दिया पा तुओ ?"

बोरी काले बहुतर का मतलब जानती थी। बहु बोपी, "हंबात-कर रसा हुमा है माताओ -वर्षों ?"

"बह मुझे दे दी, शौर उसके बदने में तुन्हें में हुसरा देती हूं।" बहती हुई गुनाबकीर बठी। बाहर जाकर मगनी टोकरी को टटोन-कर उसमें से एक छोटे माकार का रिवाल्वर निकासती हुई वह बोली, कर करान च एक पाल काकार का उरवात्कर शावशाता हुव वह ना "यह उत्तरे मी बड़कर नीमती है, अमेनी का बना हुया। सड़कियों के हाम से बड़ी भीव अपकों नहीं समती, साम ही दिस बाने का मी संवरा रहता है।"

ं व्यांही बाहर आने के लिए गुनाबकोर उत्तर हुई, बीरी में उसे बाह से पबड़कर यह कहते हुए बैठा दिया, "इसके लिए मुझे क्षया करना माताजी, यह मुझसे नहीं हो सकता।"

"वर्षे ?" गुनाबनीर ने भारतवंबित होकर पूछा । "बाप तो मा सुत्य हैं माठाजी, भाज पहली बार यह भेद खदान

"बाप तो मा सुत्य हैं माठाओं, प्रांज पहली बार यह भेद खबान पर साने लगे हूं कि "कि"" और बीरी की खबान मानो लड़सड़ाने सरी।

"बताची विटिया, नया कहती हो ?" "साताची, छोटा-मूह बड़ी दात । पर जो बात किसीके बुते से

बाहर हो उसका कोई बया करे! यह बब्दर प्रापक निए तो पार्टी के काम प्राप्त काला होता, पर चेरे दिल से कोई पुष्कर देखे। मैंन उसे दिलों के प्यार की नियानी समस्कर रखा हुया है, जाताओ। बीठे-जी में उससे मिलन नहीं होता हो, बाहे प्राप्त से पह हुता से गे! "प्यार की नियानी ?" युनासकोर ने उसकी घोर देखे ताल

मानो बीरी बेहोची में बोल रही हो। "हां माताबी-पार को।" बीरी के चेहरे पर हुमारी-सुलक्ष

मानिया विद्यान थी।

<sup>&</sup>quot;पर बह तो तुम्हें ुः ् "स्थिति दिया या।"

करता होगा ?"

भीरी ने बतर में कुछ नहीं बहु। वजारी सामोजी में है। असरों का उतार बानी हुई मुनावरोर बोगी, ''क्सरों बानें,' मजारू पूरी पर बहर पाने-पूजने नता था, तो बता रह कां कि उनके ऐंगा करने में मुख्य में उजार बजार हो नावणा नार्य-धेनना जिन सीमा पर बहुन बुझे है, नहीं सामारों आहे में मं निजारी ही रह में है, भीर कांद्रे सानी मान शायर मा नुगर के कांत्रिकारी कहोगी को निराम होकर परना माने बरल नेता हैं '' कांत्रिकारी कहोगी को निराम होकर परना माने बरल नेता हैं ''

"बम माताजी," बीरी ने उसके पाव छुने हुए कहा, "समक्रवी

मब भौर हुछ पूछना भेर लिए शेप नहीं रहा।"

पर भीरी के नहते पर भी नह रही नहीं, "इस सम्बद्धार हन्त्र" नहीं तानों है भी बहा नियान है नहीं के खुन्हों के जुन्हा कि मतान है पत्री के हुत्ती है भोज नत्य करता । वहनी बहा नहीं पत्र प्रसिक्त प्राथा नहीं, नियोक केने तोहने के लिए दिल्ली वॉसर र्रो सिंहते तामनों की सावस्थकता भी, यह हम नुद्धा नहीं तके। नामी के रेकर हम समस्य हमारा काम सम्बद्धा है। "

"आपका मत वब देशकोहियों की करन करने से है ?"

"हां, जेन से सरामा भी और दूपरे नेवाओं भी भी बही बेताओं बार-बार धा रही है कि किसी दूसरी मोर प्यान देकर समय मदन्य करो। परके आने या मारे जाने से पूर्व जहां तक भी ही सके, देगारीहरों की जहें जातक फैनने की बेटा करो।"

साना सैयार होने से सेकर साए जाने तक, भीर साने के परवाई गुलावकीर के सीटने तक याती का तम धलता रहा।

अग्येश्यार कार्यन साथ कार्यन पत्ता रहा। भीरी है विदा केलर जब शुमावकीर, सीड़ियों की हुवेसी से बार्र किकती सी उसके सिर पर बही डोकरो, भीर बही गळरी बगल में यो। भीर 'इड़ियां-गळरे से सी लड़ियों) धावार्ज समाती हुई वह रेलों स्टेशन की शोर चारी जा उनने से

25

व्योंही लाहौर पहुंचकर बाबाजी ने भएने चचेरे माई से सुदर्शन है

गवार बुने कि उनकी बच्चे-बुची पैठना भी बनाब देने सभी। उन्हें स्वार दुकेंद्र स्वारमा बचा कि मुद्धिन तो उनके महत्व र ए केवन एक होना उद्धार या। उद्धे र पान्य तुन्द हुन्य हुन हुन्य सभा का क्रिक्टर बना हुन्य हुन सभा का क्रिक्टर के महत्व के हिस्स हुने पर सुने क्षा कि अपने केवल हो पत्र है। पिता के भी भी र है में री वक्ष भार के दे रहे यर मारहीं हैं रहन हमते के सित्त वह प्यन्ति कारेंद्र के मारे इन्हें हमता तेटरतस्य तमाइट भीर उन्हें जानां जमाइट बमा

प्या था।

बादावी को यह भी बढावा पया कि उतके पश्याद कुत दो धा
तीन बार सुर्वात उन्हें मितने के लिए प्रांचा था। एक बार उतने
बताया कि 'वाग्रियों के भोर के बारण औदित के लड़कों को बाहुए
निकतने की महाहूं। बर दो वह है, हमलिए शावद मुक्ते धारके पाल भारते का स्वकार न रिक्त लहें । मेरी राकृ हमारे कारिय के भौकीहरा

की पत्नी माक्ट से बाबा करेगी। कभी-कभी एक ऊंची, तम्बी भौड़ायक्या की पंजाबी हवी आकर सेटरबाक्य सीलकर पत्रादि से जाठी है। माइके परमें से निकसकर बाबाबी उत्तरे पांव देवालीसह कालेज

जा पहुँचे। परासु बहा से साई उससे भी बटकर निराशाजनक उत्तर मिता। प्रिसिप्त ने उन्हें बटाया कि इस नाम का कोई भी सहका परटे इंटर में नहीं है।

 जन्होंने एक घोर सनुमान लगाया, 'यदि मचयुच हो बहु की में भिन्न गया है वो बहु सहस्य ही बाजहरूस लाहीर में होता, हरें रूवें दिनों में प्रमुख बांग्रियों को मवाएं मुनाई गई है। साध्य है धांता-व्याता दिलाई दे लगाए, या पहचा हो गया हो।'

उन्होंने बहुर के चक्कर कहते गुरू कर हिए—क्सी हुँहर्व के दरवार्व के ग्रामने, क्सी बरावारों में, कभी कानोत्ते कप क कभी कहीं। भीर उन्होंने इतना पता साता सिवा कि बार्धियों में कीन-या वर्षीन कह रहा है। स्वीम से उनके पाम रहेंती योग र मा ही, बिसे बहुतकुर वे रावी रोड पर पहुंच गए, जहां सामा रहता

सहाय की कोडी थी।

भोगे के जनने सहरकार नी—जान साहब साहर के सिंह में जरीत के कार्य सुवांनिवह साम के स्थित प्रियंत्रक के स्थित में हैं पता नहीं सिंक खारा थी-जीन दिन कर के दारी आता है तहार में हैं होटली, पिकेटरी, सामी तथा जातारों में चलकर कार्य पेंद्र पर पर्वेत पता में जारी की स्थापना जाने ना सिंक्स किया नहीं जाते में में साम होता, कार्यों के कहें जाते सामा नहीं में, पट पूर्वत को जिसे में सहार होता, कार्यों कहें जाते सामा नहीं भी, पट पूर्वत को जिसे में सहार किया नामा कराया स्थापन सामा कार्या कार्या कराया की

लुक्षियाना पहुचकर उन्हें क्याल भाषा कि यहां मानर उन्होंने है। मूर्येता की है, जबकि मुदर्शन के किसी टिक्नने या उसके किसी वर्षिण को भी ने जानते नहीं थे । मासिर उनकी सोज करें तो कैसे ? उटकी

पता-ठिकाना पूछें तो क्सिसे ?

दिन तक वे बुविधाना भी धड़ हैं नापते रहे। यह सुर्धात में सोस उनके लिए उड़ गए बसी सो को बत्ति हुई। उत्तर दिन दिन सीस उड़ा यहां तक सोचने तसे, 'धब जोने ते तथा तथा है। सार गया, इन्डड गई, भीर तथा ही भावपा भी गया। 'बहुं तो दे बी जगीर मिनने से धाता तथाइन दरें है, भीर कहा बहु सिर्धा कि मिनम से रोटी का दुक्डा भी मिनने की साधा नहां दिसाई दे सी थी।

तीसरे दिन में फिर साहोर की गाड़ी में बैठे, झौर नेवल इस शीग पाशा से कि उस क्त्री, मौकीदार की पत्नी, से कुछ पता मिन एके। ब्द वे नहीं, रहूँदे हो उनकी यह भाग भी सामन दुर गई। उन्हें रागत बाग, 'में रितन मुखं हूं ? मैं कहीं पामन तो नहीं हो गया ? मूं दुने भी अवशर हो सामियों की कोई सहयोगिन होंगी। 'परन्तू पत मात रा सिद्धाल होने पर भी ने द्वारा परकर दशासीह सामें न बा पहुँचे। बहुं। एक्ट्रेस पर भी ने द्वारा परकर दशासीह सामें न बा एक मोरा है, जबां के साह में के साह ने कहें समामा मा कि वह स्वी 'ज्योगिक सी।

वजाह-भर बगह--ववह भी बाक छानने पर भी जब सब्के से मध्यम में बढ़े होई मध्य मा मिसी, तो मदन में पहाँची और जाने का मिस्य किया बढ़ी भी किया क्या बढ़ी मान सुनार मुंदी भी--ज्य जाने सबसे पर पीके बया नुबार होंगी! पर में पड़ब्स महेनी! आते भया मैंने हका भी नहीं दिया कि निस्ती पतंत्री को हो स्वहर पाता। भीर को फिर दौरा एक नारा हो! भ्याद दौरे की स्थित में मुख्य कर देंगी हो, का पर हे कामी हो त्या हो? भीर को से स्थाप कर देंगी भीरत है जब मही हो! भागा है!

विवारों के इन्हें बेदों में चक्कर बाते हुए हिरानुद्र का टिक्ट के गाड़ी में बेटे। 'व्य करह बूत्तें की मेंव करने की वायेशा की कार के गाड़ी में बेटे। 'व्य करह बूत्तें की मेंव करने को वायेशा की क्यों करोट वहां था, 'लारों कम की कमाई गोड़ी कार्य करने वाएगो… इन्हों वा मात्रा मिट्टी में बिक्त वाएगा ''को के लिटर में मात्र मात्रा लाएगा। भीर बहु भी कोई बढ़ी बात हो कि हमाई गोड़िक यो को स्वी

403

रहेचा दिया आए । धन साम्बद्धाना ही बचने सन्धा दुनावहै दिकर बारे अपूर्ण दिल्लार की बारित की, बीरा के हुए बानने हे लिए पनवा सन बड़ा बंचेन बा, प्रवृति है पूरे ही बसा में धोदबन इनने दिनों दे परवान मीट रहे हे - विद्धे दर्व का रामय पाई नहीं किया था, कर उसीते नाही बेहता है? रदेवन शराय 'कोरनाबाद' क्यी, हिरणपुर की क्रीला बेहाक ह

के विवार में प्रश्वीने भारता हराहा बहत लिया ! मानाह-घर की याचा के कारण उनके कपड़े मैंने और मी विरुद्धी हुई भी। बाहर बाहर न्तानाहि करते का बाह होय हुई रहा वा । इस बिएडी विवित में जिसे के एक्से बढ़े बदलर है है करना बर्दे धाना बलमान लग रहा या । पर बल्हीने छीवा-निर्मे

इरबत, विश्व का क्यमान, अवकि गय कुछ समान ही दया ! गाडी जेहमम के स्टेशन पर रही। बाबाजी की ही क्रिकेट विक्रुह होकर केंद्र रहे। बाबाजी की ही क्रिकेट विक्रुह होकर केंद्र रहे। बभी गोचने---जार बाज; बभी बोबने--पि रही। बन्त में जब गाड़ी ने क्लिमन दी की वे गीमता से वड़े, के धडावा और सोटवामें वर उत्तर गुरु ।

## ર૧

बान साहव ने पहली दृष्टि में ही बाबाजी की स्विति की मन् निया। बाज से एक सध्ताह पहले वाले और बाज बाबे इन बादारी में उसे सी कीस का अन्तर दिलाई दे रहा था। उनके अवदार में पहें है भी अधिक बठोरता मा गई। पर मात्र बाबाजी को यह कठोरी पर दिन की तरह मसरी नहीं। मात्र वे स्वयं ही अपने-माप को सीमी धाहबजादे' की बजाय एक पृणित-सा दोषी अनुसब कर रहे थे। वर छन्होने सपनी ससपसता की बहानी गुनानी सारम्य की तो बोतडे-

"हूं।" हव कुछ सुन चुक्के के परचात् सान साह्य में उसी घाषि-चित्रों वांके स्वर में कहा, "गोवा घाष प्रपराधी को हाजिर करने बजाप हुए समय उसके विवद्ध गवाही रोच कर रहे हैं, कि सपसुब इसका बागी है। पर मुक्ते की इन सब बांगों का पहले से ही इसम

"हुजूर !" वाबाजी शिक्ष्महाण, "बाद मेरे बचा में होता तो मैं संभीच को पकड़कर ही नहीं, बस्कि सक्षीटकर मापके कदमों में ला टरता; पर क्या करूं मेरी कोई....." भीर बाबाजी की मावाज हरीं कहें।

सान साहब के देग में ब्रधिक नहीं तो राई जिलना घन्तर धवस्य ही मा गया, "ब्रापने बपनी कोर से पूरी कोशिश की होगी यह तो ठीक है, पर इसका बना परिणाम होया, बायद सभी तक साप इससे परि-चित नहीं है। झापके जाने के तीसरे ही दिन सुन्ने सी॰ साई॰ सी॰ की घोर से एक घोर रिपोर्ट मिली है, जिससे यह स्पष्ट होता है कि लाहौर जाने से पहले भी, यानी घर में रहते समय भी उसके बागियों से सम्बन्ध थे। जिसका मतलब साफ है कि या हो भाग सब कुछ भागते हुए भी उसकी हरकती की नजरभंदाज करते रहे हैं या मुभन्ने हिपा रहे हैं। इसका मतसब है कि भापने एक बाती को धारण दी, भापने उसकी सहायता की, भावने उसपर पदा हाला। इन अपराधी के बदसे में धापपर काननी कार्यवाही की जा सकती है। मुश्किल बात वो यह है कि ये सभी जुने अमानत के काबिल नहीं, जिनके सिद्ध होने पर सम्भव है कि बापको तीन से पांच साल तक की कैंद और खायदाद जन्त होने की खड़ा मिले । भाप समझदार हैं, इसके हानि-लाभ का विचार कर सें । मैं मानता हं भीर सरकार को भी इस बात का एहसास है कि मापने सरकार की मदद करने में बड़-चढ़कर भाग निया जिससे चुत होकर हिंच मॉनर ने मापको बहुत मड़ी बागीर देने की विफारिश भी है। पर भापकी बदकिस्मती कि सहके ने भापकी सारी सास नष्ट कर दी।"

बाबाबी ने मर्द्ध-वेदनावस्या में ये वानय सुने। अब सान साहब नह बुके हो वे उसके हुए वेड़ की दाह यह बहुते हुए बान साहब के करमों पर निरंदने, "बेसक में कसूरबार हूं, हुबूर, कि माज शक में विश्वास करण देशा १ वर कराव में श्रेष्ठ कहा है. 30 वर कर की नेशी बना है, विश्व के जिल्ला करणहरू हुई कर कि कर में नोश बना है, विश्व के मेरी के बार हुए हैं कार्रे के हैं जिल्ला कराव में सार्ट, महिला करणहरू है कार्य के दें जिल्ला कराव में महिला करणहरू करी को करणहरू में के दें वेशों का आब दूस में दिस करणहरू करी करणें करों नहीं कार्यों दरक्किय है। विश्व करणहरू करी

साव गारव नहरे विचारों में हुने हुए के। करा में बार में बंगानेशते गाइने में बावानी वो घोर हेमते हुए बोने, गाइतारे बंगानेशते महत्वे में बावानी वो घोर हेमते हुए बोने, गाइतारे विचारका बंगाने हिंदी मानवार में बहुत है कि बावाने के किया बावाने क्यां कि बावाने का प्रमाना हुन बाता है किया बावा है निमाने बावाने बंगान की बावानी की बातारों हैं।

"बगारए ! " बाबाबी ने कटी-भी धाराद में वहां, "कर माला गिर के बात होकर मानुगा हुनूर।"

सान नाहब बोड़ो देर बूच रहे, मानो मुह से बात दिनानरे पूर्व यमें सीम रहे हो । बोते, "कर मधीने ?"

"बह पुता हूं कि निर के बल होकर कथेगा, बारे हैं" विस्मत !"

"यह तो मैं जानना हूं कि सापका मेल-जिलाप काफी है।" "हजूर के कदमों की मेहरवानी से जेहलम से सेकर देगावर टर

हमारे स्वामुधों का फैमाव है, बहिक बादुन तक ! "तब तो मुखे प्रक्षीन है कि भार कुछ न कुछ कर मुद्रिंदे भारत हो मुखे प्रकार है कि भार कुछ न कुछ कर मुद्रिंदें भारता, यह बताहए कि बार्गियों के बारे से कितनी जानहारी एते हैं

'वाष्टियो' सन्द ने बाबाओं को एक बार फिर फ़क्रकोर दिया उनके भय की मात्रा और बड़ गई। कोते, ''गुबारिश कर वृद्ध है हेक्ट, कि मैंने कभी भूतकर भी माज सक किसी बाड़ी की सुरत नहीं

भंदी नहीं," बान साहुव युस्कराए, "भेरा मतनव हुए धोरहे। यानी पाप पाप हिम्मत करके पापने जिने के दिसी वागी को निर् कार करवा बक्ते हो भाषने अवाब की उम्मीद की बा सरती है! इस समय पंजाब सरकार के लिए यह एक बढ़ी सहम बात है। क्योंकि भि तक वो देह दर्बन के समस्या बाड़ी वकह से बाहर है, उनहें काड़ ं जाने के लिए सारी सन्तित समाई बा रही है। दिव सौन्य सबने हादद ने दिन्दी कीमतरों को बाद तक सीषकार दे रखे हैं कि दि काम में बहुत्यता करनेवाली को मुंदुमांबा इनाय दिया खाए। साम समर एक भी बाड़ी को वकड़ता सक वो मेरे लिए मायको बचा लेगा मुस्तिन मही होगा।"

पुल्दर नायाओं होन से पर वर्ष । वे सर्व में से राज कार्य के शिए प्रसार्थ मां पूर्व 4 मात्रा को यो मोन्द्रहा प्रसार्थ कर में दे कार्य के पर मार्व मी, शिलुक हो माँ। इस स्थित को उनने बेहरे वे मार्थ के ए बात माहब कोते, "माइब होने बातों होने के नियो बात है? हिन्यत करने भाहिए, जनता कल सुता के हाम में है। भरने बिने मा एक सारी सरकार के लिए सिरस्ट बरा हुआ है। और बहु की स्थित अपनी सरकार के लिए सिरस्ट बरा हुआ है। और बहु की स्थित अपनी सरकार के लिए सिरस्ट करा हुआ है।

प्रपने जिले का, प्रोर सिस-इन दोनो सहेतों को पाकर बाबाबी के नेत्रों के सामने एक बार किर प्राप्ता का बिन्दु वसक उठा । उन्होंबे पूडा, "कीन, हबूर बया नाम है उसका ?"

"डाक्टर मयुरासिह।"

"कहा का निवासी है वह हजूर ?"

"दुवियाल का।"

"ढुँदियास ना ? ? ढुँदियास में तो मेरी ससुरास है हजूर " "सच ?" सान साहब उछल पड़े, "फिर तो यह काम झापके

सिए बरा भी मुस्किल नहीं होया।"

"बहुत बन्छा हजूर । मननी बोर से सारी खबित लया दूंगा, धारे जो प्रभु को माए।"

"श्यापत्ता पाप संभव होंगे! प्रापको जिल तरह की भी बहायता की बक्त होगी, बरकार को भोर से दी बाएगी। पर एक कार पुनिष्पा नहीं कि धार इस बार भी मार सक्का लोटे तो किर प्रापका क्या करता मेरे कम का रोग नहीं होगा। यन्ना बाइए, पुरा मापकी सहस करें।"

मुक्कर समाम करने के पश्चात् बाबाबी सदशहाते हुए कमरे है

बाहर निवार ।

नित्तनी भवानक, नित्तनी धमहतीय रिवर्त होती वस मार् भी बरवान की प्राप्ति के निए देवना की पूजा करने जाता है गमय वसवा धवान थानी ने भना होता है !

बहुतम में बनकर हिरणाह रहेशन तक पांचर के बीव ही नी को शा थी, बगटे प्रभाव में मानो के पूर्ण हिंगा की पुत्री गए। बटेरान से निकारण जब ने पर की धोर बड़े हो। उनहां ह दोगों पर प्रधिकार नहीं या। बीरी, जिमें वे धमी तक दुपमुंही व समाधे बैठे थे, उनके विचार में इस हर तक मक्तार और दिन् निकारी । इतने करेब, इतना कपट, इस मीमा तक बङ्गाव ! वे में रहे ये- "मही कुछ करने की नीवत से उसने इदने समय है स्वर्ग रोगी निज करना बारम्भ कर राग बा--मुक्ते दौरे बाते हैं, मुक्ते तकतीय है, मुक्ते बह तकवीय है, । बया यह नारा यालह की बागब जमाने वे तिए रवा या ? ऐसी विन्होही मन्तान की हरेगा है निरसन्तान व्यक्ति सत्रेव गुना सच्छा है।'

वैसे तो इस समय बाबाजी कृत्य कई प्रवार के मानतिक करी से भी पीडित थे, पर स्टेशन से चलकर यर पहुतने तक बीरी की उसके मुक्तमी की सजा देने के मानिरिक्त मध्य कोई विवार उनके मस्तिरक में नहीं था। उनकी दृष्टि में सभी कर्दों की जह मही तहरी थी। ये उसे घर पहुंचनर दुष हे-दुन डे नर देना चाह रहे थे, शहे इन्हें

बदते में छाई पांती पर ही लटबना पड़े।

वे जितने कदम पर भी घोर चल रहे थे, उतने ही प्रकार के बोरी को विश्वासमात का दंड देने के दियम मे, सलग-सलग दिवार उनके मन में पैदा होते रहे। घर के निनट पहुचकर तो उनकी बचा पागमों जैसी हो उठी। प्रत्येक सोची-विधारी भात सार्व ही साम उन्हें मुनती जाती, हर मुनी हुई बात उनके मरितार में उमरती घातो । किस कार्य मा कैसा परिणाम हो सकता है—इस प्रकार की उनमें चेतना शेव नहीं बची थी। उनके अन्तर में भी कार्य कार्या कार्या का नहीं वचा था। उनके अर्था क्रिक बाँ उनके अर्था कार्या का स्थानिक बाँ उनके अर्था के स्थ भनेक बाँ उनकार्या के से कार्या के स्थित कार्या कार्या कार्या के स्थानिक स्थानिक हरायों को नहीं समक्ष सका, जब मैंने उसे बाधियों की एक कविता पढ़ते हुए

देशा था ? मुझे तसी समय घरत को नहीं माई वद किसी बानी का वंग मा नहीं मादि की कोई बात सुनकर दंगीनको मरोइने सगरी राउसके चेहरे का रंग विगड़ बाता था\*\*?

बाताओं की श्रांत में बाई रहेंगी बाई-बहुत घरपाओं बे-क्रिक एतंत्र को है बोठि है भी घरिक दोती सम्माने हैं, बार प्रधान मान्य होते की दोतित प्रकार पूर्व प्रोचीन पान उनके यात मान्य ही नहीं था। श्रीमुंगी होती दिलाई से बोर फिर करोंने बन्दे की भीरत प्रसिक्त हैहें हुए प्लुक्ट दिलाई से बोर किया करों ने करा बेही हैं की हैं करते हो भी बाद के ही मीदिता बारे करा पान क्रमार क्रमुंकर करते हो भी बाद के ही मीदिता बारे करा पान क्रमार क्रमुंकर

भी नोने ही रखाया नह हिए चीनन केटी होगी। 'बह मोक्यन हैं हिरा नीटिया उतारे को हम्मे सभी सीटियां ही उदारे के हिं 'चिताते, साम्मा" बहुते हुई बोदो कर्यू हिलाई। दोनों सा मितन कीड़ियों में हमा नीटों के मुद्दे के स्त्री आप सनद या हि बातारी हों होंगी मुसानों ने नामुक्त करना दहान तहा की हमें हम सारी हों से दी तहा नीटियां में सुलात हमा नियते दासाई दी भीसट से ना साम

# 30

रोप में 'चाराम' नहा स्वताह है, परानु बावत के प्रोत्तम से हर-का भी हकत उसके एक में कि विक मताबह होगा है। इस विश्वीय के ब्लीव्ह हतन केहोय हो जाता है कि होते मुंत, प्लेचन तथा स्विद्ध, तीर्ते यह है बद्धाल करें है का 'चोराम के मार्किएक हम मार्किट होते यह है बद्धाल करें है का 'चोराम के मार्किएक हम मार्किट का स्वताह कर मार्क्स के मार्किए के हमार्किए किया है। हिंदी विकार के मार्क्स हमार्क्स के प्रोत्त के नहीं के स्वताह के





र्वरात क्षत्र कार बार को करत कारूब अपने हैंग पर वैसे वहूं an a trata mere dene der be the Be bert a erd blage. Laid a Li Buga bud & sea, & duff die wederund bem ! sitt. tont manite frie in an af ait iele tere. Reta to. and tours a moved dity dotal and and seast filts. 4,45 48 474,44 80 4 w 1 111 8pt 404 5 2 2 8m Ang frate acom some air air or ted once aces de f बारी है का को से बारा कर एकरते. को बहु से बारत बहु का ते test and actual as not a big to a grand and angle to De wat & rout feete a'e ut feert mert a mitte and and the sale many by a a sale fill and much gure ut ere cerne uem et mert fe & un ter? arrent ditt & unt et u'r gert areer & fem au er's 414 mil 4 % 401 mb .

रवड कोई महरू नहीं कि एक खाने सकत से की है की की हुशकार काम करने के तिन काम क्षेत्र कर गया है । यह दुनों में कीरी दश पर कमांश्रदों को बी कि कारी करना रिमा कीरी बह यह बाहे हात्रों मेशी । बरम्यु बाहे हात्रों मेरेवानी किया वर यमरी बीरी के गरीर पर बाबहार में मार्ड वर्ष की दिशा के बी पुत्रा की कारा कीर की बढ़ करें। बढ़ करने दिया की किएनी कारी हिन्दि हैल रही थी, मो एक मनय महि दुर्च मारानारी इंग से उने हरे रहा होता, तो पूत्रदे समय बही यथे निरं चुनता हमा दिवाई देता! जिते देखकर बीरी के तन की पूछा विज-विसन हो जाती। दछ जाके दुछ ही समय परचार किर बड़ी बनाई भीर बकरी बाना नाटक भारतम् हो बाता ।

सर्वाचन परेशानियों का प्रसान बाताती के बहितक से कार्ज रहता। ध्यानी जिल्लानी और करता, से दोनों नाउरे की ओर सुकाजी हुई दिसाई देवीं। न जाने किस समय से बोर्से समान्त हो जाएं। इसी सर र्दे हर समय धुनते घले आ रहे ये इसलिए उनका स्वास्थ्य एक अपाह में ही बहुत गिर गया।

भाग मा विजान स्त्रीका स्त्राक स्त्रा था ! पर के दीनों सहस्य भी। एक सारीरिक वर्ष हे इटनरा द्वा था, हरा मानाविक मंत्र में दी दो क्या का सामा देखने के सारित्य वर्षोक्षियों ने बैठे हो जान-गा सम्मा तोई दिए थे। वह सामाने बन्दर उठने तो हम करावर इन्द्राले तमाने—हैं कुम सब मुझे हम पत्री हैं ठठन भी। 'पर पत्री ये उठा तेला सामद प्रमु को स्त्रीकर नहीं मा। समानक ही एक देशे वे उठा तेला सामद प्रमु को स्त्रीकर नहीं मा। समानक ही एक देशे समान-सिता नाई समानी कर से हो सह हो भी सानीय को से साम मा-सिता नाई समानी कर हो हो। सामानी करी हो सानी सानी में

### 39

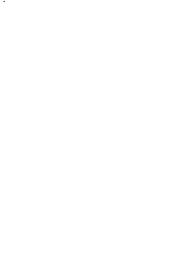
बानावी हर्ग किनो समाज्य सारा ही दिन, एकाश बाद बाजार वा अपनर तथाने के मानिरवत, पपने दुर्वादिने में परें रहते हैं। वजने के पानिरवत, पपने दुर्वादिने में परें रहते हैं। वजने कि पारित्र-विविदिन विमाहती वर्षों जा रही थी। मानिरक स्वरूपा विमाह है। वे सारी रात वापकर को है। वे सारी रात वापकर को है। वे सारी रात वापकर को है। वे सारी पान वजने स्वरूप के विमाह की ही। विभागी भागपी की यह विस्ति, जब बहु मृत्यु एवं औरत के साथ तरह रहा हो। सावाजी माजवत्त्व हों। विपत्नि के से स्वरूप हों। विपत्नि के से स्वरूप हों।

ं सार्वी श्रीनिक्त करियाँ नहारते हुए ज्यूनीन सार-ता हिल शो वैशे-देवे पर में दूर कर नारे, न रार्वा में ते कर बहु करवाना करा की वेश-देवे पर में दूर कर नारे, न रार्वा में ते कर बहु करवाना कर कराया जनके लिए सारंकर हो गया, तो ज्यूनीने कर में दूर बंदान कर तिया कि एक बार कराया हो जाने सार्वे माने शिया कर कार्य करायों करें का प्रकार कराया होने जाने कर कि सार्वा में तिया कि कर कर कराये की सार्वा या जाने एक्सानी कर विश्वा, स्थित माने कर कर से दिल के से कर पर माने कर पर के स्थान कर कर कर कि कर कर है इंदिमान को जाना ही है ने निकटनार्दी होई मिल्यान में सारक सीरे के सार्वा में करीन नहरी कर है, से हिर्म कर से कि एकता। वह बार वाबावी स्वंध महानुम करने कि यह होती व्यक्त को सीतिय उत्तर प्रवाद होती जा रही है। बीरी के सार को निर्माण को सीतिय उत्तर प्रवाद होती जा रही है। बीरी के सार को निर्माण रूप एवं उद्धार के राज्य प्रवाद कर के सार प्रवाद कर के सार प्रवाद कर के सार प्रवाद कर के सारी प्रवाद के सार प्रवाद कर के सारी दिवार के साम प्रवाद कर के सार राज्य के हैं कर सुप्रार प्रवाद के सार राज्य के हैं कर साम प्रवाद के सार राज्य के हैं कर साम प्रवाद के साम प्रविद के साम प्रवाद के

्यामें कोई बंदेह नहीं कि एक लक्के समय से बीरी को सर्वे विवाद के समय के बीरी को सर्वे विवाद के समय के साम के समय के साम के समय क

परन्त बाहर से ही लौट भाते।

भ्रमणित परेशानियों ना तूनान बाबाओं के मस्तिष्क में उड़वा रहता। भ्रमनी जिन्हगी और इच्छत, ये दोनों सतरे की ओर सुड़क्ती हुई दिसाई देतीं। न जाने किस समय ये दोनों समान्त हो आए। इसी भय



रेगा जर तह ये सीटकर नहीं चाते ।

इस विचार से इनकी इस जसमान का इस हो हो गया। परन् उनवे लिए एक कोर उलमल भी रोप भी। यह भी घर नी बारिक मवस्या । ग्राय मा साधन बाहे नाम-मात्र ही या--पत्रा-भेंट का-वरन्तु वह भी काफी समय से बन्द था। दूसरा जी छोटा-सा सावन था, वह या-दिन्दों से बुछ बनुनी करने का, जो फाइ-मंत्र के लिए बाई हुई मुछ न मुछ भेंट चड़ाया करती थी। परम्न विछने मुछ हमन स - जय से बाबानी ने जनसे दुर्व्यवहार बरना प्रारम्त्र दिया-वे भी थाने से हट गई थी। फिर घर में बीमारी, शनटर और दवाई ने मी बोक्त दाल दिया था। बाहर जाने का कार्यक्रम सम्बाहै जिनके लिए किराये चाडि की भी चावदयकता थी। साथ ही उतने समय के लिए घर में भी तो राशन इत्यादि का प्रबन्ध होना चाहिए। यदि धाने साते को वे घर में निमंत्रित करने का बिचार बना कैठे थे, ही क्या घर की नम्नता दिसताने के लिए ? उन्होंने वारों बोर दू<sup>रिट</sup> पुषाई । परन्तु नहीं से भी उन्हें कुछ बाधा की भलक दिसाई न दी? यदि थान जनके पास गहने होते सो उनसे ही नाम बन बाता। परन्तु वे तो रगस्टों की भेट हो चुके थे। उदार मिलने की शाशा भी ही-इतने बड़े घराने या मालिक यदि किमीके सम्मुख हाय फैताए ही दिनत हाथों से नहीं लोटेगा। परन्तु पहले से ही वे वह थोफ उठाएँ थेठे थे, जिसे उठारने के यजाय और साददे जाना, यह बाठ उप्हें वर्ष-सी लगती थी। यदि कल को सेनदारों ने चकर काटने आरम्प कर दिए, फिर बया होगा ? देखने-सुनने वाले बहेंगे — छोड़ी साहब-जादे की यह स्थिति ?



दायित दयागा पर धा पड़ा, तो बहु पूरी वारचारों वे बाद बरी बातव में पर वी विपति एक मनने वायय से किया हूं हो।' जब के बोरी ने पाराय किया, जमने बादा को किया है। हो।' बोरी भी तो बादे बोटागाई के धावस्त्रानुवार क्या की हैं सेवार तकती थी। इतने बड़ी होनती को देखाना किये एक में अपीत हाडा विपाय भाग की है करने माने का बाद पह पारण धामाय से एक कियो ने कियो भीरत क्यान मा जित्त कार्य होने बाता। हेरोजी वा विपाय सामन का तो है-अपायों के क्या क्या या पारामुक्त में क्याना पुरत्न विकास के किया कुछी की मा हुए के स्वाराय पुरत्न विभाय के स्वाराय कार्य की में साथ करता ही क्याना पुरत्न वाया कार्य कार्य कार्य कर कर्य से साथ करता ही क्यान पुरत्न कार्य कार्य कार्य कार्य कार्य धीरों ने भो कीचा चार्य क्यां की हिन्से और क्याय क्या की

दयाता को दिन से कई-कई चनकर डायटर की धोर काटने पर्ग कारी हरारत बढ़ जाने के कारण, वो कामी पीड़ा उल्लाल होने हैं। दितनी बार भी दयाला की नजर बीरी पर पहली या जिलनी बार भी थीरी से बातचीत करने का उसे सबसर हाथ घाता, वह दतनी सड़ा.

~

नमता तया सेवा की मूर्ति दिलाई देता, मानो कोई पुत्रारी किसी देवी की पूरा कर रहा हो।

ं बीरी को बहु 'देवी जी' क्ट्रकर सम्बोधन करता वा। शिष्य-सैवकी की यही प्रधा चली भाई थी: गुरु की पती को 'भाताजी', पुत्र की ''टिक्का साहब' भीर लड़की को 'देवीजी' वहकर बुलाया जाना।

जी लेकी दिन पूचते गए, बोरों के मन में दराया में मोरी सादद जी में में इंडियान में दिन में मोरी में मारी में मारी में मोरी मार्ट्स पूजते कारा में में चौरों में मीर द्वाराम का बाद-मान्य मोरा मार्ट्स म

बाबाजी को घर ने से यह दस दिन मुखर गए थे। इस बार वे जाते हुए बीरो को बुक्त भी बताकर नहीं गए से कि किस और दौरा का ना रहे हैं भी रक्त की टैंगे। परन्तु दसाला को इसना कह गए थे कि सायद एक सरवाह-भर सम बाए।

क धायद एक सप्ताह-भर लग थाए। साज बीरी को सपना स्वास्थ्य सच्छा प्रतीत हो रहा या। टाप को हिलाने-दुलाने से कीई कन्ट नहीं होताया। मुलार भी नाममात्र

को ही था। यात्र उसके भर चने थे।

दयाला इस समय रताई पर में चा। वीरी ने मानाज दी, "दयाला, दयाला।" दयाला मानी उड़कर द्या पहुंचा। "द्याला की जिए हेडीजी।"

"मुक्ते जरा प्रांपन सक को ने बनो।" बीरी ने नहा, "पहले जाकर पूर्व में बारवाई विकासको। बहुत समय के मूद नहीं तावी है।" दिनती के येव से दवाना बाहर बारवाई सामकर कियान कर प्रांचा और चित्र कंत्रे ना प्रांपय हैते हुए नह बीरी ने बाहर तक से गया। वर्षोही बीरी ने बाहर निकत्तकर पापन मान मान मना में का स्पर्धा कर ही जो । पेंटनाप्यर का च निवास करा वाच पूर्व हिंदा हुए। भीत मारे दाहर में स्पन्न हेंदर होने प्रकार हिंदर में इस्तार की बहुत को हो को दिन को के मुस्तित हिंदर हो। चौड़र में दुस्तार्थ का नवा वनावाद कर्यों को दे ने दिन को चौड़र पान करता, मुल्ता कर्या कर्या करता करता है। भी भीत करता भाग चार नुस्तार के बोल को सो का हता है। में मार्गित चानु के में मार्गित की हो। में हताना दे के मार्गित करता है।

. .....

वन भागाई का बैटानकर कामा कि करने कार के नामा का कि पुत्रत हुई, की बड़ कि मना काम

देशना," बीती ने बीतीजी मुख्याहर में स्पेनहा,"सह र्य बुध दिएने दलारा है ।"

वेशमा प्रधान के इस बोध में इस धतुनन कर, निर मुझर है बोना, ''मैंने मो बुध भी गरी बिसा है देशेंगी। बुस्ती ने बस्सा है या देशीनी न''

"इषर धार्था।"

दयाना न बुच्छा हुमा एक काम माथे बड़ा । "मीर भावे मामो ।"

इस बरदान को पाकर दयाना का मामा ओरी के कदमों पर ना दिना, भौर भोरी ने उसके सिर भौर पीठ को सहनाने हुए उसे भपने पैरों पर से उटाया। ्रे नानाजी के इस बार के धीरे ने पिछला रिकार्ड तीड दिया।

भी पे महे दार्गीटिक रूप है। स्वस्तु हो मुझी मो, परंजु यह सामाय उन्हें है पह किया प्रशास रोग में कम नहीं मा, जबकि उनके पन है में महे कहें हैं पह किया प्रशास रोग में कम नहीं मा, जबकि उनके पन है में महे कम नहीं मा रोग रहे हैं में । उनके बुताबरीर है भी जायदा दिया था—पी गितिशीय पहुंचने कम जब यदि है है उन माम कम अगीह हो है पर भी भी दे कमी जब दूरा नहीं पर कही । यहूँ की भी सार्थ के नाम दिवस में भी दे जब उनका वालाय पुरास हो । यहूँ की भी सार्थ के नाम दिवस में भी दे जब उनका वालाय पुरास हो । यहूँ की भी सार्थ के नाम दिवस में भी उनका माम माम अगीह भी उनका माम प्रशास हो पर सिंह के पर सिंह प

भूगावकार सपन विशेष ढग बता गई थी। फिर उसे एक एसा सा मिता कि उसके लिए पत्र लिखने का प्रश्न ही समाप्त हो गया।

सुद्धकाल में रामाणारणों का विकास खून जोरों पर था। हर निश्वीको सुद्धके सामाध्यर पत्रने में शिल्व भी कोगों की प्रतिवाद महत्री मांग के अस्तासक पूरू कर बेसे सामाध्यायणों के विकेशा पैटा हो गए। हिराजुर में भी इस तरह का एक धारमी कई दिनिक पत्रों का सीमकार्तान। भीरों ने बहु काम ब्याला के मुद्दें कर रक्षा था कि एक होंगे की बात कर एक सामाध्यापत्र कारी स्वामा की

स्पी पश्चिम के एक प्रकृत पृक्ष दिन नातिकारियों की स्थी-नार्यकों पुताबकीर की गिरफारी का समाधार पढ़कर भी पे के दिन के और भी पश्चिम प्रकृत का भी कर चरायु उसने कर पुत्रकारिय भी गिरफारी का समाचार पढ़ा, तो उसे विश्वास हो गया कि पुत्रकीन भी पड़ा आपूरा। बहु सामती थी कि सुत्रकीन उसी पुरुक्ताहरू की पार्टी से काम कर रहा है।

बीरी की बो कप्ट किसी करवट भी चैन नहीं मैंने दे रहा या, मह चा, क्रांरिडिड सरामा के दिवय में, बिच मृत्युदंव मुनाए सगवन दो महीने का समय हो चुका था; और बीरी में गईर अब समा रहता या कि म साने चुचे कब प्रांती कम साए। एक बार उन्हें रहने भी मालाश धीरी को हर समय तहाती रहती। परन्, बहु स्क्रीक् उसके लिए

ar erement un que er figt gub mit gefen, se une and a faries of an and use of any of for each

Chariste Dave angereperater must be at ate ate a mind meny, min den & bit buet ande ela m. mig manife al die beliefe fatthe? million # # f # 9 tan 63 don & Wedern 4- M ], drid 21, und Cateram Air adia beite bergelänge auf met mm... wie ere git mege mefen je

ATTARE AR AUT MIT ME ME Men med & la ab telt & are and are rear of any ... a trains aims to as E a) and able an antionian tie and alachtes, an enteret fi d'it at fetere etta en fetremere est f erini at miche stit ai fi aif aniel fiele trait and up went atte da dis dip anded anneed & 45. इक्ते दिशी तह भी देन करह प्रकी । दस्ता यह हैं ही बा दौरी म रहेकर प्रवश एक रेना बहारा बन मुद्रा का बिनने हरे वरिकारि aft ni erei er me ere aber were et art fetter ift. de altft unb feereiff et eregte weet. de ft ermi f miret fenfen girl mift i me at mib 'efferiet g'ab aff सोह मही रहा था। विशेषक्या अब में बोरी में यहका पूरा अन्य देश Jutter mirre ar feet, en it et and morrent gut बचार के मार बनाल होने सब मानो बरवर देशी स देशन हार् ही हुई है बन्दि धारती हैती धारत भी अने बरान बरानी का रहा है।

दवाना रवर्ष को लीवान है दिसार पर बनुबक्त करते गरा। बरम् इतना होने वर भी सभी-सभी तनका सन बाराडोन ही नार बंद बताकी नक्ट बी ही की बाहरित की नहराई की बाट कर, उनके हरव तक जा बहुंबती । सामिर बरा कारण है कि बहु देती, देती हैं बुर्च कर निर्माण (अप्रस्ति कारण है हि यह दश, पार ह हुए भी हर समय किमी चामचाह को तकत के पुक्ति पारी पारी हैं तर्वेद्यशितमान देवों—को दमाना की नुष्य को सहत कराने से बिन्ट रसाती हैं—कार पारते को चैंदें नहीं क्या सकते हैं द्वारों बाला में

विक्तित नहीं कर सकती? भीर एक दिन जब दयाना की इस विज्ञाता ने बहुत ही भातुर कर दिया तो इतना बड़ा प्रश्न उसके

छोटे-से मुख में से निकल ही पटा।

दोपहर के समय बीरी, अपनी लाल रंग की कश्मीरी शाल-जी उसके विता ने गतवर्ष उसके लिए खरीदी थी- मोइकर मांगन में घूप वाप रही थी। दयाला की लगाई हुई सक्जी-माजियों की विशेषकप से मटरों को फूप सगने घारम्म हो मए थे। मूली घीर सलजम की पतिमां भी बड़ी हो रही थीं। बीरी के प्यान को इस समय वनस्पति के रत सुहावने दश्य ने बाकपित कर रक्षा था, उसकी बोर वह ध्यान से देख रही थी, इतने प्यान से कि उसकी पनके हिलना भी भूल गई थीं। थोड़े समय के पहचात जब ये पलकें हिसीं तो साथ ही जनमें से दो बर्दे निकलकर उसके वालों पर फिसल माई। बीरो ने एक लम्बी माह भरी। वसको दृष्टि क्यारियों से हुटी। तभी उसने चारपाई के निकड दयाला की देला, जिलके हाथ युढ़े हुए झोर सिर मुका हुमा या। उसने जब दिनिक ब्यान से देखा तो दयाला की शांकों की भी उसे बही दशा दिसाई दी, जैसी उसकी धपनी थी।

"देवीदवाल !" गहरी भावनता से उसने पुकारा, "वयों, क्या

"देवीजी की किरपा है जी।" दयासा ने जमीन पर बैठते हुए उत्तर दिया ।

"मासें नयों भरी हैं ?"

"नोई बात नहीं, देवीजी ।"

दयाला के मन में बया है ? इस घर भीर साथ ही धर के सदस्यों के विषय में बास्तविकता जानने-सममते के लिए दयाला कितना

के निष्यानिक महावत हुमार दाराना के जब बहु दूर करते नै दुर्गाचुंग की बात कर केरी हुमारा वृद्धि क्या वृद्धि केरण गर्दे केरण करियं कारों को समस्य के करण के बहु हुई केरण गर्दे केरण करवा में की हुई केरण के करण केरण करता कुर हुई मेरावा कर दूर करवा में की मेरा केरण करता करता कुर हुई केरण मेरावा करता करता मेरा करता है की मेरावा करता हुंगा किरो करता है है

बंदारी को कर में बार यह बही को में बहिन पहार ही बहा की बाद का मिला हो के में बी बोरी का बी कहाना में महार के कर के मार्च किया मी देश में बिद हो हता के मीत करते हैं कर कि महिनी के में पर में बहाती थी हो निवासे कर मुद्दें मिला का पाने महिनी के प्रकार को मोताबार देशा—बीच में पूर प्रकारण पत्ती

ं बर्गार्टी, ह नाथा का यांनाब बारेस, जो अनुषि देशवादियें के नाम देश के ने अवद्रान

बीते के प्रक बहुता द्वाराम दिया-

वतनवासियो ! दिल न दा जाणा। प्यारे वीरनो ! चले हो ग्रसी जित्ये, एसे रसतयों सुसी वी ग्रा जाणा।"

करिया पद चुकने के पश्चात् बीगी ने सखबार पकदा, जिसका पहुंचा बीर्यक पा--- 'त्रातिकारियों के दण्ड के विषय में बाइसराय का मिनिया निर्मेश ।'

पितका बीरी के हाथों में कायने लगी, परन्तु उसने उसे तब एक महीं छोड़ा जब तक उसने उसे नीजे दी गई सारी खबर पढ़ न ली—

"लाहोर, १२ नवस्वर --- नाहोर कौशिपरेशी केन के मृत्यूदर पाए हुए समियुक्तों की नाइसराय की श्रीर से भी जा रही निगरानी का निगेय इस तरह हुसा-- २४ दोषियों में के १० का दक मृत्यू से काले पानी में बदल दिया गया। सेव ७ का मृत्यूदण्ड पूर्ववर्ग रहा। जिनके नाम से है--

- १. कर्तारसिंह सरामा गांव (खुधियाना)
- २. बक्शीशसिंह गांव शिसवासी (अमृतवर)
- ३. विष्णुगणेश पिनले सटे गुधा गांव (पूना) ४. जगतीयह गांव सुरविह (लाहीर)
- ४. हरनामसिंह गांव भाई गुरावी (सियालकोट)
- ६. सुरैनसिंह नम्बर १ गांव गिलवासी (
- ७. सुरैनसिंह नम्बर २ वाव विस्तुत्राहर.

्रावा को दो-तीन दिन के

विषय करें क्षाना है से सहस्रों का तो हुई व को बोकर हुए हैं दिल्यों से के कार्य रिक्टल कारण करें व कर है हैं त्यारण ही तारी की रिवेट से के कार्य रिक्टल कारण करें व कर है की तीरी

#### 38

इन समियुक्तों के भय में तो उनटा त्रेल-समेशारी ही कारते हैं। सपनी-सपनी मोटिरयों में जो इनके मन में साए करते रहें—शेंड



कोटरी में राहा रहता है, मुनाबाती बाहर । कोटरी वी टर रतनी पनी होती है कि कटिनाई से द्वान बाहर निरुक्त गरना है।

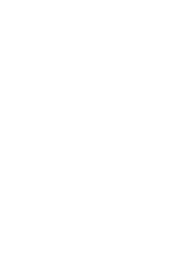
ह मा मुलाबात के लिए एक गुविशाओं दी बाड़ी है होरे से हमा धरिक तमस बिलात है, को परिक है धरिक एक दोने पड़ता है, पाएं बेबल जोती कब लियति ठीक रहे। वर्षि विशे स्मे विषय में सतरे के लागा दिलाई पड़े, हो तमस से हुई से मुलावि को हहा दिला याता है। यह इस लातों ने बारे में हेला मन नहीं मी

सवामों वी बड़नी के पाचानु कांनी बाने सातों बीडां सन्य बार्ड में से बावर बाद कर दिया गया, जिनवी कोडीसीडी दूगरी से सन्तर पर भी।

मानकों भी तारील एक दिन और बहा हो नहीं हो होती। मानकियों का तीना बचा रहा। कारण, होने सारीश तत्राव्य विद्याही व्यक्त नार्यन रहे। सीतिकारी भीदवी द्वारा व्यक्ति पुष्टना का भव नहीं था, वरानु मुलाकातियों के दिवस में शो बी में मतरा हो चाह न हो, जन मोर्सो को मानी निवसायनी पर बक्ता है होता है।

भाई कोई निकते ही हुद्द हुएव बाता हो, कर धारिवार है भी हुन्तर्ग कर हिए जुका। बारिवारी बाते, कुप्त को मानक वर्षण्य मिले बहित कर कार्य मिले बहित कर बाते हुए को कार्य हुए हो मानक वर्षण्य मिले बहित कर बाते हुए को कार्य हुए जा हुई हो कर है। कर बेंदि कर बाता के बाता के बित्र दिवार है है। कर बाता कर बेंदि कर बाता के बाता के बित्र दिवार है है। कर बाता कर बेंदि के बाता के बित्र दिवार है है। कर बाता कर बेंदि के बाता के बित्र देवार है है। कर बाता कर बेंदि कार बेंदि कर बेंदि के बाता कर बाता के बाता कर बेंदि के बेंदि के बाता कर बेंदि के बेंदि के

विन-भर माजादी के बीत गाता रहा था। पर इन तरानों में हिनी भन्य ने उनका साथ नहीं दिया। एक ती कोटरिया ही एक-दुनरे हैं



बैंडने गरी देवा था," बहुने हुए बीगे में घरने टिट्टरे हुए होनी। गमाओं के सम्दर धरकाकर सरामा की मुद्दिमों कर—वो बनाने मिपटी हुई बी—टिका हिए।

..

कुछ वो बीरी के सब्दों ने बीर कुछ बनके स्वयं ने, दोनों ने कि कर सरामा के समस्त सरीर में एक बीडाना स्वयंत्र के हिर्दा । वी बाहा कि बहु समाबों को छोड़कर बीरी के टिट्टूरे हुगों को सबने हैं।

बाहा कि वह समावों को छोड़कर थीरी के ठिठुरे हाथों की प्रपर्द हो। में लगेट से । एक्टम समगोबे और सकत्यात हम दूसको देखकर वह मौबन्ध

ना रह गया। सभी तक भी जो निश्वाम नहीं हो रहा जा कि वह व हुए वह देश रहा है श्यान के दिला कुछ बीर है। उसकी दार्थ गेरी पर कुछ ऐसी गइ-भी गई थी, मानी इनकी पूर्णानों को किसी ने वस दिया हो।

"मुस" मुम" रमुबीर "मुम" यल करने वर मी बद उउने दुरा बावब नहीं निकस पाया तो बीरी ने उनकी मुद्धियों को बासपी हुए बहा "साप बबरा बगों गए, मैं नावनूब हो रसुबीर हूं। बोरसाई निसने बाई हूं। सापने ही तो चुना मेबा वा !

सराम के स्वरण हो थाया कि इससे पहले भी बीरी ऐसाड़ी वर्ष कह पूकी है, बिनका सतलव था कि उसीने उसे बुना मेजा है। बीरी के हिंदी में और देखात हमा, सारवर्ष से बूना कह बोचा, ''बेन के किसी भी भूपाकारी को तार नहीं दिनवादा था।'' उब बचने भाग बाहर देखा वो थीरी पहेंची भी। सायद क्षिपाड़ी और बाईट बसावे

से बाहर बते गए थे! बाहर की लेंघरनीरिट के प्रवास में सरामा ने ब्रीट भी बच्ची तरह पूर्वित नामर देशा समायों से सटी हुई बोरी बहु रही थी, "मुठ मोत रहे हैं? क्या सायने सदेसा नहीं नेजा था?"

नहीं में उत्तर देने से सायर होशी सपना निराहर हमके हैं बोता, "विराप्यदि उत छुटे हुए कागड़ को तुन 'संदेता' तमकी हैं तो "तो सायद पुरहारा सप्ताका ठोक ही है। मैंने किसी सार्य हाए कहना भेजा या कि 'पंताम' जब भी मकासित हो, उसकी एक प्रति समुक्त पते जा पत्ति

"पर तुम्हें मुलाकात की बाजा कैसे मिल गई, रचुबीर?" हैं हैं "मुक्ते पता था," वह बोली, "कि किसी गैर को प्राप्ता नहीं मिल पकतो।"

्रण्या। \_ "मही तो मैं पूछता हूं कि फिर तुम्हें कैसे मिल गई?"

"मुभे ? मैं देनर की कोठी चली गई थी। मुलाकातों का समय

समाप्त हो चुका होगा, यह मुक्ते पता था।"

"किर फेसर ने तुम्हें कैस पाता दे दी ?"
"मैंने उसे बताया कि सराभाजी मेरे पति हैं।"

भग वेश बढाया कि सरामाजा मर पात ह

ं "बीहां।"

"यह सो समने मजीव पालड किया, रघुवीर !"

"पासंड किया या जो कुछ भी किया, धाप इस बात को छीड़िए ।

कोई मतलब की बात कीजिए।"

थी मिनट की सामोशी के परवात जब तराजा ने हॉट खोले सी उनपर मधुर-मी मुस्लान थी, "तुम्हारा भैवा ठीक ही कहता या कि यह सड़की धैवान की नानी है। घटना गह तो बतामी कि इतनी कम-चौर क्यों है। गई हो? सब कछ सच बताना।"

"एकदम सच ?"

"at \"

सब उत्तर में भीरी ने धपना दुवंसता का कारण बतला दिया।
"बाह-बाह !" सरामा प्रमावित होकर बोला, "नानी नहीं, बस्कि
तुम्हें सो पदनानी कहना थाहिए।"

भीरी हत्का-सा मुस्कराकर बोली, "क्या करती ! सारे जीवन में

यापने एक ही बात ती कही थी, बहु भी न मानती ?"

"मैंने कौन-सी बात वही थी ?"

"मूल वए ? विर्वतार होते समय क्या धापने मुक्के सदेश नहीं भेजा वा कि नानी से कह देना कि 'एक म्यान में दी तलवारें' नहीं समा सकती ?"

"हूं।" खरामा इस हुंकार के परवात् चुप हो गया।

"बापने क्या मही कहता भेजा था ?" बोरी ने किर पूछा । "बहला दो भेजा था, पर मेरा मतलब ....."

"मापका मवसव क्या या ?" कीरी ने उछकी मीर ताकने नए

है। मैं यह भी सुन चुकी हूं, जो प्राप्त साथियों से प्राप्त बहा के कि फोसी चड़ने के सिए प्राप्त क्षामिए उताबले हैं कि दूसरा नर्स्य प्राप्त प्राप्त कार्यों को किर से प्रारम्स कर सकते। यह बाउ

कही थी या लोग ऐने ही गव्यें हांकने हैं ?"

"कही थी, रघुओर। केवल कही ही नहीं, बस्कि यही मेरे के मिलम इच्छा है।"

"गोवा माप पुनर्जन्म में विश्वास रखते हैं-वर्षों ?"

"वेशक, पुनर्जन्म के सिद्धान्त में मेरा शत-प्रतिश्चत विश्वात है "भीर भेरा भी। तभी तो मैं चाहती हूं कि यदि इस जाम ' भागने देश के लिए कुछ नहीं कर सुन्दी की सुन्दे जाना हैं प्रत्यात हैं।

पाने देश के लिए कुछ नहीं कर कार्य है। हार कार्य के समाद है। कर विचारती । पर में हो पाय बंदो पुरत नहीं, जीक एक नगीर क्ला हैं, जो आपता करके पाने विचार कर रही न कर कार्य क्ला हैं, जो आपता करके पाने विचार कर रही न कर के विचार के बात पान मुक्ते सहयोग कर ते है। इसार करने में किया के साथ पान मुक्ते सहयोग कर ते हैं एक साथ का मां विचार के सुक्ते दिन के नी केतर की सहार साथ पान पान पाने कर कर पांडी हुई यह बात रंग की शांत पान देश रहे हैं है वा पायों मुनाहता करने के लिए पर ते निवार पर्दी भी, जी तिने हो डां नहीं, बाल सामू बातकर प्रोड़ा सा

सराभा के हायों में घव सलाखों के स्थान पर बीरी की कताइने

वी। भीरो पर को नेत से नहीं धांचल रता था रहें "क्यो. सात विद्या," मरामा की धाराई महा होतों का रहें भी, "पर साती, विद्यास रहाई जिए तोन प्रत्यों जाता है। तह तो कल का हैं आप कुछ कहा की प्रदर्शन है। वह तह कहा है आप कुछ कहा की प्रदर्शन दिवालों है। वह तह कहा है प्रत्यों कहा कहा की की है। स्वति रहा कहा है



विद्वार में से पह से में एन बान धारने पूछना बाहती हूं " "पूछी रचुबीर, को तुरहारे मन में धार !"

"मुन्दे पूछना नहीं है, बहिब कुछ बाबने के निए पार्ट हूँ—हैं "बढि चुना नहीं तो नुम जबदराती भी शीन नोगी," व मुख्य गया, "भीतन की मानी बचा नहीं क्ट मकती है"

"मै ... मै ... " बीरी वृष्ट दश्वर बोली, "बाज बर-प्रास्ति बारा मेचर बाई हु-- दुकराइए नहीं।"

"बो, बीरी !" सरामा मारावेश में लोज वा रहा बा, "वृष" मूम\*\*\* भीर दसने धाने बहु बुछ नहीं बोल सरा ।

"वह दीजिए एक बार--तमारन्।" मीरी वी घोषों में बार्च के बड़ी भाव वे बिग्दें ठुकराने के लिए मनुष्य छोड मगवान वी में हिम्मन नहीं। घीर खनीकी गहराई में से सरामा की जबान ने पिटन

मा हरकत की —तः "समान्।" "क्याबाद।" "क्याबाद। " यह हो हो को दबती हुई बीरी गङ्गद हो हरे क्याबाद। " यह के हायों को दबती हुई बीरी गङ्गद हो हरे कोती, "काजने मेरे 'सान्। की लाज रस सी।" "पर बीरी," सरामा इस समय भीरी के प्रति सहाद्वप्रीत के

मार्थी में दूबा हुमा या, "यह मांगकर सुमने सपनी जेवानी से विजना सम्याम किया, यही में सोच रहा हूं! इतने सतरों में दुमने सपने की ""

"छोडिये भी।" बह नई हुल्हन के से नक्षरे में इसके पने के हुल्बान्ता भटका देकर बोली, "ऐसी बातें बहुकर भारतमाता की एक बेटी का निरादर करेंगे सो मैं भगड़ा कर बेटगी।"

नेवस प्रेम ही नहीं, बीरी के प्रति खड़ा के 'न में रंगकर वह

होता, "टीक वर्षी में तुम भारत की बेटी हो, तुम्हारी बार्ने तुनकर पहले हो मैं भयभीत हो उटा था कि सादर तुम मेरे मन को कमबीर बनाने के लिए बाई हो, पर सब मुझे पता बला कि तुन मुझे एक नई पत्ति देकर बा रही हो।"

"ये प्रसंता की बातें छोड़िये।" बह हंत पड़ी, "बाद माणकी मुममें कोई ऐसा गुण दिकाई दिया ही तो बाय मुक्ते बागी ही पराइंदे देत रहे हैं, नहीं तो मुक्त बेंते गंदार सड़वी से बना इस ठरड का कोई गुण ही सकता है।" ्र राज्येत सा कम सभी यहाँ तक ही गहुंचा था कि भारी-सरकार हों ही सा मुक्तर रोगें ना स्वाप भंग हो गया । उन्होंने देखा कि राज्ये दे बहु के स्वीप्त, को बीरी मी मुसाबात के लिए लाए से, गुजर हों है, जो राज कात संदेत जा कि मुसाबात के लिए लाए से, गुजर होंगा राहरें। वादि सरमा भी जगह कोई सम्बद्ध मितन होता तो प्रश्न क्षणात कर को मुसाबात कमाण करता थी गई होतों; रह सरमा के हता तो नहीं होता हो सर सरमा है हतते बात कहने की निवामें हिस्सत हो सकती थी।

के मिका मेरी हुइला?" तरामा के बेहरे रूप प्रमानता बीर दया मिका मार में, "हमारा स्वयंत्र हो गया। परानु एक धान सुन इस हो। हिंद सह बता पूरा दश को में हमानु के दे के कि नाम में दश पर इस हो है। हहतुन के हाम पर हुए ग कुछ तो प्रमान हो जाहिए पर महो है। हहतुन के हाम पर हुए ग कुछ तो प्रमान हो जाहिए पर मुद्दे के हिंद कर कारो भीचे की धीर प्रमान किया तो हमा कि मार के पीतन का एक मूला पराह हमा के करकर स्वामानी हारा धान्यर के सा नाम है। वहाने मुक्तपर बहु उठाना धीर भीगे को देवा हुया मीता, "भी, दे से हुई दिवानों की में दसान तेना।"

हरे चान के बात में तह समझ था। हरे चान के बातों की बात हो, औरो में उसे यह चहते हरे चान के किया में तिकारी है। तभी तो विवाह के मच्चर पर सोत के बात वा चान समझ सम्बन्धार बनातें हैं।" भीर बचने उस में दक्षार हिमा के साम का समझ

"से मेरी रानी," बीरी के हाम को होंटों से छुपाकर सरामा बोला, "हमारी सुद्रागरात्रिका यह यहना चुम्बन।" चौर फिर बीरी ने भी वैसे ही किया।

इससे बहुते कि लोटने के लिए थीरी करन मोटती, सरामा—को प्रकं भेड्रेट पर कृष्टि मदाए बहुत था—ऐते बोल उठा मानो उत्ते भीरी के भेड्टेट पर कोई घतिनटवारी मतक दिसाई पड़ी हो, "मरी इंट्रेन, दुन्हारी कांकों में यह बना देख रहा है ?"

नार्य के नहर पर काड आनंदराश अंतर विदास पुत्र हो, अरा हिन्दुन, मुत्तारी सांबों में यह बंदा देख रहा हूं ?" "हुए भी दो नहीं," मीरी बोली, "हरिए सता वह मांसू नहीं, सिमन की मुशी ने पत्रकों को उनिक सीमिल बना दिवा हूं !"

विमान का मुखा न पाला का लाग का मानता बना राज्य है। "कहूं।" यह विरोध में बोता, "बाहें की सी हो, यही थीख मंत्रिकारियों की सबसे बड़ी धनु समझी बाही है; बरा माने बहेगे"। बोरी वा माना ससासों से सर गया। सरामा ने उससे सात का कोना परकृतर उसकी धार्मों पर फेरते हुए कहा, "बा को मह बीड कभी भुतकर भी भारतों में नहीं सानी चाहि। "भूत हो गई," बीडी सलाक्षों को छोड़वी हुई बोली

"भूल हो गई," बीरी सलाकों को छोड़तो हुई बोली, दूसरे जन्म में मिलेंगे तो झार मुन्हे बब से दूद पाएंगे।" "भच्छा बीरी , भगवान भली करें।"एक बार किर

"भन्छा वारा, अगवान भन्ना कर ।" एक बार । कर भी पुमकर सराया ने उसके दोनों हावों को एक प्यारी-सनाकों से माहर कर दिया और बहुा, "भन्जा सेरी र राजि।"

"पुन राति, मोरे रा" जा ! " उच्चारण बडावे सहय पूर से बावज का प्रतिका आग हुट-मुद्रकर निकर कहा ! एक बार किय उम्मी क्यान मिलानता के बारण व्यान क्यान क्या

"धाप मेरी चिन्ता न करें।" बीरी की प्रावान क्रोपकर मुख से निकती, "धाप प्रपत्ते पर निवन्त्रम रखें। कहीं क्रम म म नार्ण तक्ती पर जाकर।"

न जाए तस्त पर जाकर।" इतनी बात कहुकर जब शेरी ने कदम मोड़े हैं पाई जा रही ये पनितगा दूर तक मुनाई देती रहीं—

'मजा इस्के का कुछ बही जातने हैं, कि जो भीत की जिल्हमा जानते हैं। नहीं जानते हैं कि सन्जाम क्या है, वो मरना महज दिस्लगी जानते हैं।'

### 34

नावाभी जब घर से निकले सी छनना वि महले वे बुडियाल जाएने भीर एकाप दिन बहां मनुरातिह के परवाशों से कुछ पना नवाने का मन जनका विचार करती ही बरल करा। जाहें याद



मरवारी वाधिनवां को नहाका में हिया कीतना बार्ड हैं प्रशासन है। विषय वाधिनवां हो तो दिनों छोटेनों म्यांत्र वार्डिंद विरोध विध्यात का कोर हमने में बहुद बारामी दिन को के लिए बारेंद्र में बहुद बारामार को बहुद बारामी दिन को विध्यातमानवा उनके बारामी के लिए बहुद को हमा के की विध्यातमानवा उनके बारामी के लिए बहुद को हमा के की विध्यातमानवा उनके बारामी को का का की विध्यातमान विध्यातमा क्याद हमने दिन बारामी को स्थाने के की व्यवसान विध्यात क्याद हमने दिन बारामी को स्थाने के विध्या नामा, निष्मा को दूर कर के नामी वहां के तम्हों हमने विध्या नामा की मोरवार वा प्रथम दिना बाग । प्राप्ति मोरहें वह लिए

दो दिन पेमाबर दनने के पात्रा पुरे मुबद्ध माइबरे सावारी सारहर गबार हुए, भीर राहि के इन बजे के महमब बादुम जा पहुँच। बार में बारा हुए, भीर कार्य बेबन कोहड़ बडो में बारे कार्य पर्देश दिया। बारो पहुँच पर बाराजी होंगे माग्र मानो 'याद बडाव" में किंगो कार्य देश ने माने वर्गों पर निवाहर साल्यार में बादुण मा

पटका हो-नहां पेसावर धीर वहां धक्यानिस्तान !

नगर नहि यहींने देगा हुआ ना, राष्ट्रनस्य ने बहुत जारा की नहिंदा मां, डिंड में बारायों भी साने नहेत हिंदा कि उन्हें पहुरागों में बार पी और राष्ट्रग पुरस्कर ने उनसे से एक के चर मां गुड़ें वार्डे दूस्तानों ही मंदिरा को साराम जानामा, हुई बारों सार साहस मां हुने सामार्थ मुक्ते नहीं और देश ही देशे प्रिकार मां हुने का मार्थ मुक्ते करी और देश ही देशे प्रिकार में सामार्थ मुक्ते करी मार्थ सार सान करा हुए ही चर्मों में से एक प्रमान को में ने वहनी सहाराम थे।

एक मनान के सुनाजित दुनक्से में बाबाबी की इट्सचा गर्मा।
नगर के दिस दिसी भाग में भी कोई सिप्य-तेवक रहता का उसे
गुक्ता भेज दी गई, जितके एकस्वक्य दर्धनावियों की भीड़ कम दई।
बद्धानु सिप्य-तेवक सन्तेनी यमासित मेंट सेहर चरण-बस्ता करते
के लिए स्वरिच्य होने सते।

बाबुस में प्रवेश करने पर उन्हें शिष्य-सेवकों हारा विकता मादर-



की प्रवाशना वी विवे हुएव वह तथा को सहते बिंदू बाँज क्या । याही अब में आपना व्याहण हैगा बता बिंदा होती महार्गाद के दिल्हा थी गाँड मुन्त हैं है का जानों में बेश का मुर्वेदिक हैं, बॉल्ड प्रदर्थ आंत्रियारी बिंद्यों में प्रविद्या है, बॉल्ड प्रदर्थ आंत्रियारी किया हो बारे प्र और प्रवेशी में बुद्द पुरस्त है । बात्रव है बी ब्याह को बारे प्र की दिस्तान भी । मारीने प्राप्त मंद्र के प्राप्त की दिस्तान की का स्वीधि मार्गित वह दिस्स कि की ब्यायरी महत्त्व को स्वाह की उस्ता है। प्र महत्त्व का स्वाह के महत्त्व की स्वाह की महत्त्व की स्वाह की स्वाह की महत्त्व सामार्ग में की मारार्ग का प्रवास का स्वाह की स्वाह की सी मी मार्ग कुछ दिस्स है की महत्त्व की हिए महिला में कार्यों की

"मार वस तब बारत जा रहे हैं सब्दुर की ?" सबूर्ताहरू हैं इता।

"बहुर जरदी, सावद एक-से दिन तक ह"
"ती सान सेहरवानी करके सेहा एक सावद्यक बान वर्षे हैं एने समितान से जादिनक स्था है हैं

"बाब के बियन में बारी बड़ी।" बाबाबी बसाराने ने में. "मार निरंपर बचन बायबर देस की रोबा के निरंपित में हुए हैं। यदि मारके निए सपने बाम म्योधावर करने पहुँ हो बीजे पी

हरूमा । बताइए, मैं बारची बना लेवा कर सबता हूं ?"
"मामना सनिक संगीतना है सत्त्व मो । मैं बारके हारा हुए

यावायक बागवाय भेजना बाहुता हु।"
"मीजिए, यह भी कोई बाजिन काम है? जहां पर बाहेदे बहुने पहुचाकर तभी पर में कहम रार्था।"

"बड़ी मेहरबानी ।" मचु पावित ने प्रायंना की, "पच साहोर गई-चाने हैं। मैं पड़ा-टिकाना नित्त बूँगा। मह को मारको पड़ा होना कि हमारे बात सावियों को सीझ ही बोबी पर सटकाना बाएवा।

"मुक्ते पता है," बाबाबी बोसे, "क्तॉरसिंह क्षराया और उन्हें सामियों को। ईरवर इन सत्याचारी नोरों का सत्यानाध करें, जिन्होंने " भीर ने कितने ही बड़े-बड़े खाप गोरों को देने सरे।

पत्रों का सहैदस प्रकट करते हुए दा । समुरासिह ने बाबाबी की



सम्बन्धियों को कभी किसी ने हुछ कहा ? बासिर बंदेंबों का क न्यायपूर्ण है, कोई नादिरसाही राज्य हो नहीं है।"

'मधुरासिह' का नाम मस्तिष्क में बावे ही उन्हें एक बौर का विचार था गया, जिसके सम्बन्ध में उन्होंने धमी दक्र होता नहीं या-'भीर उस पुरस्कार पर भी सी मेरा ही बांधकार है पंजाब सरकार ने उसकी गिरपतारी के लिए रसा हुआ है, जि संबंध में उस पासही ही • सी • ने उल्लेख तक नहीं दिया दा। उह बदनाशी घब मेरी समझ में धाई । बास्तव में उछने तो धनु की छा पर सांप पटकते जेंगी चतुरता रोली थी। सांप मरते पर भी रन बिजय, भीर रातु मरने पर भी उसीकी। सपराधी के पकड़े बारे प सारा श्रेय जरीको मिल जाता भीर मुक्तेतो गह यू ही दात देश

उसने मुक्ते वितना बेवनुक बनाया ! ' इसी अकार के उठते-गिरते विकारों में बावाजी ने रेन की बार समाप्त भी। गाड़ी लाहीर स्टेशन पर पहुंची। कुली की बाबाउ देने की भावश्यकता नहीं पड़ी । गाड़ी दकते ही दो-तीन नुसी दिले में म धुते । फ्रस्ट क्लास के यावियों को इस प्रकार की मुविधाएं स्वाहाहिं

रूप से प्राप्त होती हैं। बहुत-सा सामान या, जो वे काबुल से उपहार के रूप में हैकर भाए थे। कुली ने मजदूरी के लालन में भनेले ही सारा सामान इत लिया । बाबाजी मागे-मागे चलने लगे। प्लेटफार्म पर चलडे हुए सहसा उन्होंने एक झलबार वाले की मावाच सुनी, "बातों बादिनी को फांसी दे दी गई।" उनका स्थान उधर मार्वायत हुमा। उन्होंने भट से एक समाचारपत्र सरीद लिया, जिसका पहुना ही शीरी उग्होंने पदा :

"१व नवस्वर को सालों वाशियों को फांसी पर सटका दिशा सवर ।"

उसके नीचे छोटा शीपक या-"नवरिबंह सरामा ने राष्ट्रीय गीत गाते हुए पांसी की रस्ती को पहले चुमा, और किर स्वर्ग है

रस्ती का फंदा झपने गले में डाल लिया।" दोनों शीर्यकों को पढ़कर, प्लेटफार्य पर चलते हुए बाबाबी के हर

े ही प्रसन्तता से परिपूर्ण था-नीर भी श्रविक हुनी ---



गम्बान्यया को कभी दिलों ने कुछ कहा ? आधिर बंदेशें का कर्ते स्मायपूर्ण है, कोई नादिस्साही सारव हो नहीं है।" "महराधिष्ठ" का काम सीताक में कोई से करें कर होरडी

पर साथ परको जीवी बचुराता संसी है साराज में उपन साथ है। बिकर, और यह मारी पर भी जमीशी। मरास्त्री के पड़ में लाम जेव जमीशी मिल बाता और मुक्ते में बचु मूं हो हार्य जमते मुक्ते दिला वेक्ट्रफ कराया! इसी अवार के उपने जीवते विकास में बच्चे हो हार्य साथ जमार के उपने जीवते विकास में बच्चे की की मार्च की माराय की। माड़ी माहीर दिला कर्युकी हुनों से सामार्क की माराय की। माड़ी की मार्ची करते ही सी-बीत हुनों सिन्में स्त्री पहले साथ के कार्यक्र में सामार्क करते ही सी-बीत हुनों सिन्में

पूरी । पर बेना के बारियों से हम आरा हे को ही होना हुना हाम । इस में मान होती हैं। इस में मान होती हैं। इस मान होती हैं। इस मान होती हैं। इस मान होती हैं। मान पर बेना होती हैं। मान होती हैं। मान मान इसे विद्या कहाँने पर सम्माद करने हों। शोकांत कर कर हैं वहुस कहाँने एक सम्माद करने हों। शोकांत करने हैं। मान हों। मान मान करने हों। मान करने हों। मान हों। में भीते हैं भीतें हैं। "अमल भाग करने सार्वाल हुआ। कहाँ पर हैं। एक समान हों।

दोनों पीर्यकों को पदकर, प्लेटफार्म पर चलते हुए बाबाजी के वर्त नै—जी पहले ही प्रसन्तता से परिचर्ण का सीन की स्थित हुए।



सम्बन्धियों को कभी किसी ने कुछ नहा ? बासिर संदेवों का क न्यायपूर्ण है, शोई नादिरशाही राज्य हो नहीं है।

'मथुराधिह' का नाम मस्तित्क में बाते ही उन्हें एक बीर का विचार मा गया, जिसके सम्बन्ध में उन्होंने समी तक सीवा नहीं था-'मीर उत पुरस्कार पर भी तो मेरा ही ग्रविकार पत्राव सरकार ने उनकी गिरणवारी के लिए रक्षा हुया है, वि

संबंध में उस पासंडी डी॰ सी॰ ने उल्लेख दक नहीं दिया था। उ बदनाशी सब मेरी समक्त में झाई। वास्तव में उपने तो धनु नी ह पर साप पटनने जैसी चतुरता सेली थी। साप मरने पर मी इ विअय, भौर बाजु भरने पर मी उसीकी। सपराधी के पकड़े बाने सारा श्रेय उसीको मिल जाता भौर मुन्देसी वह यूं ही टात दे उसने मुक्ते क्लिना वेवकूफ बनाया ! "

इसी प्रकार के उठते-निरते विचारों में बाबाजी ने रेत की व समाप्त नी । याड़ी लाहीर स्टेशन पर पहुची । कुली को बाबाब की मानश्यनता नहीं पड़ी। गाड़ी रकते ही दो-तीन कुली दिन्ते में पुछे । फर्स्ट बलास के यात्रियों को इस प्रकार की सुविधाएँ स्वामा

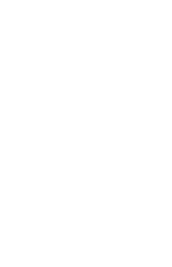
रूप से प्राप्त होती हैं। बहुत-सा सामान था, जो वे काबुत से उपहार के रूप में ते माए थे। कुली ने मजदूरी के लालन में भनेले ही सारा शामान ह लिया । बाबाजी माग-मागे चलने लगे। प्लेटफाम पर चतडे सहसा उन्होने एक मलयार वाले की मावाज सुनी, "सातों बार्व

को फांसी दे दो गई।" जनका भ्यान उधर सानवित हुमा। उन्हें भट से एक समाचारवन सरीद तिया, जिसका पहला ही शीर उन्होंने पढ़ा :

"१ प नवस्वर को सातों वाग्रियों को फांसी पर सटकारि

गया ।" उसके नीचे छोटा शीपंक था-- "कर्तारसिंह सरामा ने राष्ट्री गीठ गाते हुए फांसी की रस्ती को पहले चुमा, मीर किर स्वयं है रस्सी का फंदा अपने गले में हाल लिया।"

दोनों पीपनों को पढ़कर, प्लेटफाम पर चलते हुए बाबाजी है में ने-जो पहते ही प्रसन्तता से परिपूर्ण था-ग्रीर भी गरिक हुन



ब तो ने तुब राज में लागन को मामा हुमा मा, पुण्डे मान ने बावानी की बाद त्वत कुछ साही जी घोर नल मा। बावान पत्र के बावान कुछ बाती ने बावानी की माचन घेड़े हा दिक्षों में कोश करवारा, तो उनकी मोलें नवार पदी थी। विलाधि

वे बनी को संबद्धी दे पाए।

## हिन्द पॉकेट बुक्स प्रा० लिमिटिड के

## के फुछ प्रसिद्ध उपन्यास

	1 - 1 - 1 - 1
यामा . मावार्यं चतुरक्षेत्र	लौटे हुए मुनाफर: वमलेख्वर
धमंपुत्र ,,	तीनरा धाइमी
पतिता	सरहदों के बीच
माती "	मन नी घाटियां: धमरनास्त
हृदयकी परस्य	पराई काल का करते
हदय की ध्वाम ,,	कानटर देव : धमुना श्रीतम
मैली चादनी गुलगन नदा	नीतर
भूत गुध्दत्त	<b>4</b> 17
वनवासी "	BIT STREET
समता "	रीरेकी कर्म
मैन मान	711 ET 007
परिवर्तन "	tra: statue
वस्पा नागा <b>न्</b> त	सामग्रीन
बरण के बेटे	घरती, सागर धीर
तारा दशपाद	#frfam)
बारह पटे	
रम्भा भैरवप्रसादयुक्त	गहार : इत्यापन्दर एक गर्थ की बायमी
पापी . रविय राष्ट्रक	CATE
मनिया हमराज 'रहवर'	एक गर्थ की बात्मवचा
पानुस के दिन चार 'उथ'	विस्मी पुत्रमहियां
बुपुषाकी वेटी:	सपनों का बंदी
स्यानपत्र वीने-प्रकृतार	मनदाद की दानी
धलदिका : अयन्त काकस्परि	धारों के विनार
सीन दिन ः स्वनी पनिश्रह	***************************************

कृती के एक इन्त है साम को सम्बद्धा दा, इत्ते हाय है कार्याची की बाद पर हुआ। साही की कीर कह दाए।

बाराव रमने से बायन्त कर कृती में बाराबी की बावत है? हैं। दिश्य में क्रीण करवार, ना प्रवही बालें करता रही की रविटर्स में

\$ 9 el 43 # FF fi \$ 9 7 4

# हिन्द पॉकेंट बुक्स प्रा० लिमिटिड

# कुछ प्रसिद्ध उपन्यास

ः धाचार्यं पतुरसेन | लौडे हुए मुसाफिरः कमलेक्दर

धर्मपुत्र ,,	तीसरा भादमी
पतिता	सरहदो के बीच
माती "	मन की माटियाः समरकान्त
राश्य की गाउल	पराई डाल का पछी
हृदयं की कास	
	कानटर देव . समृता श्रीतम
मैली चांदनी गुलसन नंदा	नीना
भूल पुरुदश	कश्च ,,
वनवासी	Bld States
artrare	हीरे की कनी
मैं न मान	
	रगकापशा "
परिवर्तन "	एक सवाल
भम्पा नायार्जन	armofee
नश्णकेबेटे ,,	धरती, सागर और
तारा : यशपाल	हीविया
	गद्दार : कृदन चन्दर
रम्भाः भैरवप्रसादगुरत	एक गर्ध की बापसी
पापी: रागिय राघव	प्यास "
मनिता : हंसराज 'रहदर'	एक गाने की सरायानक
पागुन के दिन चार : 'उष'	फिरमी फुलभड़ियां
अधिया की केवी ।	ास्त्मा क्षुसमाह्या "
	सपनों का कैदी
	यनगांव की रानी
सनविशः अयन्त शासराति	यादों के चिनार
तीन दिन : रजनी पेनिकेट	From the name

बहीर . मुम्बराज मानन्त्र 🕽 स्वत्रम 🕶 : वशेन्द्रताप शहर एक बाहर मेली वी मीरवा राजेग्डनिह बेटी रमती: द्यरन्यन्ड बर्डोगाध्याव बेश्मिष्य षष्ट्रीराच्याव धन्तिम परिचन द्यानः इमह षरिषदीन दगँ तन विदश विषम्श देश प्रदन कृष्णकात्त्र का दिसान वह बधीदतनामा गृहराह क्यासक्वाक मधानी धीडी : बडी दीडी दो बहुनें: रवीन्द्रनाथ टाहुर थीरात जुदाई की गाव षःद्रताय धुरुरानी परिचीता भारतीयाता गुभदा गोरा पथ के दावेदार यांस की किएकिसी बाह्मण की बेटी कुम् दिनी विष्रदास मिलन चेत्र का बातना : चार ध्रध्याय भैत्येक पुस्तक का मूल्य एक

हिम्द वॉकेट बुक्त सभी घन्छे पुस्तक विश्वेतामाँ व तथा रोक्वेब बुक-स्टानों से मिनती हैं। बठिनाई हो तो सीचे हमते



mar मुन्दराज्ञ बातस्य | उत्रहा वर : १वीन्द्रनाव ठाहर राजेग्डॉन्ड बेडी देवसम् : रवशी: शरमुक्त बहुदीग्राप व्यक्तिम पश्चिम धानग्रसङ बरित्रहीन दुगेंशन-दिशी ध्या विषयश देश प्रदन कृष्णकाम्य का हिराज रह समीदसनाथा गहरोह *बपासक्रम्सा* यमनी दीशी वही दीशी ,, दो बहुनें : स्वीन्द्रनाय ठाडुर श्रीशंत ज्दाई की शाय षन्द्रनाथ बहरानी परिणीता शानुमीवाला सभदा मोरा पच के हावेदार धांस को किरकिरी बाहाण की बेटी कम दिनी विप्रदान लेन-देन विसन प्रेम या बातना : बार सध्याय

हेन्द्र पनिट बुक्स सभी भण्डे पुस्तक-विष्ठामों व रेलवे बुक-स्टाको सथा रोडवेड बुक-स्टाकों से मिनतों हैं। यगर कोर्ड क्रिजाई हो सो सीचे हमसे मेगए।



सरीड ः मन्दराय पातन्तः । स्वतः नरः । वदीननाव सावर एक बाहर हैती ही : नीरका गावेग्डान्ड बेडी देवदास : 1220 -शरत्वन्द्र चट्टीराम्याय बंबिमक्ट बड़ोगच्या र ग्रन्तिय परिचा दान/इस र च रिकारी व दर्गे शतकिदशी EMY विषय्श रीप प्राप्त करणकरात का विशास वह ब की दशकाया महराह ममली दोदी : बड़ी दोदी **बचालक्या**स .. दो बहुनें: रवीन्द्रनाय टाहुर धीशांत जदाई की गाव भारतनाथ कहरानी प्रशिक्षीता राषुपीवासा লমহা गोरा वस के दावेदार शांस की किरकियों बाह्मण की बेटी कृम्दिनी विप्रदान केन-रेन भितन प्रेय या बालना : र लिसर्ट व बार ग्रामाय प्रत्येक प्रस्तक का मन्य एक स्वया

हुन्द वरिट बुक्त सभी भण्डे पुस्तक-विश्वेतामां व रेलवे बुक-स्टानों सवा रोडवेड बुक-स्टानों से मिसती हैं। सगर कोई कठिनाई हो तो सीथे हमसे मंगाए।



ቀስተ 110 C-4. [41 वर्ग प्रश्लेष eres es

fey q 20 STREET #1 श्चित्र वर् 9 251E

4714E7171 बादनो होते. दही होती हो बहुने - पत्रीन्द्रभाव हाहु र बराई की दान षण्डराव परिकार हो

बहुसारी वार्याशया eitr द्रांस को दिएति है शहरण की बेटी

क्य लि वर धीर बाह् विषय धेक या शामनाः बार द्वायाय प्रायक प्रतक का मत्य एक द्वा

र के दारे तर

हिन्द बस्टि बुक्त सभी मन्छे पुलक-विषेताओं व रेलवे बुक-स्टानों तया रोडवेड बुझ-स्टाओं से मिलती हैं। यगर कोई क्रिनाई हो तो सीचे हमते मंगए ।

